

वमा अर्सलना-क इल्ला रह-म-तल्लिल आ-लमीन ।

(और हमने नहीं भेजा आपको, परंतु समस्त विश्व के लिए करूणा सागर बनाकर)

हिन्दू धर्म ग्रंथों में पैग़ंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम) की भविष्यवाणियाँ

विश्वसनीय

लेखक

पंडित सूफ़ी रहीम खान साहब क़ादरी M.I.

(शान्ति धर्म प्रचारक)

DATED : 07-02-2023

भूमिका

दुनिया में हमेशा परमात्मा परमेश्वर अल्लाह की ओर से अवतार, पैग़ंबर या नबी आते रहे हैं। इनका काम परमात्मा के बंदों को परमात्मा से मिलाना था। दुनिया में एक लाख चौबीस हज़ार(1,24,000) नबी या अवतार आए हैं, नबी का अर्थ होता है ख़बर देने वाला, तो इन सारे नबियों ने केवल एक विभूति हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा अहमद-ए-मुज्तबा(सल्लल्लाहू अलैही व सल्लम) को नराशंस - कल्कि अवतार - जगतगूरू - अंतिम ऋषी - पैरक्लीट - बाग़ का मालिक - मैत्रेय, इत्यादि नामों से याद करते हुए पैग़ंबर मुहम्मद(स) के आने की भविष्यवाणियाँ दी हैं।

हमारा इस पुस्तक को लिखने का उद्देश्य यह है कि भारत देश में जो हिन्दू-मुस्लिम दंगे धर्म के नाम पर हो रहे हैं वो समाप्त हो जाएँ और हिन्दू मुसलमान एक हो जाएँ और हमारा भारत देश स्वर्ग समान बन जाए। इसीलिए इस पुस्तक में पैग़ंबर मुहम्मद(स) की भविष्यवाणियों को जो हिन्दू धर्म ग्रंथों में है उजागर किया गया है। ताकी हमारे हिन्दू भाई नराशंस, कल्कि अवतार, जगतगूरू, अंतिम ऋषि पैग़ंबर मुहम्मद(स) को पहचान कर उनपर विश्वास ला सकें।

सहायक पुस्तकें :-

1) जगतगूरू(सरवरे आलम), लेखक : हज़रत मौलाना सिद्दीक़ दीन्दार चन्नबस्वेश्वर साहब क़िबला।

2) जामिउल बहरैन(संगमनाथ), लेखक : हज़रत मौलाना सिद्दीक़ दीन्दार चन्नबस्वेश्वर साहब क़िबला।

3) कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब, लेखक : डॉ. वेदप्रकाश उपाध्याय।

4) नराशंस और अंतिम ऋषि, लेखक : डॉ. वेदप्रकाश उपाध्याय।

5) हज़रत मुहम्मद(स) और अंतिम धर्म ग्रंथ, लेखक : डॉ. एम. ए. श्री वास्तव जी।

6) बशारात, लेखक : मौलाना अफ़ज़ल शरीफ़ साहब एम. आई।

7) मीसाक़ुन्नबिय्यीन, लेखक : मौलाना अब्दुल हक़ विध्यार्थी साहब।

8) पवित्र वेद और इस्लाम धर्म, लेखक : क्यू. एस. खान जी, इत्यादि।

मैं "सूफ़ी सय्यद अय्यूब शाह साहब M.I., सूफ़ी मुहम्मद मुख्तार साहब M.I. और सूफ़ी मुहम्मद ख्वाजा साहब M.I." का बहुत आभारी हूँ जिन्हों ने इस पुस्तक के संशोधन(Correction) में बड़ी सहायता की है और मैं "सूफ़ी मेअराजुल्ला बेग साहब M.I" का भी बहुत आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक को संपादन(Edit) करने में बड़ी सहायता की है और जिन लोगों ने इस पुस्तक के कार्य में किसी भी प्रकार की सहायता की है मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमात्मा परमेश्वर अल्लाह उन सब से और धर्म का कार्य ले।

यह फ़क़ीर इस सेवा को परमात्मा परमेश्वर अल्लाह को भेंट कर के यह प्रार्थना करता है कि हे अल्लाह ! लोगों की आंखों पर जो ग़फ़लत का पर्दा पड़ा हुआ है उसको उठा दे ताकि हमारे हिन्दू भाई नराशंस - कल्कि अवतार - जगतगुरू हज़रत पैग़ंबर मुहम्मद(स) को पहचान लें और उन पर विश्वास लाकर इहलोक और परलोक में सफ़लता प्राप्त कर लें, **तथास्तु**।

पंडित सूफ़ी रहीम ख़ान क़ादरी M.I.

(शान्ति धर्म प्रचारक)

DATED : 07-02-2023

प्रमाण - 1

इदं जना उप श्रुत नराशंस स्तविष्यते ।

षष्टिं सहस्रा नवतिं च कौरम आ रूशमेषु दद्महे ।।

(अथर्ववेद :- काण्ड : 20, सूक्त : 127, मंत्र : 1)

शब्दार्थ :-

इदं = यह

जना = ऐ लोगो

उप श्रुत = आदर से सुनो

नराशंस = वह नर जिसकी प्रशंसा की गई (मुहम्मद(स))

स्तविष्यते = तारीफ़ किया जाएगा

षष्टिं = साठ (60)

सहस्रा = हज़ार

नवतिं = नव्वे या नब्बे (90)

च = और

कौरम = हिजरत करने वाले या अमन फैलाने वाले

आ रूशमेषु = दुश्मनों में

दद्महे = हम लेते हैं या बचाते हैं।

अर्थ :- ऐ लोगो! यह (भविष्यवाणी) आदर से सुनो, मुहम्मद(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तारीफ़ किया जाएगा। साठ हज़ार नब्बे(60,090) दुश्मनों में, इस हिजरत(Migration) करने वाले (या अमन फैलाने वाले) को हम (हिफ़ाज़त में) लेते हैं।

व्याख्या :- इस मंत्र में कई प्रश्न खड़े होते हैं जैसे कि :

(1) नराशंस कौन हैं? (2) स्तविष्यते क्या है? (3) कौरम क्या है? (4) आ रूश्मेषु कौन हैं? (5) षष्टिं सहस्रा नवतिं क्या है? इत्यादि।

हिन्दुस्तान का इतिहास इस पर कोई प्रकाश नहीं डालता, परंतु विश्व का इतिहास और इस्लामिक इतिहास इस मंत्र को खोल कर वर्णन करता है।

1. नराशंस :- अर्थात वह नर जिसकी प्रशंसा की गई इसी को अरबी भाषा में "मुहम्मद" कहते हैं। "मुहम्मद" का अर्थ भी यही होता है कि जिसकी प्रशंसा की गई हो। वेदों में जहाँ भी नराशंस शब्द आया है वह पैग़ंबर मूहम्मद(स) को ही संबोधित कर रहा है। इस नराशंस शब्द की व्याख्या अगले मंत्रों में भी आएगी। यहाँ आपको संक्षिप्त में बता रहा हूँ।

2. स्तविष्यते :- यानी तारीफ़ किया जाएगा, यह भविष्य की क्रिया है अर्थात फेले मुस्तखबिल, अर्थात भविष्यवाणी दी जा रही है। जिसकी हर नबी, अवतार ने प्रशंसा की, हर नबी ने पैग़ंबर मूहम्मद(स) के आने की भविष्यवाणी दी है, हर मस्जिद, मिम्बर, मीनार से, दुश्मनों की ज़बान से और क़लम की नोक से आप(स) ही की तारीफ़ हुई और हो रही है।

3. कौरम :- अर्थात पृथ्वी पर शांति फैलाने वाला। पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने तमाम अवतारों को मानने का आदेश दिया और साथ ही तमाम धार्मिक ग्रंथों पर विश्वास लाने की शिक्षा देकर और लोगों में समानता स्थापित कर के शांती फ़ैलाने वाले बने और लोगों ने पैग़ंबर मुहम्मद(स) को बहुत कष्ट दिया जिसके कारण आप(स) कौरम अर्थात हिजरत (Migration) करने वाले बने।

4. आ रूश्मेषु :- वास्तव में यह साठ हज़ार नब्बे दूश्मन हैं जो मक्क शहर के निवासी थे।

5. षष्टिं सहस्रा नवतिं :- यानी 60,090, हम जानते हैं कि उस समय मक्के की जनसंख्या साठ हज़ार नब्बे(60,090) थी। जो पैग़ंबर मूहम्मद(स) के दुश्मन थे और हर रोज़ पैग़ंबर मूहम्मद(स) को जान से मारने की कोशिश करते थे

परंतु इस मंत्र में परमात्मा परमेश्वर अल्लाह ने पैग़ंबर मूहम्मद(स) की इन दुश्मनों से हिफ़ाज़त करने की भविष्यवाणी दी है।

इस प्रकार हम देखते हैं की इस मंत्र का एक एक शब्द पैग़ंबर मूहम्मद(स) की तरफ़ ही इशारा कर रहा है।

इसीलिए भगवत गीता अध्याय : 16, श्लोक : 23 में कहा गया है :

"यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।

न स सिद्धिमवाप्नोति न सूखं न परां गतिम्" ॥

अर्थात : जो कोई शास्त्र विधि को छोड़कर, अपनी इच्छा पर चलता है, न उसको सिद्धि पराप्त होगी न सुख मिलेगा और न उसको मुक्ति प्राप्त होगी।

प्रमाण - 2

उष्ट्रा यस्य प्रवाहिणो वधूमन्तो द्विर्दश।

वर्ष्मा रथस्य नि जिहीडते दिव ईषमाण उपस्पृशः॥

(अथर्ववेद :- काण्ड : 20, सूक्त : 127, मंत्र : 2)

शब्दार्थ :-

उष्ट्रा = ऊँट

यस्य = जिसकी

प्रवाहिणो = सवारी में

वधूमन्तों = ऊँटनियाँ

द्विर्दश = दो सुंदर (ख़ूबसूरत)

वर्ष्मा = चोटी

रथस्य = उसके रथ, आध्यात्मिक उत्थान(मक़ाम की)

नि जिहीडते = नीचे झुकती है
दिव = आकाश को
ईषमाण = तेज़ गति(रफ़तार) से
उपस्पृशः = छूती हुई।

अर्थ :- जिसकी सवारी में दो ख़ूबसूरत ऊँटनियाँ हैं (या जो अपनी धर्म पत्नियों समेत ऊँटनियों पर सवारी करता है) उसकी पदवी और उसके रथ की बुलंदी अपनी गति से आकाश को छू कर नीचे उतरती है।

व्याख्या :- हिजरत के समय पैग़मबर मुहम्मद(स) के पास दो ऊँट थे एक पर आप(स) ख़ुद सवार थे दूसरे पर अबूबकर सिद्दीक़(र)।

इस मंत्र में एक बहुत बड़ा चिन्ह उस ऋषि को पहचानने का बताया गया है। वह यह कि वह ऋषि सांडनी सवार या ऊँटनी सवार होगा, हम जानते हैं कि मुहम्मद पैग़म्बर(स) अकसर ऊँटनी की सवारी किया करते थे, और यह बात स्पष्ट है कि रेगिस्तान(Desert) में ऊँट की सवारी ही करते हैं इसी लिए ऊँट को "Ship of the Desert" (रेगिस्तान का जहाज़) कहा जाता है। यह इस बात की ओर संकेत करता है कि वह ऋषि अरब का ऋषि होगा। इसी प्रकार ब्राह्मण के लिए ऊँट की सवारी करना मना किया गया है। देखो मनुस्मृति अध्याय : 11, श्लोक : 201।

कहा गया है कि "ऊँट और गधे पर अपनी इच्छा अनुसार सवारी करने से ब्राह्मण अशुद्ध हो जाता है और प्राणायाम से शुद्ध होता है"। धर्म शास्त्र में भारत के ऋषि, मुनियों, ब्राह्मणों को ऊँट पर बैठने को इसलिए मना किया गया था ताकि लोग उस अंतिम ऋषि, नराशंस को आसानी से पहचान लें कोई दिक्कत पेश न आए और मालूम हो जाए कि आने वाला ऋषि हिन्दुस्तान का नहीं बल्कि ऊँटनी सवार अरब देश का होगा। हिन्दुस्तान के इतिहास में यह बात नहीं है कि कोई

हिन्दुस्तानी ऋषि ऊँट पर सवार हुआ हो। परंतु पैग़ंबर मुहम्मद(स) अकसर ऊँट की सवारी करते थे खुद ऊँट का दूध भी धोते और पीते थे।

"वधूमन्तो द्विर्दश" का दो प्रकार से अर्थ किया गया है एक यह कि "उसके बीवियों वाले रथ को खींचते हैं, दुसरा यह कि ऊट या ऊँट अपनी ऊँटनियों के साथ सवारी खींचते हैं"। और पंडित खेम करण आर्य जी की अथर्ववेद की व्याख्या के अनुसार वह ऋषि एक से अधिक पत्नियों वाला है। दोनों व्याख्याओं के अनुसार पैग़ंबर मुहम्मद(स) ही ज़्यादा बीवियों वाले और ऊँटनी की सवारी करने वाले हैं। इस रथ की ऊँचाई और तेज गति आकाश को छूने वाली है और फिर नीचे उतरने वाली है। इसमें मेअराज का वर्णन किया गया है कुरआन में कहा गया है "व हुवा बिल् उफ़क़िल् आला" अर्थात पैग़ंबर मुहम्मद(स) आकाश के उच्च स्थान पर हैं। ऐसे स्थान पर पहुँच कर फिर नीचे उतरना यह परमात्मा के साथ मानव से भी प्रेम होना प्रकाशित करता है।

प्रमाण - 3

एष इषाय मामहे शतं निष्कान दश स्त्रजः।

त्रीणि शतान्यर्वतां सहस्रा दश गोनाम ॥

(अथर्ववेद :- काण्ड : 20, सूक्त : 127, मंत्र : 3)

शब्दार्थ :-

एष = उस (परमात्मा) ने

इषाय = ऋषि

मामहे = मुहम्मद(स) को (मामह)

शतं = सौ (100)

निष्कान = सोने के सिक्के

दश = दस

स्रजः = हार या माला

त्रीणि = तीन

शतानी = सौ

अर्वतां = अरबी घोड़े

सहस्रा = हज़ार

दश = दस

गोनाम = गौवें(गायें) दीं (Cow)।

अर्थ :- उस अल्लाह ने पैगंबर मुहम्मद(स) को सौ सोने के सिक्के, दस हार, तीन सौ अरबी घोड़े और दस हज़ार गायें दीं।

व्याख्या :-

1) मामहे :- हिन्दुस्तान के किसी ऋषि का नाम मामहे नहीं बताया गया और न कोई पैग़बर यह नाम का इतिहास में गुज़रा है। मामहे का मूल "मह" है जिसका अर्थ है Esteem Highly, Honour, Revere, to Magnify, to Exalt, etc. अर्थात, आदरणीय, प्रशंसनीय, प्रशंसा के योग्य, बहुत बड़ा, इज़्ज़त वाला, प्रसन्न होना, यह वही शब्द है जो आत्मा को महात्मा, ऋषि को महर्षि बनाता है।

कुछ संस्कृत पुस्तकों में मुहम्मद(स) का नाम "महामद" भी आया है देखो भविष्य पुराण:-

एतस्मिन्नन्तेर म्लेच्छ आचार्य्येण समन्वितः।

महामद इति ख्यातः शिष्यशाखा समन्वितः ।।

(भविष्य पुराण :- प्रतिसर्ग : 3, काण्ड : 3, अध्याय : 3, श्लोक : 5)

अनुवाद :- इतने में एक म्लेच्छ या दूसरे देश और दूसरी भाषा का आध्यात्मिक शिक्षक अपने शिष्यों के साथ आएगा उनका नाम "मुहम्मद" होगा।

कुछ नामों का संस्कृत भाषा में उच्चारण बदल जाता है जैसे महमूद ग़ज़नवी को मामूद गजनवी लिखा जाता है। इसी तरह मुहम्मद(स) को "मामहे" बना दिया गया है। अथर्ववेद के ऋषि ने मुहम्मद(स) के उच्चारण से अधिक उसके अर्थ का वर्णन किया है।

2) सौ सोने के सिक्के :- ऋगवेद में इंसान की आत्मिक शक्ति की तुलना सोने से की गई है। पहली हिजरत करने वाले 100 अनुयायी जो मक्के से हबश(Ethiopia) के लिए गए 82 पुरुष 18 महिलाएँ थीं इनको सौ सोने के सिक्कों से तुलना दी गई है।

3) दस हार :- पैग़ंबर मुहम्मद(स) के दस(10) अनुयायी जिन्हें जीवन में ही स्वर्ग की भविष्यावाणी दी गई थी। वे ये हैं :

1. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़(रज़िअल्लाहु अन्हु)
2. हज़रत उमर फ़ारूक़(र)
3. हज़रत उसमान ए ग़नी(र)
4. हज़रत अली (र)
5. हज़रत ज़ुबेर(र)
6. हज़रत तलहा(र)
7. हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़(र)
8. हज़रत सआद बिन अबी वक़ास(र)
9. हज़रत सईद बिन ज़ैद(र)
10. हज़रत अबू उबेदह(र)

जीवन में ही अंतिम ऋषि पैग़ंबर मूहम्मद(स) द्वारा स्वर्ग की भविष्यवाणी पाना यह इनके लिये बहुत बड़ा पुरस्कार था इसीलिये वेद के इस मंत्र में इन्हें "दस हार" कहा गया है।

4) तीन सौ घोड़े :- संस्कृत भाषा का यह नियम है कि सैंकडों के ऊपर जो कसर होती है या जो संख्या होती है उसे नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है। इस मंत्र में नराशंस अर्थात मूहम्मद(स) को तीन सौ(300) घोड़े देने का वर्णन आया है वे वास्तव में जंगे बदर में जो तीन सौ तेरह(313) पैग़ंबर मुहम्मद(स)के अनुयायी थे उनकी तुलना इस मंत्र में तीन सौ घोड़ों से की गई है क्योंकि संस्कृत का शब्द "अर्वतां" का अर्थ देवता और शक्तिशाली भी होता है।

5) दस हज़ार गायें :- इतिहास साक्षी है कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने जब मक्के पर चढ़ाई की तो उस समय 10 हज़ार अनुयायी थे। पुण्यवान लोगों की तुलना गाय से की जाती है। निश्कलंक लोग गाय हैं। शतपत ब्रह्मण में इंसान को गाय से तुलना दी गई है।

यह सब उसी तरह बताया गया जिस तरह इस्लामिक इतिहास में है।

प्रमाण - 4

वच्यस्व रेभ वच्यस्व वृक्षे न पक्वे शकुनः ।
नष्टे जिह्वा चर्चरीति क्षुरो न भुरिजोरिव ॥

(अथर्ववेद :- काण्ड : 20, सूक्त : 127, मंत्र : 4)

शब्दार्थ :-

वच्यस्व = बोलो, उपदेश करो (Preach)

रेभ = ऐ स्तुति करने वाले (अहमद)

वच्यस्व = बोलो, तबलीग़ करो

वृक्षे = पेड़ पर, वृक्ष पर

न = जैसे, तरह, प्रकार, मानिन्द(तुलना)

पक्वे = पके फल वाले

शकुनः = पक्षी के
नष्टे = दोनों होंठ (Lips)
जिह्वा = ज़ुबान
चर्चरीति = चलते हैं
क्षुरो = कैंचियों के
न = जैसे, तरह, मानिन्द
भुरिजोरिव = दो फल।

अर्थ :- उपदेश(तबलीग़) करो ऐ अहमद तबलीग़ करो जैसे पके फल वाले वृक्ष पर पक्षी चहचहाता है। आपकी ज़ुबान और होंठ कैंचियों के दो फलों की तरह चलते हैं।

व्याख्या :- एक समय की बात है क़ाफ़िला जा रहा था पैग़ंबर मुहम्मद(स) थके हुए चिलचिलाती धूप में तबलीग़ कर के आए थे तुरंत फिर कंबल उठाई और तबलीग़ के लिए चल दिए। ऐसा कई बार हुआ।

"ताएफ़" का वाक़िया भी मशहूर है जब आप(स) ने जाकर तीन सरदारों को तबलीग़ की उस समय आप(स) को ताएफ़ के शरीर लोगों ने पत्थरों से मार कर खून में भिगो दिया गया था तब भी आप(स) ने तबलीग़ का कार्य नहीं छोड़ा और आप(स) का ये कहना कि मेरे सीधे हाथ में सूरज लादो और बांए हाथ में चांद लादो तब भी मैं इस तबलीग़ के कार्य से नहीं रुकुंगा, आप(स) का दृढ़ विश्वास के साथ तबलीग़ करना दर्शाता है। दिव्य कुरआन सुरह ज़ारियात आयत : 55 में अल्लाह तअला फ़रमाता है "व ज़क्किर् फ़ इन्नज़्ज़िकरा तन्फ़उल् मोअमिनीन्" अर्थात "और लोगों को समझाइए निस्संदेह समझाना(तबलीग करना) विश्वास रखने वालों के लिए लाभ दायक है"। और एक जगह अल्लाह तअला फ़रमाता है सूरह माइदा आयत : 67 में "या अय्युहर् रसूलु बल्लिग़् माउंज़िला इलैका मिर् रब्बिक" अर्थात "अए पैग़बंर(स) तबलीग़ करो जो तुम पर

अवतरित किया गया है तुम्हारे परमात्मा की ओर से"। इसी प्रकार दिव्य कुरआन सूरह अहज़ाब आयत : 41 में अल्लाह तअला फ़रमाता है "या अय्युहल् लज़ीना आमनुज़् कुरुल्लाहा ज़िक्रन् कसीरा" अर्थात "ऐ लोगो जो विश्वास लाए हो परमात्मा की बहुत तबलीग़ करो"। इसी प्रकार दिव्य कुरआन सूरह जुमुआ आयत : 10 में अल्लाह तअला फ़रमाता है "वज़्कुरुल्लाहा कसीरल् लअल्लकुम तुफ़्लिहून" अर्थात "तुम सब बहुत तबलीग़ करो ताकि तुम सफ़ल हो जाओ"।

इस प्रकार परमात्मा परमेश्वर अल्लाह ने तबलीग़ अर्थात इस्लाम के दिव्य संदेश को सारी दुनिया तक पहुँचाने का आदेश न केवल पैग़ंबर मुहम्मद(स) को दिया बल्कि सारे मुसलमानों को तबलीग़े इस्लाम का आदेश दिया है।

दूसरी बात इस मंत्र में जो बताई गई है कि कैंची के दो फलों की तरह आप(स) की तबलीग़ ने विरोधियों के बातों को काट डाला और विरोध करने वाले दुष्टों का नाश हुआ।

इस प्रकार मंत्र की इस भविष्यवाणी का प्रत्येक शब्द पूरा दुआ।

प्रमाण - 5

प्रेरेभासो मनीषा वृषा गाव इवेरते।

अमोत पुत्रका एषाममोत गा इवासते ।।

(अथर्ववेद :- काण्ड : 20, सूक्त : 127, मंत्र : 5)

शब्दार्थ :-

रेभासो = हम्द करने वाले (नामज़ पढ़ने वाले)

मनीषा = बुद्धिमान

वृषा = बलवान

गाव+इव = बैलों के समान

प्र+ईरते = तेज़ी से आगे बढ़ते हैं

अमोत = बंधन रहित, मुक्त

पुत्रका = पुत्र

एषाममोत = अपने घर पर

गा इव = गायों के समान

आसते = रहते हैं।

अर्थ :- नमाज़ पढ़ने वाले बुद्धिमान, बलवान, बैलों के समान धर्मयुद्ध में तेज़ी से आगे बढ़ते हैं। बन्धन रहित पुत्र अपने घर में गायों के समान रहते हैं।

व्याख्या :-

1. नमाज़ पढ़ने वाले बुद्धिमान :- एक ग़ैर मुस्लिम डाक्टर ने अपने एक शोद्ध(Research) के बाद यह बात बताई है कि "जो व्यक्ती पाँच वक़्त नमाज़ पढ़ता है वह कभी पागल नहीं होगा इसीलिये अरब देशों में पागल खाने नहीं होते" । जो लोग पाबंदी(निरंतर) से नमाज़ पढ़ते हैं और लंबे लंबे सजदे (Prostration) करते हैं वे बहुत बुद्धिमान होते हैं क्योंकि आदमी जब सजदा करता है तो उसका सिर नीचे ज़मीन को लग जाता है जिसके कारण रक्त का प्रभाव दिमाग़ की ओर ज़्यादा हो जाता है जिसके कारण बुद्धि का विकास होता है। इसीलिये पाबंदी से नमाज़ पढ़ने वाले लोग बहुत बुद्धिमान होते हैं। इस प्रकार इस मंत्र में पैग़ंबर मुहम्मद(स) के अनुयायों को नमाज़ पढ़ने वाले बुद्धिमान कहकर संबोधित किया गया है।

2. बंधन रहित :- जो लोग अपने अंदर देवगुण रखते हैं वह बंधन रहित होते हैं अर्थात दुनिया की मोह माया में वह फसते नहीं हैं जिस प्रकार एक कमल का फूल पानी में रहता है परंतु वह पानी से एक हाथ ऊपर रहता है। इसी प्रकार अवलिया अल्लाह या देवगुण रखने वाले लोग अपने बीवी बच्चों में घरबार में

रहते हैं परंतु वे बंधन रहित रहते हैं। उनका बंधन वास्तव में परमात्मा परमेश्वर अल्लाह से बंधा हुआ होता है इसीलिये इस विषय में एक कवी ने कहा :

"दुनिया में हूँ मगर दुनिया का तलबगार नहीं हूँ

बाज़ार से गुज़रा हूँ मगर खरीदार नहीं हूँ"

यह बंधन रहित विषय को समझने के लिये यह उदाहरण काफी है कि नाव(Boat) जब तक पानी के ऊपर रहती है तो सफ़र आसानी से तय होता है अगर पानी नाव में भर जाए तो नाव डूब जाती है बस इसी प्रकार अगर हम दुनिया के बंधनों में बंध गए तो हमारा आध्यात्मिक उत्थान समाप्त हो जाता है और हम पशु के समान हो जाते हैं। तो इस प्रकार वेद के इस मंत्र में पैग़ंबर मूहम्मद(स) के अनुयायों को बंधन रहित होना भी बताया गया है।

3. घर में गायों के समान रहते हैं :- यहाँ ऐसे लोगों का वर्णन किया जा रहा है जो युद्ध में भी परमात्मा की स्तुति करना या नमाज़ पढ़ना नहीं छोड़ते परंतु लड़ना उनके स्वभाव में नहीं है और वह अपने घर या अपने समुदाय में गायों के समान प्रेम से रहते हैं। इसी बात को एक कवी ने इस तरह कहा है :

"हो हलक़ए याराँ तो ब रेशम की तरह नर्म

रज़में हक़ व बातिल हो तो फ़ौलाद है मोमिन"

अर्थात सज्जन आपस में रेशम के समान नर्म और निर्मल होते हैं परंतु जब दुष्टों का सामना होता है तो वह फ़ौलाद बन जाते हैं।

इस प्रकार इस मंत्र का प्रत्येक शब्द पैग़ंबर मूहम्मद(स) और आपके अनुयायों पर सटीक बैठता है।

प्रमाण - 6

प्र रेभ धीं भरस्व गोविदं वसुविदम्।

देवत्रेमां वाचं श्रीणीहीषुर्नावीरस्तारम् ।।

(अथर्ववेद :- काण्ड : 20, सूक्त : 127, मंत्र : 6)

शब्दार्थ :-

रेभ = स्तुति करने वाला (अहमद)

धीम् = तत्वज्ञान (हिकमत को)

प्र = अच्छे प्रकार से

भरस्व = धारण कर

गोविदम् = गाय प्राप्त कराने वाले (भूमि प्राप्त कराने वाले)

वसुविदम् = धन प्राप्त कराने वाले

देवत्रा = देवगुण लोगों के बीच

इमाम् = इस (पूर्वोक्त)

वाचम = वाणी को

श्रीणीहि = अच्छे से पहुँचाएं

इषुः न = जैसे तीर

अवीः = निशाने पर (लक्ष्य पर)

अस्तारम् = तीर चलाने वाला ।

अर्थ :- हे अहमद ! भूमी या गायें प्राप्त कराने वाले, और धन प्राप्त कराने वाले, तत्वज्ञान को अच्छे प्रकार से धारण कीजिए । देवगुण लोगों के बीच इस वाणी(क़ुरआन) को अच्छे से पहुँचाएं । तीर चलाने वाला जैसे तीर निशाने पर मारता है ।

व्याख्या :-

तत्व ज्ञान :- त-परमात्मा, त्व-जीवात्म। जिवात्मा और परमात्मा के एक होने पर ही तत्व ज्ञान होता है। "भूमि, गायें और धन ये सब लौकिक ऐश्वर्य है ये तो प्राप्त होना है। परंतु इन सब से बढ़कर आध्यत्मिक ज्ञान और आध्यात्मिक ऐश्वर्य, मन की शान्ति प्राप्त होती है। अच्छे प्रकार से धारण करने का अर्थ यह है कि इस तत्वज्ञान या कुरआन से भौतिक या सांसारिक उन्नति तो होगी परंतु आप आध्यात्मिक उन्नति की ओर अपना ध्यान केंद्रित कीजिए।

पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने अंतिम प्रवचन (क़ुतबे) के समय सब देव गुण लोगों से प्रश्न किया के "ऐ लोगो क्या मैंने तुम तक परमत्मा की दिव्य वाणी नहीं पहुँचाई ? सब ने कहा निस्संदेह आपने हम तक परमात्मा की वाणी अर्थात क़ुरआन ए हकीम को पहुँचा दिया। फिर पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने आकाश की ओर अपनी उंगली उठाई और कहा ऐ अल्लाह तु गवाह रहना और उसके बाद आपने क़ुरान की यह अंतिम आयत सुनाई"।

"अलयौम अकमलतु लकुम दीनाकुम व अतमम्तु अलैकुम नेअमती व रज़ीतु लकुमुल इस्लामा दीना" (क़ुरआन 5:3)

अर्थ :- आज मैंने तूम्हारे लिए तुम्हारे दीन को पूर्ण कर दिया और तुम पर अपनी नेअमतों को तमाम किया और तुम्हारे लिए दीन ए इस्लाम को पसंद किया।

प्रमाण - 7

राज्ञो विश्वजनीनस्य यो देवोमर्त्याँ अति।

वैश्वानरस्य सुष्टुतिमा सुनोता परिक्षितः।।

(अथर्ववेद :- काण्ड : 20, सूक्त : 127, मंत्र : 7)

शब्दार्थ :-

राज्ञः = उस राजा की

विश्वजनीनस्य = सब लोगों के हितकारी (विश्व के)

यः = जो

देव = देवगुण रखने वाला (फरिश्ता सिफत)

मर्त्यान अति = मनुष्यों में सबसे बढ़कर गुणी (अफ़ज़लुल बशर)

वैश्वानरस्य = विश्व के पद प्रदर्शक (हादी)

सुष्टुतिम = उत्तम स्तुति को (सना)

आ = भले प्रकार

सुनोत = गाओ

परिक्षित = हर ओर प्रसिद्धि रखने वाले की (शोहरत वाला)।

अनुवाद :- उस राजा की जो सब लोगों के हितकारी, देवगुण रखने वाले, मनुष्यों में सब से बढ़कर गुणी, विश्व के पद प्रदर्शक, हर ओर प्रसिद्धि रखने वाले की उत्तम स्तुति को भले प्रकार से गाओ।

व्याख्या :-

1. पैग़ंबर मुहम्मद(स) न केवल अरबस्तान के राजा या शहंशाह थे बल्कि आप(स) ने विश्व के लोगों के दिलों पर राज किया था आज भी उन्हीं का राज है। इसी कारण वह राजा है। और बड़े बड़े राजाओं के सिर आप(स) के समक्ष झुकते थे, इसीलिए आप(स) शाह नहीं बल्कि शहंशाह थे और हैं।

2. पैग़ंबर मुहम्मद(स) समस्त विश्व के लिए हितकारी थे अर्थात लाभदायक थे। आप(स) ने बुराई को समाप्त किया। शराब, व्यभिचार, नग्न होकर काबे का तवाफ(परिक्रमा) और अपने पैदा होने वाली लड़कियों को ज़िन्दा दफ़न करना, आदि। आप(स) आने से सारा विश्व इन पापों से मुक्त हुआ और आप(स) ही ने एको जगदीश्वर, एको जगतगुरू, सर्व अवतार सत्य, सर्व धर्म ग्रंथ सत्य,

सम्मेल प्रार्थना। ये पंच शांति मार्ग बताकर लोगों को अपने परमात्मा का परिचय दिया। इस प्रकार आप(स) स्मस्त विश्व के लिए हितकारी अर्थात लाभदायक साबित हुए।

3. देव गुण रखने वाला :- अर्थात फरिश्ता सिफ़त रखने वाला, परमात्मा ने पैग़ंबर मुहम्मद(स) के गुणों के संबंध में दिव्य क़ुरआन में यह बात कही है "इन्नका ल अला खुल्क़िन अज़ीम" अर्थात "निस्संदेह आप(स) देव गुणों की अच्च श्रेणी पर हो", आप(स) के देवगुणों को गिनाया जाए तो मैं समझता हूँ कि एक पुस्तकालय(library) तय्यार हो जाएगी।

4. मनुष्य में सब से बढ़कर गुणी :- इसको अरबी में अफ़ज़लुल बशर कहा जाए तो ग़लत न होगा। इसी बात को न केवल मुसलमान जानते हैं बल्कि वे लोग भी जानते हैं जो मुसलमान नहीं हैं। वे भी यह बात को स्वीकार करते हैं कि आप(स) सब से बढ़कर गुणी थे। जैसे Michael H Hart ने अपनी पुस्तक "The 100" मे लिखा है कि "Mohammad was the Only Man in History who was Supremely Successful on both the Religious and the Secular Levels. "अर्थात" इतिहास में पैग़ंबर मुहम्मद(स) ही वह व्यक्ति थे जो धर्म और धर्मनिरपेक्ष दोनों स्तरों में सर्वोच्च सफ़लता प्राप्त की थी" और Prof. Ram Krishna Rao ने अपनी पुस्तक "Mohammad, The Prophet of Islam में इस तरह लिखा है "What a dramatic succession of Picturesque scenes. There is Mohammad(pbuh) Prophet, The General, The King, The Warrior, The Business Man, The Preacher, The Philosopher, The Stateman, The Orator, The Reformer, The Refuge of Orphans, The Protector of Slaves and Labourers, The Emancipator of Woman, The Judge, The Saint and All in all these magnificent roles in all these departments of

human activities, He is like a Hero. "अर्थात" जिस प्रकार चित्र में हम एक नायक(Hero) को देखते हैं उसी प्रकार मुहम्मद(स) एक पैगंबर हैं, कमांडर हैं, राजा हैं, योद्ध हैं, व्यापारी हैं, प्रवक्ता हैं, तत्वज्ञानी हैं, राजनेता हैं, वक्ता हैं, सुधारक हैं, शिशुओं को शरण देने वाले हैं, दासों और मज़दूरों के रक्षक, महिलाओं के मक्ति दाता, न्यायाधीश, संत, ये सारे गुण एक ही व्यक्ति में होना उसके नायक होने को दर्शाता है" । इस प्रकार पैग़ंबर मुहम्मद(स) सब से बढ़कर गुणी अर्थात अफ़ज़लुल बशर हैं ।

5. विश्व के पद प्रदर्शक(हादी) :- दुनिया में 1,24,000 अवतार या पैग़ंबर आये हैं । परंतु वे सब एक वर्ग विशेष, एक समुदाय, एक राष्ट्र, एक समय सीमा के लिए थे परंतु पैग़ंबर मुहम्मद(स) संपूर्ण विश्व के पद प्रदर्शक आर्थात हादी बना कर भेजे गए हैं, दिव्य क़ुरआन इस संदर्भ में कहता है "वमा अर्सलनाका इल्ला रह मतल् लिल् आलमीन्"(21:107) अर्थात "और (हे नबी(स)) हमने आपको नहीं भेजा है, किन्तु समस्त संसार के लिए दया सागर बना कर" । पद प्रदर्शक वह होता है जो संपूर्ण विश्व को परमात्मा का मार्ग दर्शन कराए । मुहम्मद पैग़म्बर(स) ने अपने मानने वालों को ऐसा मार्ग दर्शन दिया कि आप(स) के मानने वालों में ही ऋषि, मुनि, सूफ़ी, संत, अवलिया अल्लाह प्रकट हुए हैं और अब भी हो रहे हैं ।

6. हर ओर प्रसिद्धि(शोहरत) रखने वाला :- हर अवतार ने मुहम्मद(स) की भविष्यवाणी की है ।

(1) श्री कृष्ण जी के उत्तराधिकारी(खलिफ़ा) श्री वेद व्यास महार्षि ने सब लोगों के समक्ष कहा था "केशवात् परम् नाशति" अर्थात "केशव यानी कृष्ण जी ही अंतिम ऋषि हैं" इस घोषणा के कारण व्यास जी को पक्षघात(Paralysis) हो कर उनका का हाथ शल हो गया अर्थात आपके समुदाय में फूट पड़ गई, बाद में कृष्ण जी, व्यास जी के स्वप्न में आकर कहते हैं कि "अहम् कर्ता जगत् कर्ता

महेश्वरः" अर्थात "मुझको बनाने वाला और जगत को बनाने वाला महेश्वर आने वाला है"।

(2) गौतम बुद्ध कहते हैं कि मैं अंतिम बुद्धा नहीं हूँ वह मैत्रेयी आने वाला है।

(3) येशु मसीह भी कहते हैं कि "मेरा जाना ज़रूरी है जब तक मैं न जाऊँ वह रूहे हक़(सच्चाई की आत्मा) नहीं आएगा"। इस प्रकार पैग़ंबर मुहम्मद(स) हर ओर प्रसिद्धि रखने वाले हैं। ये सब बातें हम आपको संक्षिप्त में बता रहे हैं, आगे आप जानेंगे कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) किस तरह प्रसिद्धि रखने वाले हैं।

7. उत्तम स्तुति को भले प्रकार से गाओ :- पैग़ंबर मुहम्मद(स) की उत्तम स्तुति के संबंध में परमात्मा दिव्य कुरआन में फ़रमाता है "इन्नल्लाहा व मलाइकतहु युसल्लून अलन्नबिय्यी या अय्युहल्लज़ीना आमनु सल्लू अलैहि व सल्लिमू तस्लीमा" (33:56) अर्थात "अल्लाह तथा उसके फ़रिश्ते दुरूद भेजते हैं नबी(स) पर। हे इमान वालो ! उनपर तुम भी दुरूद तथा बहुत सलाम भेजो"। और "व-र-फ़अना लका ज़िक् रक्" अर्थात "हमने आपकी स्तुति या प्रशंसा को उत्तम स्थान पर पहुँचा दिया है"। इस प्रकार आज मुसलमान पैग़ंबर मुहम्मद(स) की उत्तम स्तुति भले प्रकार से गाते हैं अर्थात मुसलमान आप(स) पर दुरूद और सलाम पढ़ते है।

इस तरह इस मंत्र का प्रत्येक शब्द मुहम्मद(स) ही को संबोधित कर रहा है।

प्रमाण - 8

परिच्छिन्नः क्षेममकरोत् तम आसनमाचरन्।
कुलायन् कृण्वन् कौरव्यः पतिर्वदति जायया॥

(अथर्ववेद :- काण्ड : 20, सूक्त : 127, मंत्र : 8)

शब्दार्थ :-

तमः = अंधकार

परिच्छिन्नः = काट डालने वाले ने

आसनम् = आसन

आचरन् = ग्रहण करते हुए

क्षेमम् = शांति, आनन्द

अकरोत् = कर दिया है

कुलायन् = घर को

कृण्वन = बनाता हुआ

कौख्यः = कार्य कर्ताओं का राजा

पतिः = पति

जायया = अपनी पत्नी से

वदति = कहता है।

अनुवाद :- अंधकार काट डालने वाले ने आसन ग्रहण करते हुए शांति(आनन्द) कर दिया है, घर को बनाता हुआ कार्यकर्ताओं का राजा, पति अपनी पत्नी से कहता है।

व्याख्या :-

1) अंधकार काट डालने वाला :- पैगंबर मुहम्मद (स) ने अज्ञानता के अंधकार को प्रकाश की तलवार से काट डाला। और पुराणों में भी पैगंबर मुहम्मद (स) को जगत गुरू कहा गया है। गुरू का अर्थ होता है "गु" अर्थात अंधकार "रू" अर्थात प्रकाश, यानी गुरू वह होता है जो लोगों को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। मुहम्मद पैग़ंबर(स) को कल्कि पुराण में जगतगुरू कहा गया है :

विष्णु यशस्सुता देवं दुष्ट दुराचारा मर्दनं।
सुमति परमानंदं कल्कि वंदे जगत गुरू।।

अर्थात :- विष्णु यश(अब्दुल्लाह) के बेटे सुमति (आमेना) के लाल होंगे, दुष्टों का नाश करने वाले कल्कि ही जगत गुरू हैं।

"ब्रह्म कृता शिवा सहस्रा ना-मसू मृत्युंजया
सूक्ष्म तनुर जगद व्यापी जगत-गुरू" ।।

अर्थात : ब्रह्म शक्तियों का केंद्र, ब्रह्म का सहस्र नामों को धारण किया हुआ, मृत्यू पर विजय प्राप्त किया हुआ, अपने सूक्ष्म शरीर से सारे जगत में व्याप्त रहने वाला वही जगत का गुरू है।

2) आसन ग्रहण करते हुए शांति कर दिया :- अर्थात जब मुहम्मद पैग़ंबर(स) मक्के पर चढ़ाई किए और आसन ग्रहण किए अर्थात विजयी होकर मक्का शाहर में प्रवेश किए। तब वहाँ पैगंबर मुहम्मद (स) के सब दुश्मन थे जो आप(स) पर और आप(स) के अनुयाइयों को हर समय कष्ट दिया करते थे और आप(स) के चचा को मार कर उनका कलेजा निकाल कर चबाने वाले, आप(स) की सुपुत्री की हत्या करने वाले और बहुत से पापी उपस्थित थे परंतु पैगंबर मुहम्मद (स) ने कहा "ला तस्रीबा अलै कुमुल यौम" यानी आप(स) ने सब को क्षमा कर दिया किसी से कोई बदला नहीं लिया। इस प्रकार पैगंबर मुहम्मद (स) ने आसन ग्रहण करते हुए शांति स्थापित कर दी।

तब मक्के के सरदार ने जो तभी इस्लाम स्वीकार किया था अपनी पत्नी से कहा कि हमारे 360 ख़ुदा हार गए और मुहम्मद(स) का एक ख़ुदा जीत गया इस प्रकार आप(स) का घर-घर चर्चा होने लगा और घर अर्थात बैतुल्लाह(काबा) जिसको परमात्मा का घर कहते हैं उस घर में तीन सौ साठ(360) मूर्तियों को पैगंबर मुहम्मद (स) ने हटा दिया। इस प्रकार पैगंबर मुहम्मद (स) घर को बनाते हुए कार्यकर्ताओं के राजा कहलाए।

इस मंत्र का भी प्रत्येक शब्द पैगंबर मुहम्मद (स) को ही संबोधित कर रहा है।

प्रमाण - 9

कतरत् त आ हराणि दधि मन्थां परि श्रुतम् ।

जायाः पतिं वि पृच्छति राष्ट्रे राज्ञः परिक्षितः ।।

(अथर्ववद :- काण्ड : 20, सूक्त : 127, मंत्र : 9)

शब्दार्थ :-

कतरत् = कौन वस्तु

ते = तेरे लिए

परि = सुधारकर

आ हराणि = मैं लाऊँ

दधि = दही

मन्थाम = मथा हुआ दही

श्रुतम् = नोनी माखन आदि

जायाः = पत्नी

पतिम् = पति से

परिक्षितः = हर ओर प्रसिद्धि रखने वाले

राज्ञः = राजा

राष्ट्रे = राज्य में

वि = विविध प्रकार

पृच्छति = पूछती है।

अनुवाद :- हर ओर प्रसिद्धि रखने वाले बादशाह की हुकूमत में एक पत्नी अपने पति से विविध प्रकार से पूछती है। मैं तेरे लिए कौन सी चीज़ लाऊँ दही, छाछ, माखन आदि?

व्याख्या :- यह मंत्र भी सुख और शांति की ओर संकेत करता हैं जो इस प्रसिद्धि रखने वाले राजा के राज्य में होगा। एक हदीस(मुहम्मद पैग़म्बर(स) की वाणी) में भविष्यवाणी दी गई थी कि एक ऐसा समय आएगा कि अरब में अमन व अमान होगा अर्थात सुख और शांति होगी और एक स्त्री अकेले ही हैरा अर्थात कूफा के मक़ाम से मक्के को हज के लिए सफ़र करेगी और इसे कोई भय न होगा। जिस राष्ट्र में स्त्री की कोई सुरक्षा और शुद्धता का ध्यान न था, चोरी, डाके का बज़ार हर समय गरम रहता था। इस्लाम की हुकूमत में कुछ साल के भीतर अमन और शांति हो गयी और औरतें निर्भय होकर अकेली सफ़र करने लगीं।

जैसे के हम जानते हैं कि हर ओर विश्व में प्रसिद्धि रखने वाले केवल मुहम्मद(स) ही हैं क्यों कि आप(स) की ही भविष्यवाणी हर धार्मिक ग्रंथ में है हर अवतार और नबी ने आप(स) की प्रशंसा की है, इसी कारण आप(स) हर ओर प्रसिद्ध हैं और इस बादशाह यानी पैग़ंबर मुहम्मद(स) की हुकूमत में आज भी ऐसा अमन व अमान है कि प्रार्थना के समय लोग अपनी दुकानें खुली छोड़कर नमाज़ के लिए चले जाते हैं और कभी चोरी, डकैती नहीं होती और आज भी इस प्रसिद्धि पाने वाले राजा यानी पैग़ंबर मुहम्मद(स) के राज्य में अपराध(Crime) दुनिया के अन्य देशों की तुलना में सब से कम है।

प्रमाण - 10

अभीवस्वः प्र जिहीते यवः पक्वः पथो बिलम्।
जनः स भद्रमेधति राष्ट्रे राज्ञः परिक्षितः ॥

(अर्थववेद :- काण्ड : 20, सूक्त : 127, मंत्र : 10)

शब्दार्थ :-

अभीव = तरफ़

जनः = मनुष्य

स्वः = आकाश की

प्र जिहीते = पहुँचता है

बिलम् = गढ़े से

स = वह

एधति = बढ़ाता है

भद्रम = खूब खुशहाली, आनन्द

राष्ट्रे = हुकूमत में

यवः = जौ

राज्ञः = बादशाह

पक्वः = पका हुआ

परिक्षितः = सब तरफ प्रसिद्धि वाले की।

भावार्थ :- पोखता जौ गढ़े से निकल कर आसमान की तरफ जाता है, सब तरफ प्रसिद्धि पाये हुए बादशाह की हुकूमत में इंसान खूब तरक़्क़ी करता है।

व्याख्या :- आसमानी बादशाहत और सत्य धर्म का एक निशान यह भी है कि उस धर्म को मानने वाले उन्नति करें जिस प्रकार खेती उन्नति करती है। हम देखते हैं कि सब तरफ़ शोहरत रखने वाले अर्थात मूहम्मद(स) के मानने वाले किस तरह उन्नति किए। इस्लाम धर्म आने से पहले अरब के लोग बिल्कुल तुच्छ श्रेणी में थे। लेकिन इस्लाम आने के बाद वह आकाश की बुलंदी को छू गए। यही बात कुरआन ए करीम में भी आई है सूरह फ़तह आयत : 29 में अल्लाह तअला फ़रमात है "ज़ालिका मसलुहुम् फ़ित्तौराती व मसलुहुम् फ़िल् इंजील् कज़र् इन् अख्रजा शत्अहू फ़ आज़रहू फ़स्तग़लज़ा फ़स्तवा अला सूक़ीही युअजिबुज़्ज़ुर्राआ लियग़ीज़ा बिहिमुल् कुफ़्फ़ार वअदल्लाहुल् लज़ीना आमनू व अमिलुस्सालिहाति मिन्हुम् मग़्फ़िरतौं व अजरन् अज़ीमा" अर्थात "मुहम्मद(स) के साथियों की

मिसाल ऐसी है जैसे एक खेती है जो सूई की तरह निकलती है और वह मज़बूत हो जाती है" इस बात का उदाहरण तौरेत और इंजील में भी दिया गया है और वेद में भी आपको इसका उदाहरण मिलता है। और इस मंत्र में भी "अभीवस्वः प्र जीहीते यवः" कहकर बताया जा रहा है कि वह "जौ" बुलंदी को पहुंचती है। तो इस मंत्र के और क़ुरान की इस आयत के शब्द एक दूसरे से बखूबी मेल खाते हैं। इसी प्रकार सूरह इब्राहीम आयत : 23-24 में अल्लाह तअला फ़रमात है "अलम्तरा कैफ़ा ज़रबल्लाहू मसलन् कलिमतन् तय्यिबतन् कशजरतिन् तय्यिबतिन् अस्लुही साबितुं व फ़रउहा फ़िस्समाअ, तुअती उकुलहा कुल्लाहीनिम् बिइज़नि रब्बिहा व यज़रिबुल्लाहुल् अम्साला लिन्नासि लअल्लकुम् यताज़क्करून्" अर्थात "क्या आपने नहीं देखा, क्या आपने ग़ौर नहीं किया कि कलमे तय्यबा यानी अच्छे शब्द अच्छी बात की मिसाल अल्लाह तअला ने एक पवित्र वृक्ष से दी है जिसकी जड़ें ज़मीन में मज़बूत हैं और जिसकी शाखें आकाश में फैली हुई हैं और यह वृक्ष हर मौसम में फल देने वाला है यह एक उदाहरण उन लोगों के लिए है जो समझ रखते हैं"। इस प्रकार वेद में और कुरआन में यही उदाहरण दिया गया है और इस मंत्र में "भद्रम्" कहा गया यानी वे नेकी और खुशहाली में रहेंगे और इसी को कुरआन में अच्छी बात या कलमे तय्यबा कहा गया है और वेद में "यवः" कहा गया है यानी जौ, और कुरआन में यह बात कही गई है कि "कज़र् इन् अख़्रजा शत्अहू फ़ आज़रहू फ़स्तग़लज़ा फ़स्तवा अला सूक़ीही" यानी वह सूई की तरह निकलता है और अपनी शाखें आसमान में फैलाते हुए मज़बूत हो जाता है और इसी प्रकार वेद में कहा गया है कि वह गड्ढे में रहता है और फिर आकाश की ओर बढ़ता है। और कुरआन में इसकी सच्चाई की ओर संकेत करते हुए कहा गया है कि "फ़रउहा फ़िस्समाअ" यानी इसकी शाखें आसमान में फैलती हैं। और मंत्र में भी कहा जा रहा है कि वह आकाश की ओर पहुंचता है। इसी प्रकार कुरआन में कहा जा रहा है कि इस

सत्यता को मानने वाले इहलोक और परलोक में उन्नति करेंगे। इसी प्रकार वेद में कहा गया है कि यह लोग खुशहाली और नेकी को पहुंचेंगे और कुरआन में कहा गया है कि "तुअती उकुलहा कुल्लाहीनिम्" अर्थात "यह वृक्ष हर मौसम में फल देने वाला है" और यही बात वेद में बताई जा रही है यह पका हुवा अर्थात "पक्वः" जौ है और यह पका हुवा जौ फलदार है और कुरआन ए करीम में कहा गया है कि "ल अल्लकुम यतज़क्करून्" यानी वह लोग इस उदाहरण से नसीहत हासिल करें। यहाँ पर भी इस वेद के मंत्र में खेती का ही उदाहरण दिया गया है।

इस प्रकार हमें मालूम हुआ कि कुरआन और वेद का स्रोत एक ही है यानी एक ही परमात्मा की ओर से ये धर्म ग्रंथ आए हैं तो कुरआन इस वेद की सत्यता को मानता है और वेद वालों को भी चाहिए की वह कुरआन की सत्यता को माने और ग्रहण करें।

प्रमाण - 11

इन्द्रः कारूमबूबुधदुत्तिष्ठ वि चरा जनम्।
ममेदुग्रस्य चर्कृधि सर्व इत् ते पृणादरिः ॥

(अथर्ववेद :- काण्ड : 20, सूक्त : 127, मंत्र : 11)

शब्दार्थ :-

इन्द्रः = इन्द्र ने

उग्रस्य = श्रेष्ठ की

कारूम् = स्तुति गाने वाले को

चर्कृधि = तू बड़ाई कर

अबूबुधत = जगाया

सर्व = सब

उत्तिष्ठ = उठ

इत् = भी

विचरा = इधर-उधर जा

ते = तुझे

जनम् = लोगों के पास

पृणात = तृप्ति करे

मम इत् = मुझ ही

अरिः = वैरी।

भावार्थ :- इन्द्र(अल्लाह) ने अपनी स्तुति गाने वाले(अहमद) को जगाया, उठ इधर-उधर जा, मुझ श्रेष्ठ की ही तू बड़ाई कर, सब वैरियों को भी तूने शांत किया।

व्याख्या :- यह मंत्र कुरआन ए करीम की सूरह मुदस्सिर के प्रारंभ के आयतों को पेश करता है। जैसा कि सूरह मुदस्सिर की पहली दूसरी और तीसरी आयतों में है "या अय्युहल मुद्दस्सिर, क़ुम फ़अन्ज़िर, व रब्बका फ़कब्बिर" अर्थात "अए चादर ओढ़कर सोने वाले उठ और इधर-उधर लोगों के पास जा और मुझ ही श्रेष्ठ की तू बड़ाई कर"। अब हम यहाँ पर देखते हैं की मंत्र में भी कहा जा रहा है कि इंद्र ने अर्थात अल्लाह तअला ने हम्द गाने वाले को जगाया, हम्द या स्तुति गाने वाले को अरबी भाषा में "अहमद" कहते हैं। अर्थात अहमद(पैग़ंबर मूहम्मद(स) का दूसरा नाम) को अल्लाह तअला ने जगाया और कहा की उठ यानी "क़ुम फ़अन्ज़िर" यानी उठिये और लोगों को डराइए। तो यहाँ पर भी इस मंत्र में कहा जा रहा है की "उठ इधर उधर जा यानी लोगों के बीच जाकर आप परमात्मा का संदेश दीजिए और मुझ श्रेष्ठ ही की आप बड़ाई कीजिए" यानी उस परमात्मा परमेश्वर अल्लाह की बड़ाई या हम्द करने के लिए कहा जा रहा है। लोग जो परमात्मा को छोड़कर दूसरों की पूजा कर रहे थे उन लोगों को सत्य मार्ग की ओर मार्गदर्शन करने के लिए कहा जा रहा है और उस श्रेष्ठ परमात्मा की ही बड़ाई करने

का नियम बताया जा रहा है। तो यह बात जो कुरआन ए करीम में और वेद में बताई जा रही है वह एक ही है।

और आगे इस मंत्र में कहा जा रहा है कि "सब वैरियों(दुश्मनों) को भी तूने शांत किया"। हम जानते हैं कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) जब अरबस्तान में यह शांति धर्म को लेकर आए जिसका नाम अरबी भाषा में इस्लाम है, संसकृत में शांती, अंग्रेज़ी में पीस(Peace) और उर्दू भाषा में अमन होता है। तो आप(स) के बहुत सारे दुश्मन हो गए लेकिन वह दुश्मन आप(स) की सत्यता को देखकर आप(स) के व्यवहार को देखकर और इस दिव्य वाणी को सुनकर वो सब शांत हो गए और बहुत सारों ने इस्लाम धर्म स्वीकार भी कर लिया। हम जानते हैं कि फ़तह मक्का के समय आप(स) के वैरी सब आप(स) के सामने थे हर युद्ध में मुसलमानों से लड़ने के लिये आगे आगे रहने वाले अबूसूफ़ियान और उनकी बीवी हिन्दा जिसने पैग़ंबर मुहम्मद(स) के चचा हज़रत हमज़ा(र) को युद्ध में धोके से क़त्ल करवा कर उनका कलेजा चाबा था और दुसरे भी वैरी या दुश्मन थे आप(स) ने सब को क्षमा कर दिया जिसके कारण सभों ने अपने दिलों में तृप्ति पैदा कर ली गोया के वह शांत हो गए और इस्लाम धर्म को स्वीकार कर लिया। इस प्रकार पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने अपने वैरियों को शांत किया और आप(स) ने परमात्मा की बढ़ाई की या हम्द की। और आप(स) के अनुयायी चाहे दुनिया के किसी कोने में क्यों न हों वो उस परमात्मा परमेश्वर अल्लाह की हम्द स्तुति बड़ाई कर रहे हैं। तो इस प्रकार वेद का यह मंत्र कुरआन ए करीम के आयतों से मेल खा रहा है और अथर्व वेद का बीस्वां काण्ड जिसको कुंताप सूक्त कहते हैं इस सूक्त में पैग़ंबर मुहम्मद(स) की भविष्य वाणी आप(स) के अनुयायों का वर्णन और आप(स) पर अवतरित होने वाली दिव्य कुरआन का उल्लेख और आप(स) के पुण्य क्षेत्र का विवरण, आदी, आज भी वेद में मौजूद है। ये वेदों में जो भी बताया गया है वह इसलिए है कि लोग अपना मार्गदर्शक नराशंस अंतिम ऋषी

को पहचान लें, हम क्यूों न बतायें दुनिया को कि वह नराशंस अंतिम ऋषि पैग़ंबर मुहम्मद(स) ही हैं। और हम देखते हैं कि इस मंत्र के अनुसार भारत देश में ऐसा कोई अवतार या ऋषि नहीं गुज़रा जिसको यह आदेश दिया गया हो कि ऐ ऋषि तुम उठो और इधर उधर जाओ और मुझ एक की ही बड़ाई करो और तुम्हारे सब वैरियां शांत हो जाएंगें परंतू आप कुरआन ए करीम के सूरह मुदस्सिर को पढ़ेंगे तो पता चलेगा कि यह दिव्य वाणी केवल एक ही महापुरुष को संबोधित कर रही है और वह विभूती हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा अहमदे मुजतबा(स) की ही है।

प्रमाण - 12

इह गावः प्रजायध्वमिहाश्वा इह पूरूषाः।

इहो सहस्रदक्षिणोपि पूषा नि षीदति ॥

(अथर्ववेद :- काण्ड : 20, सूक्त : 127, मंत्र : 12)

शब्दार्थ :-

इह = यहाँ

अश्वाः = हे घोड़ो (बहादुरो)

गावः = हे गायो (देवगुण लोग)

इह = यहाँ

इहो = यहाँ पर

पूरूषाः = हे लोगो

सहस्रदक्षिणः = हज़ारों की दक्षिणा देने वाला

अपि = ही

प्रजायध्वम् = बढ़ो, उन्नति(तरक़्क़ी) करो

पूषा = पोषक (ग़रीबों पर दया करने वाला)

इह = यहाँ
निषीदति = बैठता है।

अनुवाद :- यहाँ हे गायो(देव गुण रखने वाले) यहाँ हे घोड़ो(बहादुर वीरो) यहाँ हे लोगो(सामान्य जन) बढ़ो अथवा उन्नति करो या माल व दौलत और इंसान सब कुछ उन्नति करें क्योंकि यहाँ पर हज़ारों की दक्षिणा देने वाला ग़रिबों पर दया करने वाला(मुहम्मद(स)) आसन पर बैठा है।

व्याख्या :- इतिहास साक्षी है, क्या यह बात किसी को बताने की अवश्यकता है कि मुहम्मद(स) के शासन में हर चीज़ ने उन्नति की। उस क़ौम में जो दुनिया की तरक़्क़ी के मैदान में सब से पीछे थी कितने देव गुण लोग पैदा हुए, कितने वीर योद्धा निकले और किस प्रकार तुरंत क़ौमों ने इस्लाम स्वीकार किया। इस उन्नति के महान नेता सब दानियों के दानी मुहम्मद(स) ही हैं जो ग़रिबों को हजारों की दक्षिणा देने वाले हैं। जो लोग भौतिक उन्नति चाहते थे उन्हें भौतिक उन्नति दी गयी और जो लोग आध्यात्मिक उन्नति चाहते थे उन्हें आध्यात्म की ओर बढ़ाया। जंगे क़ंदक़ के समय आप(स) के पेट पर दो पत्थर थे परंतु आप(स) ने कहा क़ैसर(रोम) और किसरा(ईरान) के खज़ाने आने वाले हैं और आए। अबूबकर सिद्दीक़(र) के शासन में पहला ऊँट माल से लदा हुआ मस्जिदे नबवी की चौखट पर था तो आखरी ऊँट नज़र नहीं आ रहा था। और उमर फ़ारूक़(र) के दौर में छेत्तीस हज़ार(36,000) क़िले फतह हुए। आज भी अरब में इतनी उन्नति है कि प्रत्येक सुख संपदा वहाँ के लोगों को प्राप्त है। इस प्रकार लौकिक उन्नति तो सब लोगों की हुई परंतु आप(स) ने अपने अनुयाइयों को आध्यात्मिक उन्नति भी प्रदान की।

इतिहास में यह बात है कि आप(स) के घर से कभी कोई मांगने वाला खाली हाथ नहीं लौटा। आप(स) हज़ारों की दक्षिणा देने वाले थे, लोगों को सैंकड़ों घोड़े, हज़ारों बकरियाँ, सैंकडों ऊँट, हज़ारों दीनार दान-दक्षिणा देते थे।

आप(स) की दक्षिणा को देखकर लोग कहते कि आप(स) साधारण मनुष्य नहीं हैं बल्कि सच्चे पैग़ंबर हैं। अपनी सारी दौलत को आप(स) ग़रीबों में दान कर दिया। जब आप(स) दुनिया से चले गए उस समय घर के चिराग़ में तेल तक नहीं था।

प्रमाण - 13

नेमा इन्द्र गावो रिषन् मो आसां गोप रीरिषत्।

मासाममित्रयुर्जन इन्द्र मा स्तेन ईशत ।।

(अथर्ववेद :- काण्ड : 20, सूक्त : 127, मंत्र : 13)

शब्दार्थ :-

मा = न

गावः = गायें

इमाः = यह

मा = न

इन्द्र = हे इन्द्र

रिषन् = नष्ट हों

मो = न

रीरिषत् = नष्ट होवें

अमित्रयुः = वैरियों को चाहने वाला

जनः = मनुष्य

आसाम् = इनका

इंद्र = हे इन्द्र

गोप = रक्षक

मा = न

स्तेनः = चोर, डाकू

असाम = इन पर

ईशत = विजयी।

अनुवाद :- हे परमात्मा इन्द्र न यह गायें (देवगुण रखने वाले लोग) नष्ट हों, न इनका रक्षक (मुहम्मद(स)) नष्ट होवें, हे इन्द्र न इन पर दुश्मनी चाहने वाला मनुष्य और न डाकु विजयी हो।

व्याख्या :- वेद के ऋषि की यह प्रार्थना मुहम्मद पैग़ंबर(स) और मुसलमानों के पक्ष में किस प्रकार अनोखी प्रार्थना है। दुनिया ने देखा कि यह प्रार्थना किस तरह पूरी हुई। मुहम्मद पैग़ंबर(स) स्वयं और समस्त मुसलमान अंत में विजयी हुए। इनके दुश्मन और ईमान(विश्वास) के डाकू पराजित हुए, यह दुश्मन किसी मुसलमान का ईमान चुरा न सके। लेकिन मुसलमानों ने पूरे अरब को मुसलमान बना लिया। कुरआन-ए-करीम की अंतिम प्रार्थना का निबन्ध भी इसी के अनुसार है सूरे नास "कहो मैं लोगों के रब की शरण माँगता हूँ, लोगों के बादशाह की, लोगों के पूजनीय की, नुकसान पहुँचाने वाले के वस्वसे के शर से जो लोगों के दिलों में वस्वसे डालता है। चाहे जिन्नों में से हो या इंसानों में से"।

एक हदीस में मुहम्मद(स) ने मुसलमानों को यह प्रार्थना सिखाई "ऐ अल्लाह हम पर इसको हावी न करना जो हम पर करूणा न करे"। और मुहम्मद(स) के विषय में अल्लाह तआला ने कहा "वल्लाहु यअसिमुका मिनन्नास" अर्थात "अल्लाह लोगों से आप(स) की रक्षा करेगा"।

अनगिनत दुश्मन मिलकर भी आप(स) को नुक़सान पहुँचा न सके, इस मंत्र के ऋषि ने प्रार्थना की कि मुहम्मद(स) नुक़सान से सुरक्षित रहें, अल्लाह तआला ने भविष्यवाणी दी कि आप(स) महफ़ूज़ रहेंगे। ऋषि की प्रार्थना और अल्लाह तआला का शुभ संदेश दोनों में आप(स) की रक्षा की भविष्यवाणी है जो पूरी हुई।

हर समय पैग़ंबर(स) की हत्या करने की कोशिश की गई। इसीलिए प्रसिद्ध कवि अल्लमा इक़बाल कहते हैं।

बातिल से दबने वाले ऐ आसमाँ नहीं हम
सौ बार कर चुका है तू इम्तिहाँ हमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौर-ए-ज़माँ हमारा।

प्रमाण - 14

उप नो न रमसि सूक्तेन वचसा वयं भद्रेण वचसा वयम्।
वनादधिध्वनो गिरो न रिष्येम कदा चन॥

(अथर्ववेद :- काण्ड : 20, सूक्त : 127, मंत्र : 14)

शब्दार्थ :-

नः = हम को

न = अब

उप = आदर से

रमसि = तू आनन्द देता है

सूक्तेन = दिव्य वाणी

वचसा = वचन के साथ

वयम् = हम

भद्रेण = कल्याणकारी

वचसा = वचन के साथ

वयम् = हम

वनात् = दुख से अलग होकर

अधिध्वनः = ऊँची ध्वनि वाली

गिरः = वाणियों को

कदा चन = कभी भी

न = न

रिष्येम = नष्ट करें।

अनुवाद :- (हे राजा) तू हमको दिव्य वाणी के वचन द्वारा आनन्द देता है। हम तुम्हें कल्याणकारी वचन के साथ दुःख से अलग हो कर ऊँची ध्वनि वाली वाणियों से प्रसन्न करते हैं, तो हमारी वाणी सुनो और हम कभी भी नाश को प्राप्त न हों।

व्याख्या :- इस मंत्र में वेद के ऋषि ने जो नअत(स्तुति) गाई है इसको स्वीकार करने की प्रार्थना की है। देखा जाए तो यह प्रार्थना वेद के मानने वालों के लिए एक संदेश है कि उस विभूति को स्वीकार करके इहलोक और परलोक में भलाई प्राप्त करें और दोनों लोकों में नुक़सान उठाने से बचे।

पैग़ंबर मुहम्मद(स) जब हिजरत(प्रवास) कर के मदीना शहर आये तब सब लोगों ने दफ़ बजाकर नअत पढ़ी "तला अल बदरू अलैना... " अर्थात "हम पर चाँद उदय हुआ है... " आज भी हम देखते है कि मुसलमान पैग़ंबर मुहम्मद(स) की प्रशंसा में नअत गाते हैं। इस तरह वेद के ऋषि ने हिन्दुओं को अपने मार्गदर्शक और अंतिम ऋषि का परिचय दिया है। अथर्ववेद के कुछ सूक्त "कुंताप सूक्त" कहलाते हैं इनको बड़े-बड़े यज्ञों में 17-17 पुजारी बड़ी श्रद्धा से यह मंत्र पढ़ते हैं और प्रति वर्ष दोहराया जाता है। इस से यह बात सिद्ध होती है कि हिन्दू समाज इन मंत्रों को याद रखकर अंतिम ऋषि को पहचान सके। आइये संक्षिप्त में 1-14 तक के मंत्र देखें। ताकि उस महान व्यक्तित्व को अच्छी तरह जान सकें। अथर्ववेद 20:127:1-14

(1) इस पहले मंत्र में नराशंस कहकर नामे "मुहम्मद" की भविष्यवाणी दी गई है और उन्हें अमन(शांति) फैलाने वाला या हिजतर करने वाला बताया गया है और 60,090 दुश्मनों से उस पैग़ंबर को बचाने का वर्णन है।

(2) इस दूसरे मंत्र में पैग़ंबर मुहम्मद(स) को ऊँटनी सवार बताया गया है।

(3) इस तीसरे मंत्र में मुहम्मद(स) को 100 सोने के सिक्के, 10 हार, 300 घोड़े, 10,000 गायें, दिये जाने का वर्णन है और पैग़ंबर मुहम्मद(स) को मामहे ऋषि के नाम से याद किया गया है।

(4) चौथे मंत्र में पैग़ंबर मुहम्मद(स) के अनुयायी युद्ध के मैदान में भी प्रार्थना(नमाज़) नहीं छोड़ने का वर्णन है।

(5) पाँचवे मंत्र में पैग़ंबर मुहम्मद(स) को "रेभ" कहा गया है अर्थात "अहमद" और धर्मयुद्ध में आगे बढ़ने वाले कहा गया।

(6) इस मंत्र में भी रेभ अर्थात अहमद कहा गया है और दिव्य कुरआन के संदेश को सब लोगों के बीच पहुँचाने को कहा है और "पैग़ंबर मुहम्मद(स) को सब क़ौमों का मार्गदर्शक बताया है।

(7) इस मंत्र में पैग़ंबर मुहम्मद(स) को सारे जहाँ में प्रसिद्धि पाने वाले और "अफ़ज़लुलबशर" यानी सब इंसानों में श्रेष्ठ कहा है और पद पदर्शक यानी दुनिया को रास्ता बताने वाले, सबसे बढ़कर गुणी और हितकारी यानी दुनिया के लिये लाभदायक भी कहा है।

(8) इस मंत्र में पैग़ंबर मुहम्मद(स) की छत्रछाया में सब क़ौमें अज्ञानता के गढ़े से निकल कर ज्ञान के आकाश पर क़दम रखने और "पैग़ंबर मुहम्मद(स) के द्वारा अज्ञानता के अंधकार को प्रकाश की तलवार से काट डालने का वर्णन है।

(9) इस मंत्र में पैग़ंबर मुहम्मद(स) को प्रसिद्धि रखने वाले राजा कहा और आप(स) के राज्य में अमन व अमान, सुख और शांति रहने की भविष्यवाणी दी गई है।

(10) इस मंत्र में बताया गया है कि जिस प्रकार खेती आकाश की ओर बढ़ती है उसी तरह पैग़ंबर मुहम्मद(स) के मार्गदर्शन से लोग भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति करेंगे।

(11) इस मंत्र में पैग़ंबर मुहम्मद(स) को नीन्द से जगाकर शांति धर्म(इस्लाम) के प्रचार का आदेश दिया गया है और एक ही परमात्मा की बढ़ाई करने के लिए कहा गया है।

(12) इस मंत्र में पैग़ंबर मुहम्मद(स) को सब की उन्नति कराने वाले और हज़ारों का दान देने वाले दीनदयाल कहा गया है।

(13) इस मंत्र में पैग़ंबर मुहम्मद(स) के साथी, दुश्मनों से और डाकुओं से सुरक्षित रहेंगे बताया गया है।

(14) इस मंत्र में वेद के ऋषि ने पैग़ंबर मुहम्मद(स) के लिए नअत(स्तुति) गाई और उसे स्वीकार करने के लिए परमात्मा से प्रार्थना की और पैग़ंबर मुहम्मद(स) को विनाश से बचाने के लिए भी प्रार्थना की है।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमात्मा परमेश्वर अल्लाह हम सबका सत्य की ओर मार्गदर्शन करे।

प्रमाण - 15

अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या।
तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः ।।

(अथर्ववेद :- काण्ड : 10, सूक्त : 2, मंत्र : 31)

शब्दार्थ :-

अष्टा = आठ

कोशः = खज़ाना है

चक्रा = तवाफ़(परिक्रमा)

द्वारा = दरवाज़े

नव = नौ(9)

देवानां = देवगुण रखने वालों की

तस्यां = उस में

पूर् = बस्ती

हिरण्ययः = अनेक बलों से युक्त

स्वर्गः = स्वर्ग

अयोध्या = जहाँ युद्ध न हो, अजय

आवृताः = छाया हुआ है

ज्योतिषा = ज्योति से।

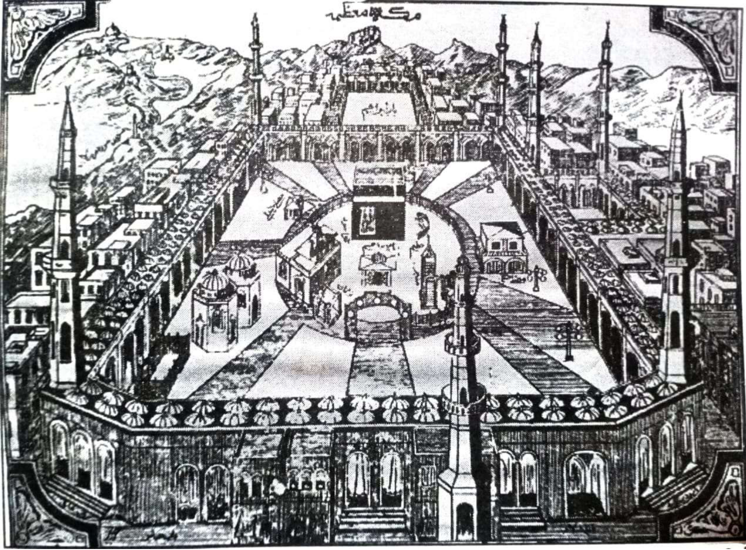
अनुवाद :- आठ चक्र, नौ दरवाज़े, देवगुण रखने वालों की बस्ती जहाँ युद्ध न हो, उसमें अनेक बलों से युक्त खज़ाना है, स्वर्ग के समान जिस पर ज्योति छाई हुई है।

व्याख्या :-

(1) आठ चक्र :- मुसलमान हाजी जब हज(तीर्थयात्रा) करने के लिये मक्के को जाते हैं तो सात चक्र(परिक्रमा) करते हैं और आठवें चक्र को बाहर निकलते हैं या ये कहो कि तवाफ़(परिक्रम) जहाँ से प्रारंभ करना है उस स्थान पर पहुंचने तक आधा चक्र हो जाता है और परिक्रमा पूर्ण करके बाहर निकले तक और आधा चक्र हो जाता है इसीलिए वेद के इस मंत्र में "अष्टाचक्रा" कहा गया है।



(2) नौ दरवाज़े :- हम जानते हैं कि काबे के नौ(9) दरवाज़े थे,
1) बाबे इब्राहीम, 2) बाबुल विदा, 3) बाबुस् सफ़ा, 4) बाबे अली, 5) बाबे अब्बास, 6) बाबुन नबी, 7) बाबुस सलाम, 8) बाबुज़ ज़ियारह, 9) बाबे हरम।



(3) इस मंत्र में "देवानां पूरयोध्या" आया है हम जानते हैं कि देवगुण रखने वालों की नगरी मक्का पुण्य शहर है और उस देवगुण रखने वाली बस्ती को "अयोध्या" कहा गया है। अयोध्या अर्थात जहाँ युद्ध न हो, हम जानते हैं कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने दस हज़ार देवगुण रखने वाले अनुयायों के साथ मक्का शहर पर

आक्रमण किया और बिना युद्ध के मक्का शहर को फ़तह किया क्योंकि आप(स) ने अपने अनुयायों से यह कहा था कि यह मक्का पुण्य क्षेत्र "अयोध्या" है जहाँ पर युद्ध को निषेध किया गया है। यह देवताओं की नगरी है अतः तुम वहाँ पर रक्त-पात मत करो इसी कारण मक्का बिना युद्ध के मुसलमानों को प्राप्त हो गया। और यह पुण्य क्षेत्र मक्का जिस को "अजय" भी कहा गया है अर्थात किसी से पराजित नहीं होने वाला। हम देखते हैं कि इस मंत्र में मक्का पुण्य क्षेत्र को अयोध्या इसलिए भी कहा गया है कि यह अजय है कोई भी दुनिया की ताक़त इस मक्का पुण्य क्षेत्र को पराजित नहीं कर सकती।

हम देखते हैं कि अब्राहा जो यमन का बादशाह था वह हाथियों की फ़ोज लेकर आता है ताकी अरबों को डरा सके क्योंकि अरब में गरमी के कारण हाथी वहाँ नहीं रहते और अरब के लोग इन हाथियों को देखकर डर जाएँगे और मुझे विजय प्राप्त होगी। जब अब्राहा का लश्कर मक्के में प्रवेश किया तो सारे मक्के वाले पहाड़ों पर चले गए और इतिहास साक्षी है कि परमात्मा परमेश्वर अल्लाह ने किसी की मदद नहीं ली खुद बला डालकर लश्कर को तबाह कर डाला। आज भी दुनिया की कोई ताक़त मक्का पुण्य क्षेत्र को न हानी पहुँचा सकती है और न मक्के पर विजय प्राप्त कर सकती है।

और इस मंत्र में "तस्यां हिरण्ययः कोशः" कहा गया है यानी उसमें अनेक बलों से युक्त खज़ाने हैं अर्थात समस्त शक्तियों को जहाँ एकत्र किया गया हो। और वह बल या शक्ति आध्यात्मिक ज्ञान स्रोत है जिसके द्वारा आज मूसलमानों में वली, गौस, क़ुतुब, अब्दाल, सूफ़ी, संत, महा पुरुष पैदा हो रहे हैं और इस मंत्र में उस बस्ती अर्थात मक्का पुण्य क्षेत्र को स्वर्ग कहा गया है स्वर्ग अर्थात सुख, शांति, अमन, चैन वाला स्थान। और हम देखते हैं कि वहाँ मक्के में जहाँ फल, तरकारी और अनाज की पैदावार नहीं होती है क्योंकि वह रेगिस्तान का इलाक़ा है परंतू मक्के को स्वर्ग इस कारण से कहा गया है कि भौतिक रूप से भी वहाँ हर

प्रकार के फल, तरकारी आदि चीज़ें प्राप्त होंगे और वहाँ का पानी जिसको "ज़म ज़म" कहा जाता है यह दुनिया का श्रेष्ठ जल कहलाता है इस प्रकार भौतिक स्वर्ग भी वहाँ है और अध्यात्मिक स्वर्ग यह है कि वहीं से दिव्य क़ुरआन का ज्ञान दुनिया को मिला है जिसके द्वारा पैग़ंबर मुहम्मद(स) पर विश्वास लाने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने अंदर स्वर्ग का अनुभव करता है।

इस मंत्र में "ज्योतिषावृतः" कहा गया है अर्थात उस बस्ती में ज्योति छाई हुई होगी। हम देखते हैं इस्लाम या शांति धर्म आने से पहले लोग अंधकार के गढ़े में थे परंतू इस्लाम और क़ुरआन ने आकर के उन सबको ज्ञान के आकाश पर पहुँचाया है और जो कोई इस बस्ति का दर्शन करता है अर्थात मक्का पुण्य क्षेत्र का दर्शन करता है तो उस व्यक्ति के हृदय से पाप का अंधकार दूर हो जाता है और पुण्य का प्रकाश उसके हृदय में उजागर हो जाता है और खासकर जो लोग हज के लिये जाते हैं उनके अंदर वह ज्योति छा जाती है अर्थात प्रकाश छा जाता है। अगर आप लौकिक दृष्टि से भी देखेंगे तो आज Satellite के Pictures देखने से पता चलता है कि भूमंडल पर दो ही स्थान ऐसे हैं जहाँ ज्योति छाई हुई है। एक मक्का और एक मदीना और आध्यात्म का भी संबंध इन दो स्थानों से ही है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि यह मंत्र केवल और केवल मक्का पुण्य क्षेत्र को ही संबोधित कर रहा है।

प्रमाण - 16

अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रह।
अहं सूर्य इवाजनि ।।

(सामवेद :- अध्याय : 2, दशति : 4, मंत्र : 8)

शब्दार्थ :-

अहमिद्धि = अहमद ने

पितुः = पिता (परमेश्वर) से

ऋतस्य = सत्यज्ञान

मेधाम् = धारणावती बुद्धि (हिकमत)

परि, जग्रह = ग्रहण की है

अहम् = मैं

सूर्य इव अजनि = सूर्य सा प्रकाशमान हो गया।

अनुवाद :- अहमद ने पिता परमेश्वर से सत्यज्ञान(कुरआन) और हिकमत (धारणावती बुद्धि) ग्रहण की है, मैं (उस से) सूर्य के समान प्रकाशमान हो गया।

व्याख्या :- मंत्र के शब्द बताते हैं कि अहमद(स) ने परमात्मा से धार्मिक ज्ञान प्राप्त किया और साथ ही हिकमत(तत्वज्ञान) भी प्राप्त किया और मंत्र के ऋषि यह कह रहे हैं कि मैं इस तत्वज्ञान से सूरज की तरह रौशन हूँ।

"अहमद" मुहम्मद(स) का ही दूसरा नाम है जब आप(स) पैदा हुए माँ ने यह नाम रखा था और वेद के कुंताप सूक्त में आप(स) को "रेभ" कहा गया है अर्थात सब से अधिक परमात्मा की स्तुति करने वाला जिसको अरबी भाषा में "अहमद" कहते हैं। देखो अथर्ववेद - काण्ड : 20, सूक्त : 127, मंत्र : 4,5,6। और इंजील(Bible) में भी "अहमद" का अनुवाद कर दिया गया और Paraclete कह दिया। जिसका अर्थ भी "अहमद" ही होता है।

एक भाषा दूसरे देशों में या दूसरी जगहों पर जाकर बदल जाती है जैसे बहुत = भोत, बहू= भौ, जहाँगीर = झाँगीर, मुहम्मद = महामद, फ़ज़लोद्दीन = फजलदीन।

वेद का अर्थ लिखने वालों से एक गलती हो गई क्योंकि "अहमद" अरबी शब्द है तो वे इसे समझ न सके और उन्होंने "अहमद" को "अहम" "इत" बना दिया और अर्थ कर दिया "मैंने ही अपने बाप से... "

अगर इस अनुवाद को मान लिया जाए तो फिर दो प्रश्न खड़े हो जाते हैं।

प्रश्न-1 : इस मंत्र के ऋषि वत्सः काण्व अर्थात काण्व खानदान के ऋषि वत्सः है। इस ऋषि का यह कहना कि "मैंने ही बाप से सच्ची हिकमत को प्राप्त किया है" वैदिक मान्यता के अनुसार ग़लत है, वत्सः जैसे सैंकड़ों ऋषियों का वर्णन वेद में मौजूद है और इसके इस दावे में सच्चे होने का कोई प्रमाण नहीं कि इसको ही सच्ची हिकमत और शरीअत मिली है।

प्रश्न-2 : इस मंत्र के देवता इंद्र है वत्सः काण्व ही केवल इंद्र के बेटे नहीं कि वह इनकी संपत्ति के उत्तराधिकारी हुए हों और न यह बात कहीं इतिहास में मौजूद है कि वत्सः ही इंद्र के उत्तराधिकारी हुए थे। बस इस सूरत में ऋषि की बात एक मुबालिग़ा अर्थात बिना उल्लेख के होगी जो सही नहीं है।

दिव्य क़ुरआन इस मंत्र के राज़ को इस प्रकार खोलता है

"या अय्युहन्नबिय्यु इन्ना अर्सलना क शाहिदंव व मुबश्शिरंव व नजीरा व दाअियन इलल्लाहि बिइज़निही व सिराजम् मुनीरा" (क़ुरआन 33:45)

अर्थात "हे नबी हमने आपको गवाह, खुशखबरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है और आप अल्लाह की ओर से उसके आदेश से बुलाने वाले और रौशन करने वाले सूरज हैं"।

आकाश में दो प्रकार के चीज़ें प्रकाशमान हैं। एक वह जो खुद रौशन हैं और दूसरे वह जो खुद रौशन होने वालों के नूर से प्रकाशमान हैं जैसे रात के समय चाँद। क्योंकि वह उस सूरज से प्रकाश लेकर चमकता है (The Moon shines because its surface reflects light from the Sun)। इसीलिए ऋषि वत्सः का यह कहना कि मैं सूरज के समान हूँ यह असल में रौशन सूरज अर्थात अहमद(स) की गवाही है। जिसने अपने परमात्मा से धार्मिक ग्रंथ और हिकमत(Wisdom) प्राप्त किया है और कुरआन में सूरह जुमुआ में अल्लाह तआला कहता है "वही है जिसने अरबों में उन्हीं में से एक रसूल उठाया जो उन्हें

उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है, उन्हें निखारता है और उन्हें किताब और हिकमत की शिक्षा देता है" । इसी प्रकार अहमद(स) को सूरह बखरा में तथा और भी जगाहों पर किताब और हिकमत देने का वर्णन है और यही मंत्र ऋग्वेद-मंडल : 8 सूक्त : 6, मंत्र : 10 और अथर्ववेद-काण्ड : 20, सूक्त : 115, मं : 1 में भी है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस मंत्र का एक एक शब्द मुहम्मद मुस्तुफा अहमदे मुज्तबा(स) को ही संबोधित कर रहा है।

प्रमाण - 17

ओ३म् भूर्भुवः स्वः ।
तस्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

(यजुर्वेद :- अध्याय : 36, मंत्र : 3)

शब्दार्थ :-

भूर = मनुष्य को प्राण प्रदान करने वाला

भुव = दुखों का नाश करने वला

स्वः = सुख प्रदान करने वाला

तत् = वह

सवितुर = सूर्य

वरेण्यं = प्रकाशमान

भर्गो = कर्मों का उद्धार करने वाला

देवस्य = देवता की

धीमहि = बड़ी बुद्धि

धियो = बुद्धि

यो = जो

नः = हमारी

प्रचोदयात = तेज़ करे, पवित्र करे।

अनुवाद :- वह प्रकाशमान सुर्य जो कर्मों का उद्धार करने वाले देवता की बड़ी बुद्धि हमारी बुद्धि तेज़ करे, पवित्र करे।

व्याख्या :- इस मंत्र को गायत्री मंत्र कहते हैं और इसका दूसरा नाम सावित्री देवी है और यह वेदों की माँ कहलाती है।

गायत्री मंत्र वेदों में और भी जगह मौजूद है और कुछ उपनिषदों और शास्त्रों में भी गाया गया है, इसलिए कि यह गाना है और पवित्र गाना है, यह ऐसा पवित्र गाना है जिसके बिना कोई हिन्दु हिन्दु हो ही नहीं सकता, जैसे कोई ईसाई बिना बपतिस्मा(Baptism) के ईसाई नहीं हो सकता और मुसलमान बिना कलमे तय्यबा मुसलमान नहीं हो सकता, वैसे ही हिन्दु के लिए गायत्री मंत्र है।

यह गायत्री मंत्र प्रति दिन सूर्य उदय और सूयास्त के समय पूजा में पढ़ा जाता है। और मनुस्मृति अध्याय : 2, श्लोक : 79 में बताया गया है कि अगर किसी से कोई महापाप हो जाए तो उसे चाहिए कि 1000 बार गायत्री मंत्र का पठन करे जिस से उसका महापाप क्षमा हो जाता है जिस प्रकार सांप केंचुली से मुक्त हो जाता है। गायत्री मंत्र का सारा ज़ोर इसके अंतिम शब्द पर है कि "वह हमारी बुद्धि तेज़ करे" कुछ लोगों ने अनुवाद किया "हमारे विचार पवित्र करे"। यह बहुत अच्छी प्रार्थना या इच्छा है हम भी इसकी प्रशंसा करते हैं कयोंकि इसी बुद्धि द्वारा प्रत्येक व्यक्ति सत्य को ग्रहण कर सकता है। और ऋग्वेद मंडल : 6, सूक्त : 47, मंत्र : 10 में भी इसी तरह कि प्रार्थना है जिसका अनुवाद है "हमारी बुद्धि तेज़ करदे जैसे उसतरे की धार"।

ओ३म का वर्णन :-

(1) इस मंत्र में "सवितुर" अर्थात सूर्य जो प्रकाशमान है उस से प्रार्थना की जा रही है। हम जानते हैं कि वह भौतिक सूरज नहीं है जिससे प्रार्थना की जा रही है। बल्कि वह आध्यात्मिक सूरज(Divine Sun) है। हम जानते हैं कि भौतिक सूर्य दुनिया में होने वाले पापों को रोक नहीं सकता परंतु आध्यात्मिक सुर्य विश्व से पापों को समाप्त करके दुष्टों का नाश करके धर्मराज स्थापित करता है।

जैसा कि हम जानते हैं दिव्य क़ुरआन में पैग़ंबर मुहम्मद(स) को आध्यात्मिक सूर्य कहा गया है। सूरह अरज़ाब में है "या अय्युहन्नबिय्यु इन्ना अर्सलना क शाहिदंव व मुबश्शिरंव व नज़ीरा व दाअियन इलल्लाहि बिइज़निही व सिराजम् मुनीरा" (क़ुरआन 33:45) अर्थात :- हे नबी हमने तुम्हें गवाही देने वाला, ख़ुशखबरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है और आप अल्लाह की ओर से उसके आदेश से बुलाने वाले और प्रकाशमान सूर्य हैं।

(2) पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने ही लोगों के कर्मों का उद्धार(तज़किया नफ़्स) किया। जो लोग अंधकार के गढ़े में थे उन्हें प्रकाश के आकाश पर पहुँचाया। सूरह बखराह और सूरह जुमा में यह बात बताई गई है कि मुहम्मद(स) तज़किया नफ़्स किये अर्थात लोगों के कर्मों का उद्धार किये।

भूर :- मनुष्य को प्राण प्रदान करने वाला

भुव :- दुखों का नाश करने वाला

हम देखते हैं कि मुहम्मद(स) ने शराब, व्यभिचार, ब्याज, चोरी, जुआ, ग़ुलामी आदि दुर्गुणों को समाप्त कर दुखों का नाश किया।

स्वः :- सुख प्रदान करने वाला।

विश्व में समानता स्थापित करके औरतों की इज़्ज़त क़ायम करके विश्व में कुकर्मों को समाप्त कर पैग़ंबर मुहम्मद(स) सुख प्रदान करने वाले बने।

इस प्रकार इस गायत्री मंत्र में जो वेदों की माँ है उस सूर्य नारायण की प्रशंसा और भविष्यवाणी है जिसने तमाम धर्मों को एक ही लड़ी में पुरो दिया और कहा सर्व अवतार सत्यः, सर्व धर्म ग्रंथ सत्यः वास्तव में सूर्य नारायण पैग़ंबर मुहम्मद(स) ही हैं। आप(स) ही का प्रकाश है जो हर प्रकार के अंधकार को समाप्त करता है।

ओ३म् जिसे ओंकार(पवित्र ध्वनि) या प्रणव भी कहते हैं। संस्कृत में ओ३म शब्द तीन अक्षरों से बना है अ, उ, म।

"अ" ध्वनि गले के पीछे से निकलती है,

"उ" मध्यम,

"म" अंतिम,

यह एक रहस्मय शब्द है जिसकी लोगों ने कई व्याख्याएँ की हैं

अ - अकार, उ - उकार, म - मकार इसी से ओंकार बनता है।

प्रमाण – 18

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं
शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः
स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥

(यजुर्वेद :- अध्याय : 36, मंत्र : 24)

शब्दार्थ :-

तत् = वह

चक्षुः = नेत्र के तुल्य सबके दिखाने वाले

देव = दिव्य पुरूष

हितंम् = भलाई के लिए
पुरस्तात् = अनादि काल से
शुक्रम = शुद्ध, पवित्र
उत् चरत = उच्चारण करो
पश्येम शरदः शतं = देखें सैंकड़ों वर्षों तक
जीवेम शरदः शतं = जियें सैंकड़ो वर्षों तक
शृणुयाम शरदः शतं = सुने सैंकड़ों वर्षों तक
प्र ब्रवाम शरदः शत = उपदेश करें सैंकड़ों वर्षों तक
मदीनाः स्याम शरदः शतं = श्याम देश के शहर मदीना में वह सैंकड़ों वर्षों तक (आराम पाता) रहे
भूयश्च शरदः शतात = तेरी प्रशंसा दुनिया में दायम-क़ायम यानी "हमेशा प्रचलित" रहे।

अनुवाद :- वह प्रकाश तुम्हारी भलाई के लिए अनादि काल से आया, तुम उस पर दुरूद पढ़ो(पवित्र वाणी) इस संसार में आकर वह सैंकड़ों वर्षों तक देखता रहे, सैंकड़ों वर्षों तक जियें, सैंकड़ों वर्षों तक वह सुनता रहे और सैंकड़ों वर्षों तक वह दिव्य वाणी का उपदेश देता रहे, श्याम देश के शहर मदीना में वह सैंकड़ों वर्षों तक आराम पाता रहे, तेरी प्रशंसा दुनिया में दायम-कायम रहे अर्थात हमेशा प्रचलित रहे।

व्याख्या :- इस मंत्र में पैग़ंबर मुहम्मद(स) का नाम चक्षुः आया है अर्थात ज्योति। दिव्य क़ुरआन ने सूरह माइदा आयत : 15 में मुहम्मद(स) को ज्योति अर्थात नूर कहा गया है "क़द जाअकुम् मिनल्लाहि नूरुंव् व किताबुम् मुबीन" इस आयत का अनुवाद है "तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से एक ज्योति(नूर) और एक खुली किताब आई है"।

पैग़ंबर मुहम्मद(स) ही देवगुण लोगों के लिए हितकारी अथवा लाभदायक साबित हुए। क्योंकि जो देवगुण लोग थे वे आप(स) के प्रकाश के द्वारा भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त किए। इसी ज्योति के कारण आप(स) पर विश्वास रखने वाले दुनिया के मार्गदर्शक बनते आ रहे हैं। इस प्रकार आप(स) देवगुणों के हितकारी हुए और आप(स) अनादि काल से आये हैं इसका प्रमाण हमें हदीस की पुस्तकों से मिलता है एक हदीस अर्थात मुहम्मद की वाणी में है

"अनामिन्नूरिल्लाहि व कुल्लु शैइम्मिन्नूरी"

अर्थात "मैं अल्लाह के नूर से हूँ और प्रत्येक वस्तु मेरे नूर से है" और एक हदीस में है "अव्वला मा ख़लक़ल्लाहु नूरी" अर्थात "सबसे पहले अल्लाह ने मेरे नूर को पैदा किया" और एक हदीस में आया है कि "कुन्तु नबिय्यिन काना आदमा बैनल माई वत्तीन्" अर्थात "मैं उस समय से नबी हूँ जब आदम(अलै) पानी और मिट्टी में थे"।

इस प्रकार हम जानते है कि पैगंबर मुहम्मद(स) अनादि काल से आये हैं।

इस मंत्र में उस अंतिम ऋषि पर शुद्ध उच्चारण करने के लिए कहा जा रहा है। इसी शुद्ध उच्चारण को मुसलमान "दुरूद" कहते हैं। दुरूद अर्थत पैग़ेबर मुहम्मद(स) की प्रशंसा और स्तुति करना है। जो प्रत्येक मुसलमान दिन-रात और नमाज़ों में इस शुद्ध स्तुति का उच्चारण करता रहता है।

इस मंत्र के ऋषि भविष्य में आने वाले अंतिम ऋषि के लिए इस तरह प्रार्थना कर रहें कि वह इस संसार में आकर सैंकड़ों वर्षों तक देखता रहे, जीता रहे, सुनता रहे, उपदेश करता रहे, यह सब बातें अंतिम धर्म(इस्लाम) के शाश्वित रहने की ओर संकेत कर रहें हैं। हदीसों में पैग़ंबर(स) को "हयातुन नबी" कहा गया है अर्थत सदैव जीवित रहने वाले। इसलिए मुसलमान मुहम्मद(स) को सदैव देखने वाले, सुन्ने वाले, उपदेश करने वाले, और सदैव जीवित मानते हैं।

इस मंत्र के ऋषि प्रार्थना कर रहे हैं कि वह श्याम देश के शहर मदीना में सैंकड़ों वर्षों तक अथवा उससे भी अधिक वर्षों तक आराम पाता रहे। हम जानते हैं कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) चौदह सौ(1400) वर्षों से मदीना शहर में ही आराम पा रहे हैं।

अंत में मंत्र के ऋषि उस अंतिम ऋषि मुहम्मद(स) के लिए प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि तेरी प्रशंसा दुनिया में दायम-क़ायम अर्थात हमेशा प्रचलित रहे। परमात्मा ने ऋषि की प्रार्थना के अनुसार मुहम्मद पैग़ंबर(स) की प्रशंस हमेशा के लिए प्रचलित कर दिया है और दिव्य क़ुरआन इस संदर्भ में कहता है "व र फ़अना लका ज़िक् रक्" अर्थात "हमने आपकी अर्थात मुहम्मद(स) की स्तुति अथवा प्रशंसा को बहुत बुलंद कर दिया है"।

अंत में मैं हमारे हिन्दु भाईयों से एक ग़लत फ़हमी दूर करना चाहता हूँ, कयोंकि मदीना अरबी भाषा का शब्द है इसीलिए हमारे वेद अनुवादक समझ ना पाए और इस शब्द मदीना को पिछले शब्द शतं से मिला कर संधि करदी और शतम्+अदीना कहकर संधि विच्छेद कर दिया।

हम देखते हैं कि ऊपर हर वाक्य शतं पर पूरा हो रहा है और शतं को सुन्ना(ऊपर बिन्दू) आरहा है परंतु यहाँ पर बिन्दू नहीं है और वाक्य पूरा होने पर भी अगले वाक्य के पहले शब्द से शतं जोड़कर संधी बना दी गई। मुमकिन है कि वेद अनुवादकों ने मदीने का 'म' देखकर शतं का बिंदू हटा दिया हो क्योंकि वे अरबी भाषा नहीं जानते थे। हम 'म' को दीना से मिलाकर पढ़ने का कारण रखते हैं वह यह कि इस गायत्री मंत्र में और दूसरे मंत्रों में पैग़ंबर मुहम्मद(स) के दिव्य गुणों का वर्णन किया गया है और आप(स) के धर्म का वर्णन किया गया है और आप(स) के शिष्यों का भी वर्णन किया गया है। ऐसी सूरत में आप(स) के शहर "मदीना" का नाम आना ज़रूरी था इसलिए आया और मदीने का वर्णन भविष्य पुराण में भी है :

स्थापितं तैश्च भूमध्येतत्रोषुर्मदतत्पराः ।

मदहीनं पुरं जातं तेषां तीर्थ समं स्मृतम् ।।

(भविष्य पुराण :- प्रतिसर्गपर्व : 3, काण्ड : 3, अध्याय : 3, श्लोक : 22)

अर्थ :- स्थापित किया गया भूमि के मध्य में मदीना शहर जो लोगों के लिए तीर्थ स्थल है।

प्रमाण - 19

ते त्वा मदा अमदन तानि वृष्ण्या ते सोमासो वृत्रहत्येषु सत्पते ।

यत् कारवे दश वृत्राण्यप्रति बर्हिष्मते नि सहस्राणि बर्हयः ।।

(अथर्ववेद :- काण्ड : 20, सूक्त : 21, मंत्र : 6)

शब्दार्थ :-

वृत्राणि = शत्रुदलों को

त्वा = तुझ को

यत् = जब

सत्पते = हे सत्पुरूषों के रक्षक (रब)

कारवे = स्तुति करने वाले के लिए

ते = उन

दश = दस

मदाः = आनन्द देने वाले शूरों ने

सहस्राणि = हज़ार

अमदन् = प्रसन्न किया

वृत्रहत्येषु = वैरियों को मारने में या युद्ध में

तानि = उन

बर्हिष्मते = यज्ञ करने वाले प्रार्थना करने वाले के लिए

वृष्ण्या = वीरों के योग्य कर्मों ने

अप्रति = बिना मुठभेड़

ते = उन

निबर्हयः = तूने मार डाला या पराजित कर दिया

सोमासः = मस्ताना तरानों ने।

अनुवाद :- हे सत्पुरूषों के आचार्य, तुझे इन प्रसन्न करने वालों ने प्रसन्न किया, उन वीरों के योग्य कर्मों ने और उन मस्ताना तरानों ने दुश्मन की जंग में, जब हम्द(स्तुति) करने वाले इबादत करने वाले के लिए तूने दस हज़ार दुश्मनों को बिना मुठभेड़ पराजित कर दिया।

व्याख्या :- वेद की इस भविष्यवाणी में अंतिम ऋषि पैग़ंबर मुहम्मद(स) की ज़िन्दगी का एक अत्यंत प्रसिद्ध युद्ध का वर्णन है जो इतिहास में जंगे अहज़ाब(खंदक़) के नाम से जाना जाता है। इस वेद मंत्र के शब्दार्थ को सामने रखकर और जंगे अहज़ाब के हालात को देखेंगे तो आपको समानताएँ नज़र आयेंगी और दोनों अनुकूल दिखेंगे।

पहला निशान :- इस मंत्र में अल्लाह ताआला को सत्पति बताया गया है। सत् के माने हक़ परस्त, सादिक़(सच्चे) लोग हैं और पति का अर्थ होता है मालिक या शिष्टाचार की शिक्षा प्रदान करने वाला, सादिक़ीन अर्थात सच्चे, यह पैग़ंबर मुहम्मद(स) के शिष्यों का गुण है। इसलिए क़ुरआन ने इसी जंगे अहज़ाब का वर्णन करते हुए मुहम्मद(स) के शिष्यों की प्रशंसा में यह बात कही "मोमिनों अर्थात पैग़ंबर मुहम्मद(स) के शिष्यों में वे लोग हैं जिन्होंने सब सच कर दिखाया जो अल्लाह से अहद(वादा) किया था" (सूरह अहज़ाब 33:23)। "ताकि अल्लह सच्चों को इनकी सच्चाई का बदला दे" (33:29)। दिव्य कुरआन की इन दो आयतों के अंदर पैग़ंबर मुहम्मद(स) के शिष्यों को सच्चे और अल्लाह

को उनकी सच्चाई का बदला देने वाला बताया गया है और वेद अल्लाह के एक गुण(सिफ़त) सत्पति अर्थात "सच्चों का रब" बताता है। वेद और कुरआन दोनों के शब्दों में किस प्रकार समानता है इसे प्रत्यक व्यक्ति समझ सकता है।

दूसरा निशान :- पैग़ंबर मुहम्मद(स) के शिष्यों की बेमिसाल बहादुरी :- अब वेद का यह मंत्र बताता है कि इन आनन्द देने वाले बहादुरों और इन वीरों के योग्य कर्मों ने परमात्मा या अल्लाह को राज़ी(संतुष्ट) कर दिया। जंगे अहज़ाब में दुश्मनों की संख्या मुसलमानों से बहुत ज़्यादा थी। मुसलमान बहुत ही कम शस्त्रों के साथ 3000 थे और उधर दुश्मन की सेना 10,000 की संख्या के साथ इन पर आक्रमण करने के लिए तय्यार थी। इस कठिन परिस्थिति में पैग़ंबर मुहम्मद(स) के शिष्यों की वीरता और बहादुरी और उनके विश्वास का नक्शा दिव्या कुरआन ने इस तरह खींचा है "जब मौमिनों(शिष्यों) ने दुश्मनों की सेना को देखा तो उन्होंने कहा यह वह है जिसका वादा अल्लाह और उसके रसूल(स) ने किया था। अल्लाह और उसके रसूल(स) ने सच कहा था और इस घटना ने उनके ईमान(विश्वास) को और बढ़ाया, और वह और ज़्यादा परमात्मा के आज्ञाकारी हो गए" (सूरह अहज़ाब 33:22)। दुश्मनों की बहुत बड़ी सेना को देखकर और अपनी कम सेना और कम हथियारों के बावजूद अल्लाह और उसकी बातों पर और अपनी कामियाबी पर इस तरह विश्वास था कि वे जोश में आकर सब के सब पुकार उठे कि ये दुश्मन का ज़्यादा होना और हमारा कम होना वास्तव में हमारी विजय का निशान है। एक छोटी सेना का अपने से तीनगुना ज़्यादा लश्कर को दोखकर यह पुकार उठना उनकी बेमिसाल बहादुरी की दलील है जिसका वर्णन न केवल कुरआन में किया गया बल्कि दूसरे धार्मिक ग्रंथों, वेद आदि में सैकड़ों वर्ष पहले किया गया है।

तीसरा निशान :- इस मंत्र मे पैग़ाम्बर मुहम्मद(स) के दूसरे नाम "अहमद" का वर्णन है। वेद मंत्र के शब्द "कारवे" अर्थात "स्तुति करने वाले के लिए" यह शब्द "अहमद" को संबोधित कर रहा है, संस्कृत भाषा के शब्द "कारवे" का अर्थ

Professor Griffith ने Singer किया है और पंडित राजा राम साहब Professor डी. ए. वी. कालेज, लाहोर ने "स्तुता" अर्थात हम्द करने वाला किया है।

इस से यह बात स्पष्ट होती है कि यह किसी विशेष व्यक्ति का गुण नाम है जो इस युद्ध या इस चरचा का नायक या हीरो है। वह स्तुति करने वाला भी है और सेनापति भी है वह वास्तव में "अहमद" अर्थात मुहम्मद(स) ही हैं।

चौथा निशान :- दस हज़ार दुश्मनों पर विजय प्राप्त करना और तराना अर्थात नारा लगाना। जंगे अहज़ाब का महत्वपूर्ण अंश दस हज़ार दुश्मन हैं। अगर दस हज़ार दुश्मनों पर दस हज़ार फ़ौज कामयाब हो तो यह कोई कामयाबी नहीं और न वर्णन करने योग्य बात है हाँ अगर कम संख्या वाली सेना बावजूद कम हथ्यारों के दस हज़ार पर विजय पाये तो यह वीरता है और प्रशंसनीय कार्य है। इस प्रकार दस हज़ार पर विजय प्राप्त करने वाली सेना बुहत कम होनी चाहिए और वह सहाबा अर्थात मुहम्मद(स) के शिष्यों की सेना थी जिनकी संख्या 3000 थी और शस्त्र भी कम थे। इस प्रकार हमें देखना चाहिए कि इतिहास में वह कौन सी घटना है जिसमें दुश्मन की संख्या दस हज़ार(10,000) थी और सादिक़ीन(सच्चे लोगों) की संख्या बिल्कुल कम थी अर्थात केवल 3000 थी और जिन्होंने अपने से तीन गुना ज़्यादा सेना को देखकर यह तराना या नारा लगाया कि "हाज़ा मा वादनल्लाहु व रसूलिही" अर्थात "यह वह वादा है जो अल्लाह और उसके रसूल ने हम से किया था"। दुश्मन की अधिक संख्या को देखकर वह भयभीत होने कि बजाए प्रसन्न होकर नारे लगाने लगे कि दुश्मन का अधिक होना ही तो हमारी विजय का निशान है और फिर वह कम संख्या वाली सेना विजयी भी हो गई। इन सब बातों से यह प्रमाणित होता है कि मंत्र का उल्लेख जंगे अहज़ाब पर ही पूरा उतरता है।

पाँचवां निशान :- इस मंत्र में "कारवे" शब्द आया हैं जिसका अर्थ होता है स्तुति करने वाला। पैग़ंबर मुहम्मद(स) युद्ध के मैदान में भी इबादत अर्थात प्रार्थन स्तुति

करने वाले हैं। आप(स) ही की स्तुति के कारण परमात्मा ने दस हज़ार दुश्मनों को पराजित कर के भागने पर मजबूर कर दिया।

छटा निशान :- इस मंत्र में दुश्मन का फरार होना बताया गया है। मुसलमानों की सेना भी कम संख्या में थी और शस्त्र भी कम होने के कारण मदीना शहर के अंदर रहकर लड़ना उचित समझा गया। परंतु दुश्मन का लश्कर बहुत ज़्यादा दस हज़ार का था वह मुसलमानों को पराजित करने के लिये मक्के से मदीना पहुँचा था। मदीना शहर के लोग जो इस्लाम के दुश्मन थे वे भी इन लोगों की ताक़त और बड़ी सेना देखकर वादा तोड़कर दुश्मनों से मिल गए। ऐसी परिस्थिति में दुश्मन क्यों भागेगा। यह एक रहस्य और परमात्मा की शक्ति का निशान था कि दुश्मन भाग गया।

सातवां निशान :- भागने का कारण,

इस वेद मंत्र का देवता इन्द्र है, इसी सूक्त के दूसरे मंत्रों में इंद्र को तुफ़ान और गरजने वाली बिजली की कड़क कहा गया है। इस युद्ध में दुश्मन तुफ़ान और बिजली की कड़क से डर कर अर्थात इन्द्र देवता से भयभीत होकर भाग गये। वेद के अपने शब्द हैं "तूने (हे इंद्र) दस हज़ार दुश्मनों को बिना मुदभेड़ के पराजित कर दिया" किस प्रकार खुला निशान है जो जंगे अहज़ाब में पूरा हुआ। वास्तव में यह युद्ध मुसलमानों के साथ नहीं था बल्कि परमात्मा परमेश्वर अल्लाह के साथ था जिसने अपनी एक शक्ति अर्थात तुफ़ान और बिजली की कड़क से दुश्मनों को भगा दिया। इसी प्रकार दूसरे स्थान पर भी स्पष्ट वाक्य वेद में वर्णित है। अथर्ववेद:- काण्ड : 20, सूक्त : 12, मंत्र : 3 में है "उस इंद्र ने अपनी ताक़त से आकाश और धरती दोनों को बुलवाया और बिना मुदभेड़ के दुश्मनों को मार डाला"।

हम जानते हैं कि जंगे अहज़ाब में किस तरह दुश्मनों के डेरे और खन्नाते उखड़ गए और वृक्ष गिर पड़े और जानवर और इंसान सब डर कर भाग गए।

वेद के इस मंत्र की भविष्यवाणी का सारांश :-

1. इस मंत्र में एक युद्ध का वर्णन है।

2. जिसमें अल्लाह ताआला सादिक़ीन(सच्चों) के एक समुदाय को सफ़ल करेगा।

3. वह सादिक़ीन(सच्चों) का समुदाय इस जंग में एक बेमिसाल बहादुरी का तराना या नारा लगाएगा।

4. इनके इस नारे से परमात्मा उनसे प्रसन्न होगा।

5. इस युद्ध में सेनापति परमात्मा की स्तुति करने वाला अर्थात अहमद(स) (पैग़ंबर मुहम्मद (स) का दूसरा नाम) होगा।

6. इस युद्ध में दुश्मनों की संख्या दस हज़ार बताई गई है।

7. सादिक़ीन(सच्चों) को युद्ध नहीं करना पड़ेगा।

8. दुश्मन की सेना बावजूद पूरी तत्य्यारी के भाग जाएगी।

9. दुश्मन का लश्कर परमात्मा के निशान को देखकर भाग जाएगा जैसा कि क़ुरआन में सुरह अहज़ाब 33:25 में है "तो अल्लाह लड़ाई के मामले में मौमिनों के लिए काफ़ी हुआ और अल्लाह ताक़तवर और ग़ालिब है"। दिव्य कुरआन के शब्द "क़विय्यन अज़ीज़ा" शब्द इंद्र के समानार्थी है।

10. वह चमत्कार इंद्र देवता या बिजली की कड़क और सख्त तुफ़ान के द्वारा प्रकट हुआ। जिसने आकाश और धरती दोनों को बुलवाया। दिव्य कुरआन इसका इस तरह नक्शा सींचता है सूरह अहज़ाब 33:9, "हे लोगो जो ईमान लाए हो अपने ऊँपर अल्लाह की नेअमत(कृपा) को याद करो जब तुम पर लश्कर आ पहुँचा। सो हमने उन पर हवा को और ऐसे लश्करों को भेजा जिन्हें तुम नहीं देखते थे और अल्लाह इसे जो तुम करते हो देखता है"।

जंगे अहज़ाब में दुश्मनों की फ़ौज दस हज़ार थी यह अंतिम ऋषि पैग़ंबर मुहम्मद(स) और इस्लाम की सत्यता का खुला चमत्कार था कि इतनी बड़ी सेना

हवा से डर कर भाग गई। हालांकि यह आंधी दोनों लश्करों पर समान रूप से चली मगर एक लश्कर के लिए फ़तह(सफलता) और दूसरे के लिए विनाश लाई।

जानना चाहिए कि मंत्र के एक एक शब्द की भविष्यवाणी पूरी हुई।

प्रमाण - 20

युधा युधमुप घेदेषि धृष्णुया पुरा पुरं समिदं हंस्योजसा।
नम्या यदिन्द्र्र सख्या परावति निबर्हयो नमुचिं नाम मायिनम्॥

(अथर्ववेद :- काण्ड : 20, सूक्त : 21, मंत्र : 7)

शब्दार्थ :-

युधा = एक युद्ध से

सं हंसि = तु नष्ट कर देता है

युधम् = दूसरे युद्ध को

नम्या = नम्र आज्ञाकारी अर्थात मुसलमान के साथ

घ = निस्संदेह

यत् = जब

इत् = अवश्य

इन्द्र = हे इन्द्र

धृष्णुया = बहादुरी से

सख्य = दोस्त के साथ

उप एषि = तू जाता है

परावति = दूर पड़े को

पुरा = क़िले के बाद

निबर्हयः = तूने मार डाला है

पुरम् = क़िले को

नमुचिम = न छुटने योग्य "दण्डनीय"

नाम = नाम

ओजसा = ताक़त के साथ

मायिनम् = धोकेबाज़ को।

अनुवाद :- तू एक युद्ध से दूसरे युद्ध की ओर बहादुरी से जाता है। क़िले के बाद क़िले को अपनी ताक़त से तू नष्ट कर देता है। आज्ञाकारी अर्थात मुस्लिम दोस्त के साथ तू हे इन्द्र दूर पड़े हुए धोकेबाज़ अहद-शिकन नमुचि नाम को तूने मार डाला है।

व्याख्या :- अथर्ववेद : काण्ड : 20, सूक्त : 21, मंत्र : 6 मंत्र के बाद जिसमें हम जंगे अहज़ाब का वर्णन भविष्यवाणी के रूप में पिछले मंत्र में बता चुके हैं। आगे के 7 से लेकर 11 मंत्र भी ग़ौर करने के योग्य हैं। जंगे अहज़ाब में मुसलमानों के विरूद्ध मक्के के दुश्मन और यहूदी सब इकट्ठा हो गए थे। हालांकि यहूदी पैग़ंबर मुहम्मद(स) से समझोता कर के सहयोगी बने हुए थे परंतु उन्होंने समझोता तोड़ दिया था और उस समय मुसलमानों के विरूद्ध अरब के सब क़बीले(समूदाय) एक हो गए थे और मुसलमानों को कम संख्या में देखकर मुसलमानों का विनाश निश्चित समझा और मुसलमानों से समझौता तोड़कर अरब के दुश्मानों के साथ मिल गये। ये अंदर के दुश्मन बाहर के दुश्मनों से ज़्यादा खतरनाक थे। परंतु परमात्मा ने इस छोटी सी सेना से एक बड़े लश्कर को बिना मुठभेड़ पराजित कर दिया। यह समझौते को तोड़ देना इस योग्य था कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) उनको दंड दें। इसलिए उनके क़िलों पर आक्रमण कर दिया गया जिसके कारण यह लोग अपने क़िलों में बंद हो गए। लगभग 25 दिनों तक ये घेराबंदी जारी रही। जंगे अहज़ाब में क़िलों का कोई वर्णन नहीं है लेकिन इस मंत्र में स्पष्ट रूप से क़िलों का वर्णन किया गया है।

एक युद्ध से दूसरे युद्ध को जाना :-

मंत्र के इन शब्दों से यह बात स्पष्ट है कि इस जंग के बाद जिसमे दुश्मन का दस हज़ार का लश्कर बग़ैर मुठभेड़ के पराजित होकर भाग गया। वह परमात्मा का प्रिय(महबूब) तुरंत ही दूसरे युद्ध के लिए तय्यार हो गया और यह एक बेमिसाल बहादुरी का काम था। अभी-अभी मुसलमानों ने ऐसे ज़बरदस्त लश्कर से मुक्ति प्राप्त की थी कमर खोलने न पाए थे कि दूसरे युद्ध की तय्यारी का आदेश दे दिया गया। पहली जंग(अहज़ाब) में क़िलों का कोई वर्णन नहीं लेकिन दूसरी जंग में क़िले के बाद क़िले विजय करने का वर्णन आता है। दिव्य कुरआन ने भी यही कहा हैं सुरह अहज़ाब (33:26) "और उन्हें जिन्होंने किताब वालों में से उनकी मदद की थी इनके क़िलों से निकाल दिया और उनके दिलों में धाक बिठादी। एक गिरोह को तुम जान से मारते थे और एक गिरोह को बन्दी बनाते थे"।

इस मंत्र की उस समय के हालात से समानता :-

1. इसी सूक्त के मंत्र 6 में जंगे अहज़ाब का विस्तृत वर्णन किया गया था वे सब की सब बातें जंगे अहज़ाब में पूरी हो गई और यह सारे हालात जिस आश्चर्यजनक तौर से पूरे हुए वह दुनिया में केवल एक ही नबी(स) की ज़िन्दगी की अत्यंत महत्वपूर्ण घटना है और इसे दुनिया की किसी और जंग पर चसपा करना असंभव है।

जंगे अहज़ाब के तुरंत बाद मंत्र 7 में एक और जंग का वर्णन है। अर्थात दस हज़ार दुश्मनों का बड़ा लश्कर एक छोटी सेना से बिना मुठभेड़ पराचित हो गया। इसके तुरंत बाद पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने पहले जंग के हथियार खोले बिना एक और जंग का निश्चय कर लिया जिसे वेद ने एक युद्ध के बाद दूसरे युद्ध की ओर जाना बताया है।

2. मुसलमानों का यह एक और युद्ध का निश्चय करना एक वीरता पूर्वक निश्चय था कयोंकि जंगे अहज़ाब में अगर अल्लाह की मदद मुसलमानों के साथ न होती तो बाहरी दुश्मन का ज़्यादा संख्या में होना और भीतरी ग़द्दारो की गद्दारी ने उसी समय देखा जाएतो मुसलमानों को पराजित और समाप्त करने का सामान कर दिया था। ऐसी बड़ी जंग के बाद जिसमें जान बची लाखों पाये की कहावत पूरी हुई, मुसलमानों का एक और समूदाय पर हमले के लिए तय्यार हो जाना निस्संदेह वेद मंत्र के शब्दों के कथन अनुसार एक बेमिसाल बहादुरी का काम है।

3. मंत्र 6 में या जंगे अहज़ाब की चर्चा में क़िलों का कोई वर्णन नहीं है, लेकिन इस जंग के बाद दूसरी जंग में क़िले तोड़ने का वर्णन है और यह क़िले यहूदी समुदाय बनू नज़ीर, बनी क़ेनक़ा और बनी क़ुरेज़ा के क़िले थे जिनको पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने तोड़ डाला।

4. नमाज़ पढ़ने वाले, रुकू करने वाले या झुकने वाले महबूब के साथ हे इंद्र(ईश्वर)। इसके संस्कृत शब्द है "नम्या यदिन्द्र सख्या" अर्थात झुकने वाले दोस्त के साथ हे इंद्र, देखें यह शब्द पैग़ंबर मुहम्मद(स) पर किस प्रकार से पूरे उतरते हैं।

5. पैग़ंबर मुहम्मद(स) के दुश्मनों को दूर पड़े हुए लोग बताया गया है। बैबल ने इसी समूदाय के बारे में रोकी हुई क़ौम के शब्द इस्तेमाल किये हैं। देखो यरमिया नबी की भविष्यवाणी।

6. इस यहूदी क़ौम का दूसरा गुण धोकेबाज़ और अहदशिकन अर्थात समझौता तोड़ने वाले बताया गया है। इस समुदाय ने मुसलमानों से समझौता किया था कि अगर कोई दुश्मन मदीना शहर पर हमला करे तो सब मिलकर लड़ेंगे परंतु दुश्मनों की संख्या को देखकर इस यहूदी समुदाय ने समझौता तोड़ डाला।

7. वेद के जिस शब्द का अनुवाद धोकेबाज़ है वह "मायिनम" है। माया इस चीज़ को कहते हैं जो देखने में अच्छी नज़र आएगी परंतु वास्तव में धोखा रहेगा।

इसीलिए बाईबल ने इसी समूदाय के बारे मे "खोटी चाँदी" की कहावत का प्रयोग किया।

8. इस समुदाय का नाम वेद ने "नमुचि" बताया है। संस्कृत भाषा में "नमुचि" का अर्थ "रोक रखने वाला, ना छोड़ने वाला (बारिश को) इस शब्द का एक और अर्थ है दण्डनीय"। यहूदियों का विचार था कि आध्यात्मिक बारिश के अधिकारी हम ही हैं। हमारे समुदाय के अतिरिक्त किसी दूसरे समुदाय पर परमात्मा की वाणी की बारिश नहीं हो सकती। इंद्र(ईश्वर) ने इस क़ौम को मार कर बता दिया कि परमात्मा की आध्यात्मिक वर्षा केवल किसी एक समुदाय के लिए नहीं है बल्कि सबके लिए हैं

9. यह हमने अभी बताया की नमुचि का दूसरा अर्थ दण्डनीय है। इस अर्थ के अनुसार यहूदी एक तो अपने पापों के कारण दण्डनीय थे दूसरे पैग़ंबर मुहम्मद(स) जैसे दयासागर के साथ समझौता तोड़कर दण्डनीय बने। इस प्रकार मंत्र का शब्द नमुचि यहूदियों के लिए किस प्रकार उचित है हम समझ सकते हैं।

10. ऋग्वेद आदि पुस्तकों में "नमुचि" उस बुरी आत्मा को कहा गया है जो ज़मीन पर बादल या बारिश बरसने से रोक देती है। इंद्र इसको मार डालता है और बादलों को इसके क़ब्ज़े से छुड़ा लाता है। दुनिया के सारे धर्म ग्रंथों ने सिवाय क़ुरआन ए करीम के दिव्य वाणी की बारिश को अपने आप तक सीमित कर के एक खास समय तक बंधि बनाकर रखा था। पैग़ंबर मुहम्मद(स) का दुनिया पर यह बहुत बड़ा उपकार है कि आप(स) ने इस नमुचि को मार कर दिव्य वाणी की बारिश को सारी दुनिया में पहुँचाने का काम किया है। इसी बात को दिव्य कुरआन इस प्रकार कहता है, सूरह नहल 16:65

"अल्लाह ने बादलों से पानी उतारा है और ज़मीन को उसके मरने के बाद जीवित कर दिया है इसमें निस्संदेह एक निशानी है सुनने वाली क़ौम के लिए"।

जिस तरह ज़मीन की ज़िन्दगी के लिए बारिश की ज़रूरत है इसी प्रकार क़ौमों की ज़िन्दगी के लिए आध्यात्मिक बारिश की बेहद ज़रूरत है। दिव्य क़ुरआन या पैग़ंबर मुहम्मद(स) की दिव्य वाणी हदीस विश्व के लिए लाभदायक बारिश है जिसने सारी दुनिया की क़ौमों को ज़िन्दा किया। इसलिए इस नमुचि को मुहम्मद(स) ने ही मार डाला।

प्रमाण - 21

त्वमेतां जनराज्ञो द्विर्दशाबन्धुना सुश्रवसोपजग्मुषः।
षष्टिं सहस्रा नवतिं नव श्रुतो नि चक्रेण रथ्या दुष्पदावृणक्॥

(अथर्ववेद :- काण्ड : 20, सूक्त : 21, मंत्र : 9)

शब्दार्थ :-

त्वम् = तू ने

अबन्धुना = अनाथ

एतान् = इन

सुश्रवसा = बड़ी प्रशंसा वाले के साथ

जनराज्ञः = लोगों के सरदारों

श्रुतः = प्रसिद्ध, विख्यात

द्विः दश = बीस को

चक्रेण = चक्र "हथियार" के साथ

षष्टिं = साठ

रथ्या = रथ

सहस्रा = हज़ार

दुष्पदा = पकड़ में ना आने वाले

नवतिं नव = निन्यानवे
नि अवृणक् = उलट पलट कर दिया है
उपजग्मुषः = उनके साथियों को।

अनुवाद :- तूने हे इन्द्र(ईश्वर) अनाथ प्रसिद्ध बड़ी प्रशंसा वाले(मुहम्मद(स)) के साथ उन लोगों के बीस सरदारों और साठ हज़ार निन्यानवे(60,099) पकड़ में न आने वाले दुश्मनों को अपने हथियार रथ और चक्र से उलट पलट कर दिया है।

व्याख्या :- इस से पहले हम यह बता चुके हैं कि मक्का शहर की उस समय की जनसंख्या 60 हज़ार के आस पास थी जिन पर 20 सरदार शासन करते थे।

मक्के में एक तरह की लोकतंत्र की हुकूमत थी क्योंकि वे लोग अपने लोगों में से 20 प्रधानों को चुन लेते थे ताकि वे मक्के में शासन करे और काबा अर्थात मक्का पुण्य क्षेत्र की रक्षा करें। 60 हज़ार की जंनसंख्या इन्हीं के इशारों पर चलती थी।

मक्के में एक ओर इतनी बड़ी जनसंख्या थी तो दूसरी ओर एक "अबन्धु" अर्थात अनाथ या यतीम जिनका कोई मदद करने वाला नहीं था। क़ुरआन ए करीम पैग़ंबर मुहम्मद(स) के बारे में कहता है "अलम् यजिद्का यतीमन् फ़आवा" अर्थात "क्या उसने आप को यतीम पाकर जगह नहीं दी"। पैग़ंबर मुहम्मद(स) अपनी अच्छाई और शिष्टाचार के कारण प्रसिद्ध और प्रशंसनीय थे वैसा ही उनका नाम भी था "मुहम्मद"। वो 20 सरदारों और 60 हज़ार का लशकर एक कमज़ोर इंसान से लड़ने के लिए खड़ा था। दुनिया ने देखा कि वह कमज़ोर इंसान बिना हथियार, बिना सेना के और बिना धन-दौलत के किस प्रकार विजयी हुआ। इसी बात को Bisworth Smith अपनी किताब में लिखते हैं "Without a Standing Army, without Body Guard, without Palace, without Fixed Revenue, if any man had the right to say that He ruled by a divine right, it was Muhammad(pbuh) for He had all the power

without its instruments and without its support." यानी "बिना सेना के, बिना अंगरक्षक के, बिना महल के, बिना धन दौलत के, अगर कोई यह कहता है कि उसने परमात्मा परमेश्वर अल्लाह की ओर से हुकूमत की है तो वह पैग़ंबर मुहम्मद(स) थे जिनके पास तमाम शक्तियाँ थीं बिना यंत्र के और बिना कोई सहयोग के"।

यह कोई दो राजाओं का युद्ध नहीं था बल्कि एक कमज़ोर अनाथ और मक्के की 60 हज़ार जनसंख्या के बीच की जंग थी। लेकिन इस एक के साथ परमात्मा की शक्ति का ऐसा रथ और चक्र था जिसने इसे इतने बड़े दुश्मन पर विजय दिलाईः (ब्रह्मण ग्रंथों और शतपत ब्रह्मण में रथ और चक्र की तुलना युद्ध के शस्त्रों से की है) जो कमज़ोर और अनाथ था वह दुश्मनों पर हावी और विजयी हो गया और दुश्मन अपने 60 हज़ार के लशकर के साथ पराजित हो गये। क्या इस निशान और चमत्कार में पैग़ंबर मुहम्मद(स) की सच्चाई का खुला प्रमाण नहीं है। काश कोई सत्य को ग्रहण करने वाला देखे कि इस एक वेद मंत्र में पैग़ंबर मुहम्मद(स) की सारी जीवनी बता दी गई है। एक समय पैग़ंबर मुहम्मद(स) अकेले और अनाथ थे दुश्मन पूरी ताक़त के साथ मुक़ाबले में था। दूसरा समय आता है वह एक विजयी और राजा ही नहीं बल्कि 60 हज़ार दुश्मनों की जानो पर कब्ज़ा करने वाले मालिक हो जाते हैं। ईश्वरीय शक्ति ने केवल 23 वर्षों में सत्य और असत्य में अंतर करके बता दिया। क़ुरआन कहता है "क़ुल जाअल हक़्क़ वज़हक़ल बातिल इन्नल् बातिला काना ज़हुक़ा"(17:81) अर्थात "सत्य आ गया असत्य भाग गया, असत्य के भाग्य में पराजित होना ही है"।

इसी प्रकार ऋग्वेद मंडल : 1, सूक्त : 53, मंत्र : 9 में भी पैग़ंबर मुहम्मद(स) को "अबंधु सुश्रवसा" यानी अनाथ और प्रशंसनीय बताया गया है वह केवल मुहम्मद(स) ही हैं और दूसरा कोई नहीं हो सकता।

प्रमाण - 22

अव द्रप्सो अशुमतीमतिष्ठदियानः कृष्णो दशभिः सहस्रैः ।
अवत् तमिन्द्र्रः शच्या धमन्तमप स्नेहितीर्नृमणा अधत्त ।।

(अथर्ववेद :- काण्ड : 20, सूक्त : 137, मंत्र : 7)

(ऋग्वेद :- मंडल : 8, सूक्त : 96, मंत्र : 13)

शब्दार्थ :-

द्रप्सः = "कुर्रा" चाँद

अव अतिष्ठत् = जा ठहरा

कृष्णः = काला

इयानः = आगे बढ़ता हुआ

आवत्त्म् = हिफ़ाजत किया गया

दशभिः सहस्रैः = दस हज़ार के साथ

इन्द्रः = इन्द्र

शच्या = ताक़त के साथ

अंशुमतीम् = अंशुमती में

धमन्तम् = बिगल बजाते हुए

स्नेहितीः = हथियारों को

अप अधत्त = परे रख दिया

नृमणाः = बहादुर दिल ने।

अनुवाद :- कृष्णा चंद्र(काला चाँद) अंशुमती नाम की नदी में जा ठहरा, दस हज़ार(10,000) के साथ आगे बढ़ता हुआ इन्द्र ताक़त के साथ हिफाज़त किया गया, बहादुर दिल ने बिगुल बजाते हुए हथियारों को परे रख दिया।

व्याखया :- इस मंत्र में पैग़ंबर मुहम्मद(स) के दुश्मनों का पराजित होना, पैग़ंबर(स) का 10,000 शिष्यों के साथ आगे बढ़ना और परमात्मा की शक्ति का आप(स) की हिफ़ाज़त करना और पैग़ंबर(स) का बहादुरी से युद्ध का बिगुल बजाते हुए आगे बढ़ना और बिना मुठभेड़, बिना युद्ध के विजय प्राप्त करना और अपने हथियारों को परे रखने का वर्णन है।

इस मंत्र में चाँद के काले हो जाने का वर्णन है और अंशुमती को बुद्धिमत्ता की नदी(River of Intelligence) भी कहा गया है। इस प्रकार दूश्मनों को बुद्धि आना अनिवार्य था। कुछ हिन्दुओं की मान्यता के अनुसार जब चाँद महीने की आखरी तारिखों में संपूर्ण काला हो जाता है तो वह अंशुमती नाम की एक ख्याली(काल्पनिक) नदी में डुबकी लगाकर सफ़ेद होकर फिर उदय होता है यह बात वेदों का स्पष्टीकरण करने वाले, साईना चार्य जी ने भी बताई है। अर्थात चाँद के काला होने के बाद जिसका अर्थ है धर्म में बिगाड़ होने पर परमात्मा किसी दूसरे पैग़ंबर या ऋषि की सूरत में उसी ज्योति को प्रकट करता है। और गीता की मन्यता के अनुसार इसकी व्याख्या यह भी हो सकती है कि जब धर्म में बिगाड़ आजाता है तो "कृष्ण चन्द्र" किसी दूसरी सूरत में प्रकट होता है और धर्म को फिर से प्रकाशमान कर दिया जाता है। इसीलिए कृष्ण जी भगवत गीता 4:7-8, में कहते हैं :

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृताम।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

इन श्लोकों का अनुवाद दिल की गीता में इस प्रकार किया गया है

तनज़्ज़ुल में जिस वक़्त आता है धर्म
अधर्म आके करता है बाज़ार गर्म

ये अंधेर जब देख पाता हूँ मैं
तो इन्सां की सूरत में आता हूँ मैं
भलों को बुरों से बचाता हूँ मैं
बुरों को जहां से मिटाता हूँ मैं
जड़ें धर्म की फिर जमाता हूँ मैं
अयां हो के युग युग में आता हूँ मैं।

पैग़ंबर मुहम्मद(स) के संबंध में यह भविष्यवाणी किस प्रकार स्पष्ट है कि वह चाँद जो काला हो चुका था और उसके कारण दुनिया में अंधकार फैल चुका था अर्थात कोई धर्म अपने असल रूप में बाक़ी नहीं था यहाँ तक कि भारत में चाँद को कृष्ण अर्थात काला कहा जाने लगा वास्तव में चाँद काला नहीं होता। वह चाँद सूर्य से प्रकाश लेकर धरती के अंधकार को प्रकाश देता है। जिस प्रकार कृष्ण जी के काल में चाँद काला हो चुका था और पुनः कृष्ण जी ने उसे प्रकाश के रूप में प्रकट किया। इसी प्रकार पैग़ंबर मुहम्मद(स) से पहले दुनिया के सब धर्म बिगड़ चुके थे और समस्त विश्व में अंधकार छा गया था। उसी समय पैग़ंबर मुहम्मद(स) का सूरज हज़ारों किरनों के साथ आगे बढ़ा। वेद कहता है कि यह सूरज का कोई अंत नहीं हैं वह हमेशा हमेशा के लिए हिफ़ाज़त किया गया है। वह बिगुल बजाता हुआ ताक़त के साथ आगे बढ़ा उसने दुनिया को फिर से प्रकाशमान किया परंतु अपनी जीत के समय बहादुर विजयी की तरह अपने हथियार को रख दिया और अपने दुश्मनों को क्षमा कर दिया। फ़तह मक्का में दस हज़ार किरनों वाले सूरज की तरह पैग़ंबर मुहम्मद(स) प्रकट हुए और उसके बाद अपने हथियारों को "ला तस्रिबा अलैकुमुल् यौम्" कहकर रख दिया और अपने सारे दुश्मनों को क्षमा कर दिया। यह एक बड़ी महात्वपूर्ण घटना थी जिसकी भविष्यवाणी वेदों में की गई है।

इस्लाम से पहले अरब का क़ौमी निशान चाँद था। मक्के के दुश्मनों की ताक़त के समाप्त होने का वर्णन जिस सूरह में किया गया है उसका नाम दिव्य क़ुरआन ने "अल-क़मर" रखा है और इसे "इक़तरा बतिस्साअतु वन् शक़्क़ल क़मर" से प्रारंभ किया है अर्थात वादे का समय आ गया और चाँद फट गया या चाँद का दो टुकड़े हो जाना अरब की ताक़त के समाप्त होने का एक निशान था।

इस मंत्र की भविष्यवाणी इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह ऋग्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में भी आई है।

प्रमाण - 23

अनस्वन्ता सत्पतिर्मामहे मे गावा चेतिष्ठो असुरो मघोनः।
त्रैवृष्णो अग्ने दशभिः सहस्रैर्वैश्वानर त्र्यरुणश्चिकेत॥

(ऋग्वेद :- मंडल : 5, सूक्त : 27, मंत्र : 1)

शब्दार्थ :-

अनस्वन्ता = गाड़ियों वाले

मघोनः = बड़े दानी

सत्पतिः = सच्चों के स्वामी

त्रैवृष्णः = ईश्वरीय शक्ति रखने वाले

मामहे = मामहे ने

अग्ने वैश्वानर = अग्नि के समान सब में प्रकाशमान

मे = मुझ पर "कृपा" की

दशभिः = दस

गावा = वाणी के साथ

सहस्रैः = हज़ार के साथ

चेतिष्ठः = अत्यंत बुद्धिमान
त्र्यरूणः = सब गुणों से संपन्न
असुरः = प्राणों में रमते हुए
चिकेत = प्रसिद्ध हो गए।

अनुवाद :- गाड़ियों वाले, सच्चों के स्वामी, अत्यंत बुद्धिमान, बड़े दानी, मामहे(मुहम्मद(स)) ने अपनी वाणी के साथ मुझ पर कृपा की। ईश्वरीय शक्ति रखने वाले सब गुणों से संपन्न, प्राणों में रमते हुए अग्नि के समान प्रकाशमान, दस हज़ार के साथ प्रसिद्ध हो गए।

व्याख्या :- इस मंत्र की भविष्यवाणी का विषय स्पष्ट है :- (1) सच्चों के स्वामी, (2) अत्यंत बुद्धिमान, (3) बड़े दानी, (4) मामहे ऋषि ने अपनी वाणी के साथ मुझ पर कृपा की, (5) ईश्वरीय शक्ति रखने वाला, (6) सब गुणों से संपन्न, (7) प्राणों में रमने वाला, (8) दस हज़ार शिष्यों के साथ प्रसिद्ध हो गया।

इस मंत्र की भविष्यवाणी का प्रत्येक शब्द पैग़ंबर मुहम्मद(स) की सत्यता को प्रकट कर रहा है।

1. सच्चों के स्वामी :- पैग़ंबर मुहम्मद(स) बचपन से सच बोला करते थे इसी कारण अरब के लोग आप(स) को बचपन से ही "सादिक़" कहकर पुकारते थे अर्थात "सच्चा"। आप(स) ने जीवन में कभी झूठ नहीं बोला। यही तर्क था कि आप(स) के पहले सहचर अबूबकर(र) ने यह कहकर ईमान(विश्वास) लाया कि जो व्यक्ति कभी दुनिया में झूठ नहीं बोला वह परमात्मा के बारे में झूठ कैसा कह सकता है ? इस प्रकार पैग़ंबर(स) के शिष्यों ने भी आप(स) पर विश्वास लाने के बाद जीवन भर सत्य ही का पालन किया।

2. अत्यंत बुद्धिमान :- पैग़ंबर मुहम्मद(स) के अत्यंत बुद्धिमान होने के अनेक उदाहरण हमें आप(स) के जीवन चरित्र में मिलते हैं।

पैग़ंबर मुहम्मद(स) के बचपन का वाक़िया है कि ''काबे की मरम्मत के बाद जब संगे अस्वद(काला पत्थर) को रखने का समय आया तो मक्के के सरदार आपस में लड़ने लगे और हर कोई कह रहा था कि वह उस पवित्र पत्थर को काबे की दीवार में रखेगा, जब यह फ़साद ज़्यादा हुआ तो उन सरदारों में तय पाया कि जो दूसरे दिन सुबह हरम में पहले प्रवेश करेगा वह इसका फ़ैसला करेगा। दूसरे दिन सुबह को पैग़ंबर मुहम्मद(स) आते हैं तो लोग कहते हैं कि यह इसका सही फ़ैसला करेंगे। संक्षिप्त में यह कि जब पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने फ़ैसला किया तो हर कोई खुश हो गया। फ़ैसला यह था कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने एक बड़ी चादर मंगवाई और उस संगे अस्वद को अपने हाथों से उठाकर चादर पर रखा और सरदारों से कहा कि सब मिलकर चादर के चारों कोने पकड़ो और उस जगह ले चलो जहाँ पर काबे की दीवार में इस पवित्र पत्थर को लगाना था। जब ये सब सरदार संगे अस्वद को वहाँ लेकर गए तब पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने उस पवित्र पत्थर को उठा कर काबे की दीवार में लगा दिया। इस प्रकार आप(स) ने अत्यंत बुद्धिमान होने का प्रमाण दिया, नहीं तो वहाँ पर उस समय खून की नदियाँ बह सकती थीं।

इसी प्रकार जब मक्के को विजय करना था तब पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने अपने अनुयायों से कहा कि प्रत्येक सहाबी दो दो चूल्हे जलाएँ, उस समय आप(स) के अनुयायी 10,000 की संख्या में थे। इस प्रकार मक्के वालों को पहाड़ पर घेरी हुई सेना के 20,000 चूल्हे नज़र आ रहे थे, उस समय मक्के की जन संख्या 60,090 थी। ये लोग 20,000 चूल्हे देखकर समझे कि अगर एक चूल्हे से पांच सिपाही भी खाए तो 1,00,000 की सेना होगी। इसलिए मक्के के सरदारों ने यह फ़ैसला किया की जंग किये बिना हथियार डाल दें। इस प्रकार पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने अपनी बुद्धि द्वारा हज़ारों को बचा लिया। ऐसी अनेक

घटनाएँ पैग़ंबर मुहम्मद(स) के जीवन में हमे मिलती हैं जिस से हमे पता चलता है कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) अत्यंत बुद्धिमान थे।

3. दानी :- पैग़ंबर मुहम्मद(स) इतने बड़े दानी थे कि कोई चीज धन, दौलत, आदि को घर में जमा कर नहीं रखा। रात होने से पहले ग़रीबों में दान कर देते थे। पैग़ंबर मुहम्मद(स) के दानी होने का सब से बड़ा प्रमाण यह है कि लाखों करोड़ों की दौलत भी आगई तब भी पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने फ़क़ीरी ज़िंदगी नहीं छोड़ी आप(स) के हिस्से में जो कुछ भी धन दौलत आती तो रात होने से पहले ग़रीबों में दान कर देते थे और घर में कुछ भी जमा नहीं रखते थे इसीलिये इतीहास साक्षी है कि जब पैग़ंबर मुहम्मद(स) का देहांत हुआ तो रात के समय आप(स) का पवित्र शरीर अंधेरे में रखा हुआ था तब आप(स) के प्रिय अनुयायी हज़रत अबूबकर सिद्दीक़(र) ने आकर अपनी बेटी आईशा(र) जो कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) की धर्मपत्नी हैं उनसे पूछा कि चिराग़ क्यों नहीं जलाया तब बीबी आईशा(र) ने जवाब दिया कि अब्बा जान चिराग़ में डालने के लिए तेल नहीं है और पैग़ंबर मुहम्मद(स) का देहांत हुआ तो आप(स) के घर में एक हुब्बा(पैसा) भी नहीं था। इस प्रकार अनेक उदाहरण हमको पैग़ंबर मुहम्मद(स) की जीवनी में मिलते हैं।

4. मामहे ऋषि ने अपनी वाणी से मुझ पर कृपा की :- पैग़ंबर मुहम्मद(स) हर ऋषि पर अपनी वाणी द्वारा कृपा करते रहे हैं क्योंकि आप(स) ही को आदि कहा गया, हदीसों में हैं "अनामिन्नूरिल्लाहि व कुल्लु शैइम्मिन्नूरी" अर्थात "मैं अल्लाह के नूर से हूँ और प्रत्येक वस्तु मेरे नूर से है" और एक हदीस में है "अव्वला मा ख़लक़ल्लाहु नूरी" अर्थात "सब से पहले अल्लाह ने मेरे नूर को पैदा किया"। और एक हदीस में आया है कि "कुन्तु नबिय्यिन काना आदमा बैनल माई वत्तीन्" अर्थात "मैं उस समय से नबी हूँ जब की आदम(अलै) पानी और मिट्टी में थे"। इस प्रकार आप(स) ने प्रत्येक ऋषि, मुनि, सूफ़ी, साधू, संतों का मार्ग दर्शन किया है, कर रहे हैं और करते रहेंगे।

आप(स) हादी रहे हर वक़्त नबी मुर्सिल के
रुश्द देने का रहा अज़ली व अबदी ओहदा।

5. ईश्वरीय शक्ति रखने वाले :- पैग़ंबर मुहम्मद(स) के अंदर ईश्वरीय शक्ति होने का सब से बड़ा प्रमाण यह है कि आप(स) ने बिना, सेना, बिना धन दौलत, बिना हुकूमत के केवल 23 वर्षों में अरब से पाप को समाप्त कर के धर्मराज स्थापित कर दिया। इसीलिए Bisworth Smith कहते हैं "Without a Standing Army, without a Bodyguard, without a Fixed Revenue, if any man had the right to say that He ruled by a divine right, it was Mohammad(pbuh) for He had all the power without its Instruments and without its Support" and Leonard said "If ever Man on this earth found God, if ever Man devoted his life to God's service with a good and great motive, it is certain that the Prophet of Arabia was that Man."। इस प्रकार आप(स) के अंदर ईश्वरीय शक्ति का हमें प्रमाण मिलता है और अनेक उदाहरण हमें आप(स) के जीवन चरित्र से मिलते है।

6. सब गुणों से युक्त :- इतिहास साक्षी है कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) के अंदर हर एक गुण था वे पैग़ंबर थे, दानी थे, बलवान, बुद्धिमान, रक्षक, योद्धा, सेनापति, साधू, संत, दयावान, इत्यादि गुण आप(स) के अंदर पाए जाते थे। इसी बात को Prof. Ram Krishna Rao ने अपनी पुस्तक "Mohammad the Prophet of Islam" में लिखा है "What a Dramatic succession of Picturique scenes. There is Mohammad(pbuh) the Prophet, the General, the King, the Warrior, the Business Man, the Preacher, the Philosopher, the Stateman, the Orator, the Reformer, the Refuge of Orphans, the Protector of Slaves and Labourers, the

Emancipator of Woman, the Judge, the Saint and All in all these Magnificient Roles in all these Departments of Human activities, He is like a Hero." इस प्रकार पैग़ंबर मुहम्मद(स) सब गुणों से संपन्न थे। इसीलिए Dr. Michael H Hart ने अपनी पुस्तक The 100 में लिखा है कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) सब गुणों से युक्त थे और इस पुस्तक में लिखा कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) प्रथम श्रेणी में हैं।

7. प्राणों में रमने वाले :- हम को इतिहास में अनेक उदाहरण इस बात के मिलते हैं कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) पर आप(स) के शिष्य अपनी जान निछावर करते थे और आप(स) के शिष्य हमेशा आप(स) से कहते थे कि "हे अल्लाह के सच्चे पैग़ंबर अगर आप हमें अदेश देंगे तो हम समुंद्र में और आग में भी कूदने के लिए तय्यार हैं" और वे जब भी पैग़ंबर मुहम्मद(स) के पास आते तो कहते "फिदाका अमी व अबी या रसूलल्लाह(स)" यानी "हमारे माँ बाप आप(स) पर क़ुरबान ऐ अल्लाह के रसूल(स)" । और कभी कभी ऐसा भी हुआ कि जब पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने नमाज़ के लिए वज़ू(पानी से हाथ, मूह धोना) बनाते तो इतिहास में आता है कि आप(स) के अनुयायी एक बूंद पानी को ज़मीन पर गिरने नहीं देते थे और अपने शरीर पर वह पानी लेकर मल लेते थे। ऐसे अनेक उदाहरण हमें पैग़ंबर मुहम्मद(स) के जीवन चरित्र में मिलते हैं। आज भी मुसलमान पैग़ंबर मुहम्मद(स) को अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय रखते हैं। इस प्रकार आप(स) प्राणों में रमने वाले हैं।

8. दस हज़ार शिष्यों के साथ प्रसिद्ध हो गए :- दस हज़ार शिष्यों के गिरोह के साथ प्रसिद्ध होने वाले केवल पैग़ंबर मुहम्मद(स) ही हैं और यह घटना मक्के पर चढ़ाई के समय की है, आप(स) ने बिना लड़े विजय प्राप्त की थी, उस समय पैग़ंबर मुहम्मद(स) के साथ आप(स) के 10,000 शिष्य भी थे। और यही बात बाइबल

में कही गई "He came with ten thousands of saints". (Deuteronomy 33:2)

निस्संदेह इस मंत्र में एक शब्द "गाड़ी वाला" का वर्णन है। और यह बात हमें पैग़ंबर मुहम्मद(स) के जीवन चरित्र में नहीं मिलती। यही शब्द की व्याख्या ज़रूरी है वह शब्द है "अनस्वन्ता" अर्थात "गाड़ियों वाला"।

हिन्दू धार्मिक ग्रंथों में यह एक सामान्य मुहावरा (कहावत) है, कभी इन्द्र को गाड़ी में बैठने वाला कहा गया है देखो ऋग्वेद – मंडल : 1, सूक्त : 121, मंत्र : 7 कभी इन्द्र के उषा गाड़ी को तोड़ने का वर्णन है देखो ऋग्वेद – 4:30:11, ऋग्वेद – 8:91:7, ऋग्वेद – 10:73:6 कभी सूर्य को गाड़ी पर सवार किया गया है, देखो ऋग्वेद -10:85:10, इत्यादि।

इन प्रमाणों से यह स्पष्ट है कि वेद में यह शब्द बहुत स्थानों पर अवास्तविक, मुहावरे या कहावत (In a Metaphorically Manner) के तौर पर प्रयोग हुआ है। इस का अर्थ यह नहीं है कि शहरों में सामान या इंसान ले जाने वाली गाड़ी बल्कि इसका अर्थ प्रतिष्ठा, गौरव, सम्मान, महान्ता, बुज़ुर्गी, आदि के होते हैं। जैसा हम यह मुहावरा कहते हैं कि "क़ानून के हाथ बहुत लंबे होते हैं" तो यह बात हुकूमत की ताक़त की ओर संकेत करती है।
इस प्रकार मंत्र का प्रत्येक शब्द पैग़ंबर मुहम्मद(स) को ही संबोधित कर रहा है।

प्रमाण - 24

मूर्धानमस्य संसीव्याथर्वा हृदयं च यत्।
मस्तिष्कादूर्ध्वः प्रैरयत् पवमानोधि शीर्षतः ।।
(अथर्ववेद :- काण्ड : 10, सूक्त : 2, मंत्र : 26)

शब्दार्थ :-

मूर्धानम् = सिर को

प्र ऐरयत् = बाहर निकल गया

अस्य = अपने

पवमानः = शुद्धता

संसीव्य = आपस में सीं कर

हृदयं च यत् = जो दिल है उसको भी

अथर्वा = अथर्वा ने

अधि = ऊपर

मस्तिष्कात् = पेशानी से

शीर्षतः = सिर से

ऊर्ध्व = ऊपर।

अनुवाद :- अथर्वा ने अपने सिर और दिल को आपस में सीं लिया और उसके दिमाग़ की बुलंदियों से शुद्धता बाहर निकल रही थी।

व्याख्या :- "अथर्वा" ऋषि जिनका वर्णन इस मंत्र में किया गया है वह वास्तव में इस्माईल(अलैहिस्सलाम) हैं। जिनको मूस्लमान और ईसाई "नबी"(अवतार) मानते हैं।

ब्रह्मा जी और "इब्राहीम(अ)" एक ही व्यक्ति के नाम हैं जिनको ईसाई "अब्राहम" कहते हैं (Brahm, Abraham, Ibrahim are the Names of One Person)। इब्राहीम(अ) को बनी इस्राईल के अबुल अंबिया कहा जाता है अर्थात जितने बनी इस्राईल में नबी आए हैं उन सबके "इब्राहीम(अ)" बाप हैं। इन्हीं के बड़े बेटे "अथर्वा"(इस्माईल(अ)) और छोटे बेटे का नाम "अंगिरा" (इस्हाक़) है और अथर्वा के बेटे का नाम "कैदार" है और कुछ मुसलमान भी

कहते हैं कि इस्माईल(अ) के बेटे का नाम "क़ैदार" है इनकी मूर्ति काशी में है जिसको लोग "केदारनाथ सिंहासन" कहते हैं।

इस मंत्र में बड़े बेटे इस्माईल(अ) की क़ुर्बानी का वर्णन है। यह कुर्बानी वास्तव में बाप-बेटे दोनों की क़ुर्बानी है। बाप की उम्मीदों का सहारा यही एक बुढ़ापे का बेटा था जो 80 साल की आयु में पैदा हुआ था दूसरा बेटा अभी पैदा भी नहीं हुआ था। इस्माईल(अ) को एक स्वप्न की बिना पर क़ुर्बान करने के लिए तैय्यार करना वास्तव में इब्राहीम(अ) का स्वयं अपने गले पर छुरी चलाना था। इस व्याख्या के बाद मंत्र का अर्थ समझना सरल हो जाता है।

दिव्य कुरआन ने इस घटना का वर्णन इस प्रकार किया है "जब दोनों बाप बेटा हमारे आदेश को मान गए और बाप ने अपने बेटे को पेशानी के बल ज़िबह(गला काटना) करने के लिए लिटा दिया तब हमने आवाज़ दी "हे इब्राहीम(अ) तुमने अपने ख़्वाब को सच्चा कर दिखाया, निस्संदेह हम पुण्यवान लोगों को इसी तरह बदला दिया करते हैं" (सूरह साफ़्फ़ात – 37 : 103-105)। घटना यह है कि हज़रत इब्राहीम(अ) ने जब अपने बेटे से कहा "ऐ मेरे प्यारे बेटे मैंने ख़्वाब में देखा है कि मैं तुझे ज़िबह कर रहा हूँ तू भी इस पर ग़ैर कर ले। बेटे ने कहा ऐ मेरे बाप जो कुछ आपने देखा है और जो कुछ आपको परमात्मा की ओर से आदेश मिला है कर दीजिए मुझे भी आप अगर परमात्मा ने चाहा तो सब्र(सहनशील) करने वाला और आज्ञकारी पाऐंगे"।

इस वास्तविकता को वेद ने इस प्रकार कहा है कि "अथर्वा ने अपने सिर और दिल को आपस में सीं लिया और उसके दिमाग़ की बुलंदियों से शुद्धता की भावनाएँ निकल रही थी" अर्थात अपने दिल को अथर्वा ने सिर देने पर राज़ी कर लिया।

इस प्रकार यह मंत्र भी दिव्य कुरआन की सत्यता को प्रकट कर रहा है।

प्रमाण - 25

तद वा आर्विणः शिरो देवकोशः समुब्जितः ।

तत् प्राणो अभि रक्षति शिरो अन्नमथो मनः ।।

(अथर्ववेद :- काण्ड : 10, सूक्त : 2 मंत्र : 27)

शब्दार्थ :-

तत् वा = यह

तत् = उसकी

अथर्वणः = अथर्वा का

प्राणः = आत्माएँ

शिरः = सिर

अभि रक्षति = सब ओर से रक्षा करते हैं

देवकोशः = देवताओं की ठहरने की जगह

शिरः = सिर

समुब्जितः = अच्छी तरह बंद की हुई

अन्नम् = अनाज

अथो = और

मनः = दिल भी।

अनुवाद :- यह अथर्वा का सिर देवताओं की ठहरने की जगह है अच्छी तरह बन्द की हुई। आत्माएँ(फरिश्ते), सिर, अनाज और दिल उसकी सब ओर से रक्षा करते हैं।

व्याख्या :- इब्राहीम(अ) ने जिस स्थान पर क़ुर्बानी की प्रथा पूरी की थी वह जगह अथर्वा(हज़रत इस्माईल) का सिर कहलाती है। वहाँ हमेशा फ़रिश्ते उतरते रहते हैं। वह अच्छी तरह बन्द की हुई है अर्थात कोई दुश्मन उसे पराजित नहीं कर

सकता। उसी को मक्का पुण्यक्षेत्र कहते हैं। आत्माएँ अर्थात फरिश्ते, सिर यानी क़ुर्बानी या अथर्वा(हज़रत इस्माईल) की प्रार्थना, अनाज अर्थात खाने पीने की संपन्नता जिसके लिए इब्राहीम(अ) ने मक्का पुण्य क्षेत्र के लिए प्रार्थना की थी और दिल यानी इब्राहीम(अ) की प्रार्थना उसकी रक्षा करते हैं।

इस मंत्र के अनुवाद में पुराणों का मतलब फ़रिश्ते, सिर अर्थात इस्माईल(अ) और दिल की तुलना हमने इब्राहीम(अ) से की हैं। क्योंकि प्राणों की व्याख्या और वेद की पुस्तकों में अग्नि, वायु इन्द्र, इत्यादि सबको देवताओं के नाम से संबोधित किया गया है देखो जेमिनी उपनिषद, ऐतरेय ब्रह्मण, शतपत ब्रह्मण, इत्यादि। मन अर्थात दिल, की तुलना ब्रह्म जी से की गई है, देखो गोपथ ब्रह्मण।

इस मंत्र में जिन बातों का वर्णन दिया गया है वह ये हैं

1. अथर्वा की कुर्बानी की जगह पर फ़रिश्ते उतरते रहते हैं।
2. वह जगह दुश्मनों के हमले से हमेशा हमेशा महफ़ूज़ है।
3. फ़रिश्ते इस जगह के रक्षक हैं।
4. हज़रत इस्माईल(अ) और हज़रत इब्राहीम(अ) की प्रार्थनाएँ इसकी देख-भाल कर रही हैं। यह बातें दुनिया के केवल एक ही धर्म स्थल को प्राप्त है और कोई धार्मिक तीर्थ स्थल या क़बीला ऐसा नहीं जो दुश्मनों के क़बज़े में न आया हो और परमात्मा की ओर से इसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी ली गई हो।

इस प्रकार इस मंत्र में मक्का पुण्य क्षेत्र की महत्ता बताई गई है।

प्रमाण - 26

ऊर्ध्वो नु सृष्टा ३ स्तिर्यङ्नु सृष्टा ३ स्सर्वा दिशः पुरूष आ बभूवाँ ३।
पुरं यो ब्रह्मणो वेद यस्याः पुरूष उच्यते॥

(अथर्ववेद :- काण्ड : 10, सूक्त : 2, मंत्र : 28)

शब्दार्थ :-

ऊर्ध्वः = ऊँचा

सर्वाः दिशः = सब दिशाओं में

नु = अब

पुरूषः = खुदा

पुरम् = काबे को

आ बभूवाँ = जलवागर है सर्व व्यापक है

याः = जो

ब्राह्मणः = परमात्मा के

सृष्टा ३: = बना हुआ

वेद = जानता है

स्तिर्यङ् = तिरछा

यस्याः = इस वजह से

नु = अब

पुरूषः = खुदा

सृष्टा = बना हुआ

उच्यते = पुकारा जाता है।

अनुवाद :- (काबा) चाहे ऊँचा बना हुआ है चाहे तिरछा बना हुआ है उसकी सब दिशाओं में परमात्मा जलवागर(सर्व व्यापक) है। जो बैतुल्लाह(काबे) को जानता है इस वजह से कि (वहाँ) परमात्मा पुकारा जाता है।

व्याख्या :- काबा पुण्य क्षेत्र बिना किसी सजावट के बिना किसी सुन्दरता के यूँ ही ऊँचा बनाया गया है वह तिरछा बना हुआ है, क्योंकि इसके चारों कोने समान नहीं है, मतलब यह है कि इसमें कोई बनावट की सुन्दरता नहीं है फिर भी ख़ुदा के इस पवित्र स्थल को जो व्यक्ति जानता है कि वहाँ हर तरफ़ ख़ुदा जलवागर है,

वहाँ केवल परमात्मा के और किसी को पुकारा नहीं जाता तो वह व्यक्ति उच्च श्रेणी की आध्यात्मिक पदवी प्राप्त करता है। और यह पुण्य स्थल अपने मानने वालों को चाहे वे आलिम(ज्ञानी) हों, मुजाहिद(धर्म युद्ध करने वाले) हों, व्यापारी हों, या मज़दूर हों, अर्थात ब्रह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र हों सब को एकत्र करता है। यह एक वास्तविकता है कि मुसलमानों का काबा सोने चाँदी की ईंटों से बना हुआ नहीं है और न इसमें कोई बनावटी कमाल है, यूँहि सीधी साधी ऊँची की हुई एक इमारत है जो तिरछी बनी हुई है। एक तरफ़ लंबाई 26 हाथ है तो दूसरी तरफ़ से 25 हाथ और एक ओर से चौड़ाई 22 हाथ है तो दूसरी ओर की चौड़ाई 20 हाथ है।

Cross-section of holy Kaaba.
Copied from: http://www.al-qiyamah.org

यही वह निशान है जिसको वेद ने कहा कि वह तिरछा बना हुआ है इसकी लंबाई और चौड़ाई एक दूसरे से भिन्न हैं परंतु इसकी प्रसिद्धि इस इमारत की सजावट और सुन्दरता से नहीं है बल्कि इस कारण से है कि वहाँ केवल एक परमात्मा की प्रार्थना होती है। इस काबे की वास्तविकता को जो व्यक्ति जानता है वह परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त करता है।

"उच्यते" अर्थात पुकारना, प्रत्येक व्यक्ति जो भी काबा पुण्य स्थल को जाता है तो परमात्मा की स्तुति इस प्रकार पुकारता है

लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक

लब्बैक ला शरीका लका लब्बैक

इन्नल हमदा वन्निअ-मता लका वल मुल्क

ला शरिका लक।

अर्थात:- मैं उपस्थित हूँ, हे परमात्मा परमेश्वर अल्लाह मैं उपसिथत हूँ, मैं उपस्थित हूँ तेरा कोई साझिदार अथवा भागीदार नहीं, मैं उपस्थित हूँ, निस्संदेह स्तुति, नियामतें, बादशाही तेरी ही है, तेरा कोई भागीदार नहीं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस मंत्र में काबा पुण्य स्थल की बनावट का वर्णन स्पष्ट रूप से किया गया है।

प्रमाण - 27

यो वै तां ब्रह्मणो वेदामृतेनावृतां पुरम्।

तस्मै ब्रह्म च ब्राह्माश्च चक्षुः प्राणं प्रजां ददुः ।।

(अथर्व वेद :- काण्ड : 10, सूक्त : 2, मंत्र : 29)

शब्दार्थ :-

यः = जो

ब्रह्म = परमात्मा

वै = भी

च = और

ताम् = उस

ब्रह्माः = ब्रह्मा

ब्रह्मणः = परमात्मा के

च = भी

वेद = जानता है

चक्षुः = दृष्टि

अमृतेन = जीवन से

प्राणम् = ज़िन्दगी

आवृताम् = भरे हुए

प्रजाम् = संतान

पुरम़ = काबे को

ददुः = प्रदान करते हैं

तस्मै = उसको।

अनुवाद :- जो भी व्यक्ति जीवन से भरे हुए उस परमात्मा के पुण्य स्थल काबे को जानता है, उसको परमात्मा और (परमात्मा के पैग़म्बर) दृष्टि, ज़िन्दगी और संतान प्रदान करते हैं।

व्याख्या :- जैसा कि आप जानते हैं अथर्ववेद काण्ड : 10, सूक्त : 2 में कई स्थानों पर मक्का पुण्य क्षेत्र और काबा पुण्य स्थल का वर्णन किया गया था कि वह अजय है और कोई भी दुश्मन उसे पराजित नहीं कर सकता और वह स्थल खान-पान और सुख-शान्ति से संपन्न होगा और वह तिरछा होने के बावजूद सारे विश्व में प्रसिद्धि पाएगा और वह मक्का पुण्म क्षेत्र देवताओं की बस्ती है और वहाँ फरिश्ते उतरते रहते हैं वही अयोध्या है जहाँ युद्ध को निषेध किया गया है और वह स्वर्ग के समान है, इत्यादि।

अब इस मंत्र में बताया गया है कि वह पुण्य स्थल जीवन से भरा हुआ है अर्थात काबा पुण्म स्थल रूहानियत का सरचश्मा अर्थात आध्यात्मवाद का स्रोत है। जो

भी व्यक्ति इस पुण्य स्थल का आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करता है उसको परमात्मा दृष्टि, ज़िन्दगी और संतान प्रदान कहते हैं।

दृष्टि :- अर्थात दिव्य दृष्टि को पाना है। जिस प्रकार पैग़म्बर मुहम्मद(स) कहते हैं कि मैं जिस प्रकार सामने देखता हूँ उसी प्रकार पीछे भी देखता हूँ। पैग़म्बर मुहम्मद(स) किसी भी व्यक्ति को देखकर बता देने थे कि यह व्यक्ति क्या कर के आया है और अब आगे कया करेगा। इसी प्रकार आप(स) ने अपने शिष्यों को भी दिव्य दृष्टि प्रदान की थी। दृष्टि को पाना वास्तव में भूत, वर्तमान और भविष्य का जानना होता है।

ज़िन्दगी :- यह एक आध्यात्मिक जीवन है। पैग़ंबर मुहम्मद(स) कहते हैं कि मुरदों में अर्थात मृत्यु पाने वाले लोगों में सब से पहले जीवन प्राप्त करने वाले अबूबकर सिद्दीक़(र) हैं जो पैग़ंबर मुहम्मद(स) के सबसे पहले अनुयायी हैं। ज़िन्दगी का प्रदान होना अर्थात मनुष्य को मोक्ष, सुख और अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त होना है। और कुरआन में भी सूरह अनफ़ाल में कहा गया है या "ऐ लोगो जो ईमान लाए हो जब पैग़ंबर मुहम्मद(स) तुमको बुलाए तो तुरंत जाओ वह तुम्हें जीवन प्रदान करने के लिए बुलाते हैं"।

संतान :- संतान प्राप्त होना अर्थात पैग़ंबर मुहम्मद(स) के लक्ष्य को ले चलने वाले आप(स) के साथ हो जाना है। निस्संदेह जब पैग़ंबर मुहम्मद(स) के लड़कों की मृत्यु पर मक्के के दुश्मन कहने लगे की अब पैग़ंबर मुहम्मद(स) का धर्म समाप्त हो जाएगा कयोंकि आपकी संतान जो मर्द बच्चे थे उनका बचपन में ही देहांत हो गया था। परंतु परमात्मा कुरआन में फरमाता है सूरह कौसर में कि "इन्ना आतैना कल कौसर" यानी "निस्सेदेह हमने आपको कौसर अर्थात आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान किया है" जिसके द्वारा आप(स) के अनुयायी आप(स) की आध्यात्मिक संतान बन कर आप(स) के कार्य को ले चलेंगे। "इन्ना शानियाका हुवल अबतर" अर्थात निस्संदेह पैग़ंबर(स) के दुश्मन ही बे औलाद अर्थात निस्संतान हो जाएँगे।

इतिहास साक्षी है कि दुश्मनों की संतान ने अल्लाह परमेश्वर पर विश्वास लाकर पैग़ंबर मुहम्मद(स) की आध्यात्मिक संतान बन गए। इस प्रकार आज सारे विश्व में मुहम्मद पैग़ंबर मुहम्मद(स) की अध्यात्मिक संतान 2 अरब के निकट संख्या में हैं जो पैग़ंबर मुहम्मद(स) के उद्देश्य और लक्ष्य पर दृष्टि रखकर उसको पूरा करने के लिए उनकी आध्यात्मिक संतान बन कर जीवन बिता रहे हैं।

इस प्रकार इस मंत्र में भी हरम(काबा पुण्य स्थल) की प्रशंसा की गई है।

प्रमाण - 28

न वै तं चक्षुर्जहाति न प्राणो जरसः पुरा।
पुरं यो ब्रह्मणो वेद यस्याः पुरूष उच्यते ।।
(अथर्ववेद :- काण्ड : 10, सूक्त : 2, मंत्र : 30)

शब्दार्थ :-

न = ना

पुरा = पहले

वै = ही

पुरम् = काबे को

तम् = उस

न = जो

चक्षुः = दृष्टि

ब्रह्मणः = परमात्मा के

यः = जो मनुष्य

जहाति = छोड़ती है

वेद = जानता है

यस्याः = जिस वजह से

प्राणः = ज़िन्दगी

पुरूषः = खुदा

जरसः = बुढ़ापे से

उच्यते = पुकारा जाता है।

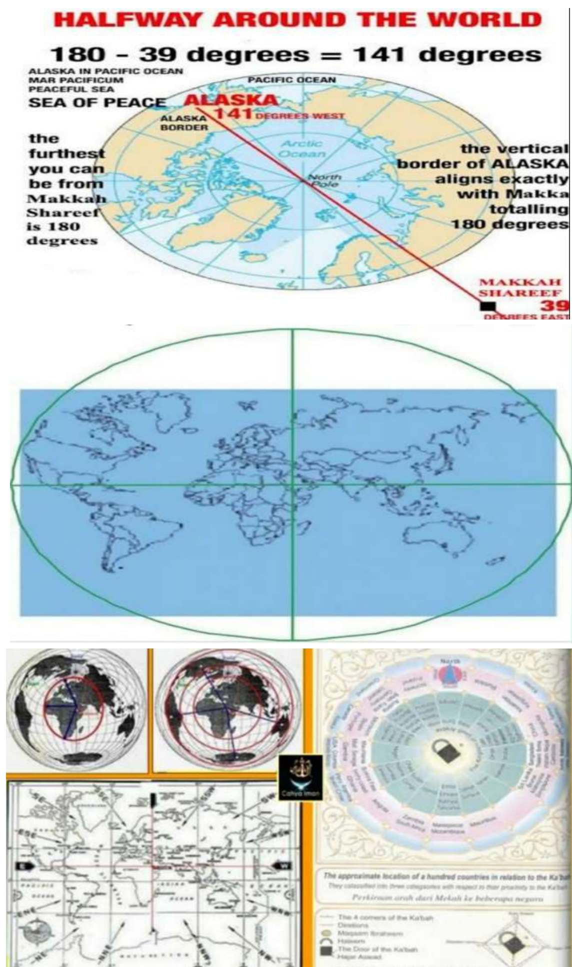
अनुवाद :- उसको दृष्टि(आध्यात्मिक ज्ञान) और प्राण(आध्यात्मिक उन्नति) बुढ़ापे से पहले नहीं छोड़ते, जो परमात्मा के इस पुण्य स्थल(काबा) को जानता है। क्योंकि वहाँ परमात्मा पुकारा जाता है।

व्याख्या :- जो व्यक्ति काबा पुण्य स्थल की वास्तविकता को जान लेता है तो फिर उम्र भर उसका आध्यात्मिक ज्ञान और आध्यात्मिक उन्नति कम नहीं होती बल्कि बढ़ती ही जाती है। काबा पुण्य स्थल वास्तव में एकेश्वरवाद का बहुत बड़ा केंद्र है। काबा पुण्य स्थल की वास्तविकता यह है कि वह दुनिया का सबसे प्रथम तीर्थ स्थल है। काबे के बारे में दिव्य कुरआन सूरह आले इमरान आयत : 96 में इस तरह कहा गया है "इन ना अव्वला बैतिंव्वुज़िया लिन्नासि लल्लज़ी बिबक्कता मुबारकंव् व हुदल्लिल आलमीन" अर्थात "निस्संदेह इबादत के लिए पहला घर जो मानव के लिए बनाया गया वही है जो मक्का में है, बरकत वाला और सर्वथा मार्गदर्शक समस्त संसार के लिए है" और आगे की आयत में अल्लाह तआला फरमाता है "फ़ीही आयातुम बैय्यिनातुम मक़ामु इब्राहीम वमन दख़लहू काना आमिना" अर्थात "उसमें स्पष्ट निशानियाँ हैं, वह इब्राहीम का स्थल है और जिसने उसमें प्रवेश किया उसने शान्ति प्राप्त करली"।

और काबा पुण्य स्थल अपने मानने वालों में से भेद-भाव, ऊँच-नीच को समाप्त करके सब लोगों में समानता स्थापित कर के सब को एकत्र करता है।

मुसलमान काबे की ओर अपना मूह कर के नमाज़(प्रार्थना) पढ़ते हैं परंतु वे यह नहीं कहते कि काबा हमारे लिए परमात्मा या परमेश्वर है। काबा मुसलमानों

को एकत्र करने का एक केंद्र है और जो भी वहाँ हज के लिए जाते हैं तो सब एक ही तरह के कपड़े अर्थात दो सफ़ेद कपड़े बिना सिये हुए जिसे "अहराम" कहते हैं वह पहनते हैं जिसके कारण अमीर गरीब - गोरा काला, बादशाह - ग़ुलाम, इत्यादि सब समान नज़र आते हैं। यही वह दुनिया का सब से बड़ा पुण्य स्थल है जहाँ एकेश्वरवाद की शिक्षा दी जाती है और यही आध्यात्मवाद का स्रोत है और सारे विश्व का नाभी स्थान अर्थात दुनिया का मध्यस्थल (Centre) है यह बात सारी दुनिया मान चुकी है कि काबा पुण्य स्थल दुनिया के बीचो बीच है।



इस प्रकार जो भी व्यक्ति काबा पुण्य स्थल की वास्तविकता को जान लेता है तो फिर उम्र भर उसका आध्यत्मिक ज्ञान और उसकी आध्यात्मिक उन्नति कम नहीं होती और बढ़ती जाती है। यही वास्तविकता इस मंत्र में प्रकट की गई है।

और अंत में इस मंत्र में एक शब्द "उच्यते" आया है जिसका अर्थ होता है पुकारा जाना अर्थात काबा पुण्य स्थल में उस परमात्मा को ही पुकारा जाता है। वहाँ केवल परमात्मा को ही पुकारा जाता है इसके लिए आप हमारा S.N. 26 का मंत्र देखें। जो भी व्यक्ति हज या उमरा अर्थात काबा पुण्य स्थल को जाता है वह केवल परमात्मा को ही ऊँचे स्वर में पुकारता है। वह स्तुति यह है :

लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक
लब्बैक ला शरीका लका लब्बैक
इन्नल हमदा वन्निअ-मता लका वल मुल्क
ला शरिका लक।

अर्थात :- मैं उपस्थित हूँ, हे अल्लाह(परमात्मा) मैं उपसिथत हूँ, मैं उपस्थित हूँ तेरा कोई साझिदार अथवा भागीदार नहीं, मैं उपस्थित हूँ, निस्संदेह स्तुति, नियामतें, बादशाही तेरी ही है, तेरा कोई भागीदार (Partner) नहीं।

इस प्रकार इस मंत्र में भी काबा पुण्य स्थल का गौरव, महत्ता और प्रशंसा का वर्णन किया गया है।

प्रमाण - 29

तस्मिन् हिरण्यये कोशे त्र्यरे त्रिप्रतिष्ठिते।

तस्मित् यद् यक्षमात्मन्वत् तद् वै ब्रह्मविदो विदुः ।।

(अथर्ववेद :- काण्ड : 10, सूक्त : 2, मंत्र : 32)

शब्दार्थ :-

तस्मिन् = उस

यक्षम् = पूजनीय

हिरण्यये = न खत्म होने वाली ज़िन्दगी

आत्मन्वत् = आत्मा वाला {परब्रह्म} है,

कोशे = खज़ाना है

तत् = उसे

त्र्यरे = तीन आड़ी लकड़ियों वाले में

त्रिप्रतिष्ठिते = तीन स्तंभ वाले में

तस्मिन् = उसमें

वै = ज़रूर

यत् = जो

ब्रह्मविदः = ब्रह्मज्ञानी लोग

विदुः = जानते हैं।

अनुवाद :- उस तीन आड़ी लकड़ियों वाले, तीन स्तंभ वाले में, कभी न खत्म होने वाली ज़िन्दगी का केंद्र और खज़ाना है उसमें जो पूजनीय परब्रह्म है उसको ज़रूर ब्रह्मज्ञानी लोग जानते हैं।

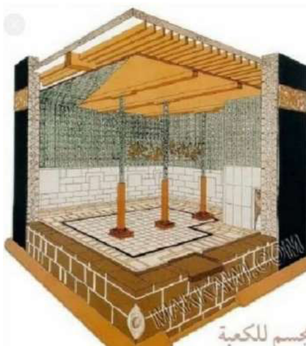
व्याख्या :- हमने देखा कि अथर्ववेद काण्ड : 10, सूक्त : 2, मंत्र : 26, से लेकर 30 तक काबा पुण्य स्थय का ही वर्णन है और 31 वें मंत्र में भी काबे का वर्णन है

जिसको हमने हमारे S.N. : 15 के मंत्र में स्पष्टिकरण कर दिया है। अब इस 32 वें मंत्र में भी काबा पुण्य स्थल की भविष्यवाणी और उसकी बनावट का वर्णन किया गया है।

इस मंत्र में यह बताया गया है कि वह पुण्य स्थल काबा एक सीधी साधी इमारत है जिस में कोई मूर्ति नहीं है। वह तीन स्तंभों पर तीन आड़ी लकड़ियाँ डाल कर बनाई गई है। इस सादगी के बावजूद यह काबा पुण्य स्थल कभी न खत्म होने वाली ज़िन्दगी का केंद्र और ख़ज़ाना है। इसमें जो पूजनीय है वह परमात्मा परब्रह्म है, जिसको ब्रह्मज्ञानी जानते हैं।









मंत्र का मतलब यह है कि स्तंभ, लकड़ियाँ और ईंट, पत्थर यह कोई पूजनीय चीज़ें नहीं हैं पूजनीय केवल परमात्मा है। दुनिया में एकेश्वरवाद के प्रचार के लिए यह सब से प्राचीन तीर्थ स्थल मौजूद है। इस मंत्र में एक बात यह बताई गई है कि यह कभी न खत्म होने वाली ज़िन्दगी का केंद्र है अर्थात परमात्मा में लीन हो कर शाश्वत जीवन प्राप्त कर लेना है।

और ख़ज़ाना अर्थात आध्यात्मिक ख़ज़ाना है जो व्यक्ति काबा पुण्य स्थल को जान लेता है तो फिर वह एकेश्वरवाद में अपना जीवन बिता देता है। वह खज़ाना वास्तव में आध्यात्मिक ज्ञान अर्थात दिव्य कुरआन है जिसमें (1) एकोजगदीश्वरः, (2) एकोजगतगुरू, (3) सर्व अवतार सत्यः, (4) सर्व धर्म ग्रंथ सत्यः, (5) सम्मेल प्रार्थना है अर्थात एक ही परमात्मा की प्रार्थना, एक ही जगतगुरू पर विश्वास रखना, सारे नबी और अवतारों को सच्चा जानना, सब धर्म ग्रंथों पर विश्वास लाना और सब मिलकर एक सम्मेल प्रार्थना करना। यही इस दिव्य ग्रंथ कुरआन के मूल सिद्धातं हैं यही वह सज़ाना है जिसको प्राप्त करने के बाद मनुष्य धन्य हो जाता है।

काबा पुण्य स्थल का संबंध स्वयं परमात्मा से है। यह बात ब्रह्मज्ञानि लोग जानते है और काबा पुण्य स्थल एकेश्वरवाद का केंद्र तथा आध्यात्मिवाद का स्रोत है और समस्त विश्व को एकत्र करने वाला तीर्थ स्थल है। जो व्यक्ति काबा पुण्य स्थल की इस वास्तविकता को जान लेता है तो फिर वह ब्रह्मज्ञानी कहलाता है और वह परब्रह्म परमात्मा परमेश्वर अर्थात अल्लाह को जानकर उसी की प्रार्थना करता है किसी और की नहीं करता।

इस प्रकार इस मंत्र में भी पैग़ंबर(स) के काबा पुण्य स्थल की भविष्यवाणी और गौरव का वर्णन किया गया हैं।

प्रमाण - 30

प्रभ्राजमानां हरिणीं यशसा संपरीवृताम् ।

पुरं हिरण्ययीं ब्रह्मा विवेशापराजिताम् ।।

(अथर्ववेद :- काण्ड : 10, सूक्त : 2, मंत्र : 33)

शब्दार्थ :-

प्रभ्राजमानां = प्रकाशमान

हरिणीम् = दुःख नाशक

हिरण्ययीम् = अनेक बलों से युक्त

अपराजिताम् = कभी न पराजित होने वाली

यशसा = प्रशंसनीय

विवेश = प्रवेश किया है

संपरिवृताम् = घिरी हुई

ब्रह्मा = इब्राहीम

पूरम् = बस्ती में ।

अनुवाद :- प्रकाशमान, दुःखनाशक, प्रशंसनीय, इन सब गुणों से भरी हुई बस्ती जो अनेक बलों से युक्त और कभी न पराजित होने वाली, उसमें ब्रह्मा (इब्राहीम(अ)) ने प्रवेश किया है ।

व्याख्या :- इस मंत्र में काबा पुण्य स्थल की प्रशंसा करते हुए बताया गया है कि वहाँ ब्रह्म ऋषि अर्थात इब्राहीम(अ) ने कुछ दिन निवास किया था ।

इस मंत्र में काबा पुण्य स्थल की पाँच विशेषताएँ बताई गईं हैं अर्थात काबे को प्रकाशमान, दुःखनाशक, प्रशंसनीय, अनेक बलों से युक्त और कभी न पराजित होने वाला बताया गया है ।

(1) प्रकाशमान इस तरह है कि वह भौतिक और आध्यात्मिक रूप से प्रकाशमान है अर्थात अगर आप काबा पुण्य स्थल के Satellite Images देखेंगे तो ब्रह्मांड में केवल मक्का मदीना पुण्य स्थल ही प्रकाशमान नज़र आएँगे, और आध्यात्मिक रूप से भी इसी पुण्य स्थल द्वारा आध्यात्मिक प्रकाश अर्थात अवलियल्लाह(ऋषि, मुनी) पैदा हो रहे हैं अर्थात यह पुण्य स्थल मनुष्य को पापों के अंधकार से निकाल कर पुण्य के प्रकाश की ओर लाता है। अगर हम एक एक विशेषता को विस्तार से वर्णन करें तो मैं समझता हूँ कि एक बड़ा पुस्तकालय(Library) बन जाएगा इसीलिए आपको संक्षिप्त में बताया जारहा हैं।

(2) दुःखनाशक अर्थात दुःखों को ख़त्म करने वाला, काबा पुण्य स्थल की एक विशेषता यह भी है कि वह अपने मानने वालों को एक ही धागे में पुरो कर समानता स्थापित कर के दुःखों का नाश कर देता है।

(3) प्रशंसनीय अर्थात समस्त विश्व में जिसकी तारीफ़ हो, आज सारे विश्व में काबा पुण्य स्थल की प्रशंसा है कयोकि यही एक पुण्य स्थल है जो भेद-भाव, ऊँच-नीच, अमीर-ग़रीब, गोरा-काला, बादशाह-ग़ुलाम सब को एक कर देता है इसीलिए वह प्रशंसा के योग्य है।

(4) अनेक बलों से युक्त अर्थात हर प्रकार की शक्ति रखने वाला, भौतिक और आध्यत्मिक। भौतिक शक्ति यह कि क़ुरआन में सूरह आले इमरान में मक्का पुण्यक्षेत्र को "बक्का" भी कहा गया है जिसका अर्थ है दुश्मन को खुद नाश करने की शक्ति रखने वाला अथव दुश्मन की गर्दन मोड़ने वाला। जैसे की हमने इतिहास में देखा है कि जब अबराहा जो यमन का गवर्नर था काबा पुण्य स्थल को तोड़ने के लिए बहुत बड़ी सेना लेकर आया था यह सेना बिना किसी इंसान की मदद के नाश हो गई और आध्यात्मिक शक्ति अर्थात फ़रिश्ते वहाँ उतरते रहते हैं और ईश्वरीय शक्ति उसको घेरे हुए है।

(5) अपराजिताम् अर्थात कभी न पराजित होने वाला। काबा पुण्य स्थल की एक विशेषता यह भी बताई गई है कि वह अजय है कोई भी दुश्मन उस पुण्य स्थल को पराजित कर के अपने क़ब्ज़े में नहीं ले सकता । आज साढ़े चौदाह सौ वर्ष(1450) हो चुके हैं यह पुण्य स्थल अपराजिताम् की गवाहि दे रहा है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अथर्ववेद काण्ड : 10, सूक्त : 2 के मंत्रों में काबा पुण्य स्थल की भविष्यवाणी, उसकी प्रशंसा, महत्ता और श्रेष्ठता का विस्तार से वर्णन किया गया है।

आइये इन मंत्रों का सारांश देखते हैं

(1) अथर्ववेद 10:2:26 में बताया गया है कि काबा पुण्य स्थल एक अज़ीमुश्शान क़ुर्बानी की यादगार है। इसके लिए आप हमारा S.No. 24 का मंत्र देख सकते हैं।

(2) अथर्ववेद 10:2:27 में बताया गया है कि वह पुण्य स्थल हमेशा हमेशा दुश्मनों के हमलों से महफ़ूज़ रहेगा। रेगिस्तान (Desert) होने के बावजूद वहाँ के रहने वालों को अनाज और फलों की कभी कमी नहीं होगी। इसके लिए आप हमारा S.No. 25 का मंत्र देख सकते हैं।

(3) इसी सूक्त के 28 वें मंत्र में बताया गया है कि काबा तिरछा बना हुआ है लंबाई और चौडाई की कोई दीवार एक दूसरे के बराबर नहीं। इसके लिए आप हमारा S.No. 26 का मंत्र देख सकते हैं।

(4) इसी सूक्त के 29 वें मंत्र में बताया गया है कि एकेश्वरवाद अर्थात केवल एक परमात्मा की प्रार्थना ही के कारण वहाँ आध्यात्मिक जीवन और ब्रह्मज्ञान प्राप्त होता है। इसके लिए आप हमारा S.No. 27 का मंत्र देख सकते हैं।

(5) इसी सूक्त के 30 वें मंत्र में बताया गया है कि जो व्यक्ति काबा पुण्य स्थल की वास्तविकता को जान लेता है तो फिर उसका आध्यात्मिक ज्ञान और

आध्यात्मिक उन्नति कभी कम नहीं होती बल्कि बढ़ती ही जाती है। इसके लिए आप हमारा S. No. 28 का मंत्र देख सकते हैं।

(6) इसी सूक्त के 31 वें मंत्र में बताया गया है कि उस पुण्य स्थल के 8 चक्र और 9 दरवाज़े हैं। इसके लिए आप हमारा S.No. 15 का मंत्र देख सकते हैं।

(7) इसी सूक्त के 32 वें मंत्र में बताया गया है कि उसके अन्दर तीन स्तंभ और उन पर तीन आड़ी लकड़ियाँ हैं इसके लिए आप हमारा S. No. 29 का मंत्र देख सकते हैं।

(8) इसी सूक्त के 33 वें मंत्र में बताया गया है कि वह काबा पुण्य स्थल प्रकाशमान, दुखनाशक, प्रशंसनीय, अनेक बलों से युक्त और कभी न पराजित होने वाला है जिसमें हज़रत इब्राहीम(अ) ने कुछ दिन निवास किया था। इस मंत्र का वर्णन हमने इसी मंत्र के प्रारंभ में कर दिया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है और उसमें अंतिम ऋषि पैग़ंबर मुहम्मद(स) की, आप(स) के शिष्यों की, आप(स) की दिव्य ग्रंथ कुरआन की और आप(स) के पुण्य स्थल काबे की भविष्यवाणियों का वर्णन है। अल्लाह तआला दिव्य कुरआन सूरह रअद : 43 में फ़रमाता है काफ़िर संदेह करते हैं कि आप(स) अल्लाह के पैग़ंबर नहीं, उन्हें जवाब दो मेरे और तुम्हारे बीच फैसला करने के लिए अल्लाह और जिस किसी के पास किताब का ज्ञान है उसकी गवाही काफ़ी हैं।

प्रमाण - 31

एतस्मिन्नन्तेर म्लेच्छ आचार्य्येण समन्वितः।
महामद इति ख्यातः शिष्यशाखा समन्वितः॥

(भविष्य पुराण :- प्रतिसर्ग पर्व : 3, काण्ड : 3, अध्याय : 3, श्लोक : 5)

शब्दार्थ :-

एतस्मिन्नन्तरे = इतने ही में

म्लेच्छ = दूसरी भाषा या दूसरे देश का

आचार्य्येण समन्वितः = आध्यात्मिक शिक्षक की उपाधि वाला

महामद इति ख्यातः = मुहम्मद नाम है प्रसिद्ध

शिष्यशाखा = शिष्यों के

समन्वितः = साथ आयेगा।

अनुवाद :- इतने में एक म्लेच्छ या दूसरे देश और दूसरी भाषा का आध्यात्मिक शिक्षक, अपने शिष्यों के साथ आएगा उनका नाम "मुहम्मद" होगा।

व्याख्या :- हिन्दु धार्मिक ग्रंथों में वेद 4 हैं, उपनिषद 108 हैं, गीता 2, पुराण 28 और 6 शास्त्र हैं।

वेदों के वरसेस(Verses) को "मंत्र" कहते हैं उसके अतिरिक्त उपनिषद, पुराण और गीता के वरसेस को "श्लोक" कहते हैं। भविष्य पुराण के इस श्लोक में भी पैग़ंबर मुहम्मद(स) की भविष्यवाणी की गई है और श्लोक में शब्द "म्लेच्छ" आया है जो बज़ाहेर बुरा अर्थ रखता है परंतु इस शब्द की प्रशंसा भी महर्षि व्यास जी ने स्वयं की है आप कहते हैं "पुण्य कार्य और तेज़ बुद्धि और आध्यात्मिक महत्ता और देवताओं का सम्मान, यह कार्य जो व्यक्ति करता है इसको "बुद्धिमान म्लेच्छ" कहते हैं" । यह सब विशेषताएँ पैग़ंबर मुहम्मद(स) में थीं इसके लिए आप हमारा S.No. 23 का मंत्र देख सकते हैं और म्लेच्छ का अर्थ "अन्य भाषा अन्य देश वाले" के भी होता है।

महर्षि व्यास जी ने ही इन पुराणों को 18 भागों में विभाजित किया है। बहुत सारे हिन्दुओं की यह मान्यता है कि वेदों में पुराणों के सत्य होने का वर्णन है और छान्दोग्य उपनिषद :- प्रफाटक : 7 काण्ड : 1 और 2, में भी पुराणों का

वर्णन है। इस से यह स्पष्ट होता है कि पुराण भी दिव्यवाणी हैं जो वेदों के समान प्रभावशाली है।

इस श्लोक में पैग़ंबर मुहम्मद(स) को म्लेच्छ के साथ "आचार्य" भी कहा गया है अर्थात शिक्षक जो अपने शिष्यों को आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करता है। अगर हम इस श्लोक में म्लेच्छ का अर्थ बुरा व्यक्ति लेंगे तो फिर एक बुरा व्यक्ति आचार्य अर्थात अध्यात्मिक शिक्षक कैसे हो सकता है ? यहाँ पर म्लेच्छ का अर्थ दूसरे देश या दूसरी भाषा का व्यक्ति होता है क्योंकि पैग़ंबर मुहम्मद(स) अरब देश में अरबी भाषा बोलने वाले थे और आपने ही अपने शिष्यों को आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान की।

इतिहास साक्षी है कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने अपने शिष्यों को ऐसी शिक्षा दी जिससे वे लोग इह लोक और परलोक में श्रेष्ठ और प्रशंसनीय हो गए और पैग़ंबर मुहम्मद(स) के शिष्य उन पर अपनी जान निछावर करने के लिए हर समय तय्यार रहते थे।

और इस श्लोक में मुहम्मद(स) का नाम "महामद" स्पष्ट रूप से वर्णित है क्योंकि "मुहम्मद" शब्द अरबी भाषा का है इसीलिए थोड़े से अंतर के साथ इस श्लोक में "महामद" बताया गया है और इस "मुहम्मद" शब्द का अर्थ होता है "नराशंस" अर्थात "वह नर जिसकी प्रशंसा की गई" और नराशंस शब्द अथर्ववेद काण्ड : 20, सूक्त : 127, और मंत्र 1 में और दूसरे वेदों में भी कई जगहों पर आया है इसके लिए आप हमारा S.No. 1 का मंत्र देख सकते हैं।

और व्यासोपनिषद में भी पैग़ंबर मुहम्मद(स) का नाम कई जगह आया है

"ये मानवा विगत रागा परावरग्याः
मोहम्मदं धर्मगुरू सततं स्मरांती
ध्यानेन तेन हत कल्मष्म चेतनास्ते
मातु पयो धर रसम न पुनः पिवंती" ।।

अर्थात : जो मानव क्रोध की बुराई छोड़कर और सबसे मूह मोड़कर धर्म के गुरू "पैग़ंबर मुहम्मद(स)" को हर दम याद करता है तो इस ध्यान से उसके जान का अंधेरा दूर होता है उसको न पुनर्जन्म होगा और न वह दुबारा माँ का दूध पियेगा।

और एक स्थान पर श्री वेदव्यास जी फ़रमाते हैं

"इदं जगतः जतः जतयामी
तद मोहम्मदेती प्रतीपादयतं" ।।

अर्थात : यह जगत जहाँ से पैदा हुआ है और वह पाला जारहा है और जहाँ फ़ना(नष्ट) हो रहा है उस मुक़ाम का नाम "मुहम्मद(स)" है।

इसी प्रकार "तैत्रा उपनिषद" में कहा गया है

"अधध्यते तीच भूतानी तस्तादन्नं तदुच्यते
अहमन्नं महमन्नं अहमन्नादो महमन्नादो अहमन्नादः" ।।

अर्थात : प्रारंभ में जिस विभूति से यह ब्रह्मांड बना और जिससे उसका पुनरागमन(इयादा) हो रहा है उसका नाम 'अहमद' और 'मुहम्मद' है वह अपने साथ हर वस्तु के पालन का सामान रखता है।

इस प्रकार भविष्य पराण के इस श्लोक में अंतिम ऋषि नराशंस मुहम्मद पैग़ंबर(स) की भविष्यवाणी देते हुए यह बताया गया है कि वह हमारे भारत देश में प्रकट नहीं होंगे बल्कि म्लेच्छ अर्थात दूसरे देश में प्रकट होंगे और आप(स) आध्यात्मिक शिक्षक होंगे और आप(स) अपने शिष्यों के साथ आएँगे, जो पैग़ंबर(स) की आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद विश्व के सर्वश्रेष्ट और सर्वोत्तम व्यक्ति बन गए, इसकी अधिक जानकारी के लिए आप हमारा S.No. 2 का मंत्र देख सकते हैं।

प्रमाण - 32

नृपश्चैव महादेवं मरुस्थलनिवासिनम् ।

गंगाजलैश्च संस्नाप्य पञ्चगव्यसमन्वितैः ।

चंदनादिभिरभ्यर्च्य तुष्टाव मनसा हरम् ।।

(भविष्य पुराण :- प्रतिसर्ग पर्व : 3, काण्ड : 3, अ : 3, श्लोक : 6)

शब्दार्थ :-

नृपश्चैव = राजा ने

महादेवं = इस महादेव

मरुस्थलनिवासिनम् = अरब के रहने वाले को

गंगाजलैश्च = गंगा के पानी

पञ्चगव्यसमन्वितैः = और पंच गव्य के मिश्रण से

संस्नाप्य = स्नान कराके

चंदनादिभिः = चंदन या संदल आदि के साथ

अभ्यर्च्य = भेंट या चढ़ावा प्रस्तुत कर के

तुष्टाव मनसा हरम् = दिल की इच्छा से उनकी पूजा की।

अनुवाद :- राजा(भोज) ने महादेव अर्थात देवगुण रखने वाले अरब के रहने वाले को गंगा के पानी और पंच गव्य के मिश्रण से स्नान करा कर (अर्थात सारे कलंकों से दूर करा कर) दिल की इच्छा से भेंट या चढ़ावा प्रस्तुत कर के उनका सम्मान किया।

व्याख्या :- जैसा कि आप जानते हैं इसी भविष्य पुराण के प्रतिसर्ग पर्व : 3, काण्ड : 3, अध्याय : 3, और श्लोक : 5, में अंतिम ऋषि मुहम्मद(स) की स्पष्ट रूप से भविष्यवाणी दी गई है। पैग़ंबर मुहम्मद(स) को म्लेच्छ अर्थात दूसरे देश और दूसरी भाषा बोलने वाले कह कर आचार्य भी कहा गया अर्थात आध्यात्मिक

शिक्षा प्रदान करने वाले और साथ ही आप(स) का नाम “महामद” होगा बताया गया है तथा आप(स) की अपने शिष्यों के साथ आगमन की भविष्यवाणी भी दी गई थी।

अब इस श्लोक : 6 में राजा भोज के द्वारा पैग़ंबर मुहम्मद(स) का सम्मान करने का वर्णन है।

(1) राजा भोज भारत देश में एक नहीं हुए। फ़िरऔन और क़ैसर की तरह भोज भारत के राजाओं की उपाधि थी। इस नाम से प्रसिद्ध राजा भोज से पहले भी बहुत राजा हुए हैं इसलिए "ऐतरेय ब्रह्मण" जो बहुत प्राचीन काल की ग्रंथ है उसकी पंचिका : 8, खाण्ड : 12 और पंचिका : 14, खाण्ड : 17, में भी राजा भोज का वर्णन है, पाणिनि जो प्रसिद्ध संस्कृत ग्रामर(व्याकरण) के लेखक हैं और इस्लाम से बहुत पहले गुज़रे हैं, उस पुस्तक में भोज के शहर और उसकी संतान का वर्णन है।

(2) और इस श्लोक में पैग़ंबर मुहम्मद(स) को महादेव कहा गया है अर्थात देवों के देव, हम जानते हैं कि आप(स) के शिष्य अपने अंदर देवगुण रखते थे और वे दुनिया में सर्वश्रेष्ट और सर्वोत्तम कहलाए। इसलिए ऐसे शिष्य जो देवगुणों से संपन्न हैं तो फिर उनके गुरू को महादेव कहना अनुचित न होगा।

(3) और इस श्लोक में पैग़म्बर मुहम्मद(स) को "मरूस्थल निवासिनम" बताया गया है अर्थात रेगिस्तान में रहने वाले। हम जानते हैं कि वह अरब देश है जहाँ रेगिस्तान है और भी बहुत सारे प्रमाण हैं जिनके कारण हम मरूस्थल अरब देश को ही कह रहे हैं।

(4) एक शब्द जो इस भविष्यवाणी में स्पष्टिकरण के योग्य है वह पंचगव्य और गंगा जल से पैग़ंबर मुहम्मद(स) को स्नान कराना है। वास्तव में यह कोई कार्य का आदेश नहीं है बल्कि दिव्यस्वप्न है इसलिए इसका अर्थ है कि "वह पापों से मुक्त होगा"। क्योंकि हिन्दुओं में पंचगव्य और गंगा जल इंसानों को पापों से मुक्त

करने वाले समझे जाते हैं। गंगा जल और पंचगव्य का दूसरा आध्यात्मिक अर्थ यह है कि जल की तुलना आध्यात्मिक ज्ञान से की गई है जिस प्रकार गंगा जल द्वारा मुनिष्य का शरीर शुद्ध होता है इसी प्रकार आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा मनुष्य का मन शुद्ध हो जाता है। और पंचगव्य यानी गाय का दूध, घी, मूत्र, दही, और गोबर आमतौर पर लोग यह कहते हैं परंतु भगवत गीता के प्रारंभ में कहा गया है कि "सर्वा उपनिषद गावो दुगधा गोपाला नंदनः" अर्थात "सब उपनिषद गायें है और उनका दूध धोने वाले श्री कृष्ण जी हैं"।

इस प्रकार गाय अर्थात आध्यात्मिक ज्ञान है वह आध्यात्मिक ज्ञान वास्तव में दिव्य कुरआन है और पंच गव्य अर्थात दिव्य कुरआन के बताए हुए पाँच मूल स्तंभ हैं।

1) तौहीद(एकेश्वावाद), 2) नमाज़, 3) रोज़ा, 4) ज़कात, 5) हज। इन पाँच अरकान या स्तंभ को दुनिया का प्रत्येक मुसलमान मानता है।

इस प्रकार मुहम्मद(स) को गंगा जल और पंचगव्य से आध्यात्मिक स्नान कराया गया था।

(5) दिल की इच्छा से चंदन आदि के साथ भेंट प्रस्तुत कर के मुहम्मद(स) का सम्मान किया गया अर्थात पैग़ंबर मुहम्मद(स) की प्रतिष्ठा, गौरव और महत्ता की ओर संकेत किया गया है।

इस प्रकार भविष्य पुराण के इस श्लोक में भी पैग़ंबर मुहम्मद(स) की ही प्रशंसा की गई है।

प्रमाण - 33

भोजराज उवाच - नमस्ते गिरिजानाथ मरुस्थलनिवासिने।

त्रिपुरासुरनाशाय बहुमाया प्रवर्त्तिने॥

(भविष्य पुराण :- प्रतिसर्ग पर्व : 3, काण्ड : 3, अध्याय : 3, श्लोक : 7)

शब्दार्थ :-

भोजराज उवाच = भोज राज ने कहा

नमस्ते = आपका आदर हो

गिरिजा = हे पार्वती के

नाथ = मालिक (मानव जाति के गौरव)

मरुस्थलनिवासिने = अरब के रहने वाले

त्रिपुरासुर = शैतान के

नाशाय = मारने के लिए

बहुमाया = बहुत सी ताक़त

प्रवर्त्तिने = प्राप्त करने वाले।

अनुवाद :- भोजराज ने कहा मैं आपके आगे आदर-भाव से झुकता हूँ, हे मानवजाति के गौरव, अरब के रहने वाले, शैतान के मारने के लिए बहुत सी ताक़त प्राप्त करने वाले।

व्याख्या :-

(1) इस श्लोक में भारत के राजा भोज का पैग़ंबर मुहम्मद(स) का दिल से सम्मान करने का वर्णन है, हम पिछले मंत्र अर्थत S.No. 32 के मेंत्र में बता चुके हैं कि राजा भोज एक ही नहीं है भोज भारत के राजों की उपाधि थी प्रसिद्ध राजा भोज से पहले भी कई भोज राजा गुज़रे हैं, इसकी जानकारी के लिए आप हमारा S.No. 32 का मंत्र देख सकते हैं।

राजा भोज ने अपने काल में पैग़ंबर(स) की इस प्रकार प्रशंसा की है "हे मानव जाति के गौरव, अरब देश के रहने वाले, शैतान को नाश करने वाले, दिव्य शक्ति को प्राप्त करने वाले मैं आपको नमस्कार करता हूँ"।

इसी प्रकार व्यास महार्षि ने व्यासोपनिषद में यह कहकर पैग़ंबर मुहम्मद(स) की प्रशंसा की है

"नना सोमेथ्यो देवश्यो नम

नम मोहम्मादाय च

नम बीमाय च

नम उग्राय च तप शांताय" ।

(व्यासोपनिषद)

अर्थात "सलाम करता हूँ मैं चाँद जैसे चहरे वाले को, सलाम करता हूँ मैं मुहम्मद(स) को, सलाम करता हूँ मैं शेर की ताक़त रखने वाले को, सलाम करता हूँ मैं मालिक की ताक़त रखने वाले को, सलाम करता हूँ मैं दिव्य शक्ति रखने वाले को" ।

इस प्रकार राजा भोज ने और व्यासजी ने और कई ऋषि, मुनि और राजाओं ने अपने अपने काल में पैग़ंबर मुहम्मद(स) की प्रशंसा की है इनके अतिरिक्त बहुत सारे राजाओं ने पैग़ंबर(स) के काल में आप(स) पर विश्वास लाकर आप(स) की प्रशंसा की है । पैग़ंबर मुहम्मद(स) के काल में ही जब "शक़्कुल क़मर" अर्थात चाँद के दो टुकड़े होने का चमत्कार पैग़ंबर मुहम्मद(स) के द्वारा हुआ तो भारत के एक राजा ने "चेरामन पेरुमल"(Cheraman Perumal) जो अपने महल के छत पर टहेल रहे थे शक़्कुल क़मर की जानकारी प्राप्त करके पैग़ंबर(स) से मिलने के लिए समंदरी रास्ते से नाव के द्वारा अरब देश पहुँचे थे और वहाँ राजा ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया और कुछ दिन बाद राजा ने वहाँ पर एक अरब स्त्री से विवाह कर लिया था और जब राजा अपनी पत्नी और पत्नी के भाई के साथ वापस भारत देश आरहे थे तब ही राजा बीमार हो गए और उनका देहांत नाव में ही हो गया था । उस समय राजा ने अपनी धर्म पत्नी और पत्नी के भाई को यह वसीयत की थी कि भारत पहुँचते ही पहले एक मस्जिद बनवाना, तो आज वह मस्जिद केरल स्टेट में मौजूद है जो 1400 वर्ष पुरानी है

जिसका नाम "चरमन जामा मस्जिद" है। जिसे देखने के लिए सारी दुनिया से लोग जाते हैं।



इस प्रकार अंतिम ऋषि पैग़ंबर मुहम्मद(स) का सम्मान केवल एक राजा ने ही नहीं किया बल्कि विश्व के बहुत सारे राजाओं ने पैग़ंबर मुहम्मद(स) पर विश्वास लाकर आप(स) का सम्मान किया, इस बात का इतिहास साक्षी है।

(2) इस श्लोक में पैग़ंबर मुहम्मद(स) को गिरिजानाथ कहा गया है जिसका अर्थ होता है मानवजाति के गौरव अर्थात जिन पर सारी मानवजाति गर्व करती हो।

हम जानते हैं कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) दुनिया में प्रकट होने से पहले लोग बुराई, पाप और अंधकार में पड़े हुए थे, शराब पीना, जुवा खेलना, चोरी-डकेती करना, स्त्रीयों पर अत्यचार, अन्याय और बलात्कार करना ये सब आम बात थी और अरब में भी पाप बहुत बढ़ गया था वे लोग अपनी ज़िन्दा बच्चियों को ज़मीन में दफ़न कर देते थे और नंगे(नग्न) होकर काबे की परिक्रमा करते थे। इस प्रकार दुनिया में बुराई अपने चरम पर थी ऐसे अंधकार के काल में अंतिम ऋषि पैग़ंबर मुहम्मद(स) अरब देश में प्रकट होकर न केवल अरब देश से पापों का ख़ात्मा किये बल्कि सारे विश्व से इन पापों को दूर किये। जो लोग पैग़ंबर(स) के शान्ति धर्म इस्लाम को स्वीकार कर लेते हैं तो वे लोग इहलोक और परलोक में सुख और शांति प्राप्त कर लेते हैं। पैग़ंबर मुहम्मद(स) की भविष्यवाणियाँ एक लाख चौबीस हज़ार(1,24,000) अवतारों, ऋषियों, और पैग़ंबरों ने दी है और सबने

अपने धर्म ग्रंथों में पैग़ंबर मुहम्मद(स) की बहुत प्रशंसा की हैं। इस प्रकार पैग़ंबर मुहम्मद(स) मानव जाति के गौरव कहलाते हैं अर्थात सारे विश्व को पैग़ंबर मुहम्मद(स) पर गर्व है।

(3) और इस श्लोक में भी पैग़ंबर मुहम्मद(स) को "मरूस्थलनिवासिने" कहा गया है अर्थात वह अरब देश के रहने वाले होंगे। मरूस्थल यानी रेतीला इलाक़ा अर्थात रेगिस्तान, वह अरब देश है और इस देश को भविष्य पुराण में "नभिस्थान" भी कहा गया है और इस श्लोक में "मदीना" शब्द का भी वर्णन है जिसको तीर्थ स्थल बताया गया है इसके लिए आप हमारा S. No. 18 का मंत्र देख सकते हैं। इस प्रकार मरूस्थल वह अरब देश ही है।

(4) और इस श्लोक में पैग़ंबर मुहम्मद(स) को शैतान को मारने वाले कहा गया है अर्थात पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने अरब देश के सब दुष्टों का नाश कर के वहाँ पर शांति धर्म स्थापित कर दिया, सब पापों के अंधकार को समाप्त कर के पुण्य का प्रकाश फैला दिया, इस प्रकार पैग़ंबर मुहम्मद(स) शैतान के मारने वाले कहलाए।

(5) और इस श्लोक में पैग़ंबर मुहम्मद(स) जो अरब के रहने वाले हैं वह शैतान के मारने के लिए बहुत सी ताक़त प्राप्त करने वाले हैं बताया गया है। अर्थात हमने इतिहास में देखा है कि सब से पहला जो धर्म युद्ध दुआ था वह "जंगे बदर" था जिसमें मुसलमान केवल 313 थे और दुश्मन तीन गुना ज़्यादा अर्थात 1000 के निकट थे, मुसलमानों के पास केवल 2 घोड़े, 8 तलवारें थीं और दुश्मन सारे शस्त्रों से लैस थे फिर भी मुसलमान विजयी हुए और दुश्मन पराजित हुए, दिव्य कुरआन में इस युद्ध का वर्णन करते हुए अल्लाह तआला फ़रमाता हैं कि हमने जंगे बदर में 1000 फ़रिश्तों के द्वारा मुसलमानों की मदद की है, इसी प्रकार अल्लाह तआला ने फ़रमाया हमने जंगे उहद के समय मुसलमानों की 3000 फ़रिश्तों द्वारा मदद की है और जंगे हुनैन में 5000 फ़रिश्तों द्वारा मदद की है। इस प्रकार पैग़ंबर(स) और आप(स) के शिष्य हर जंग में विजयी होते थे। इसका कारण

परमात्मा की ताक़त का साथ होना है। इसी बात को इस श्लोक में इस प्रकार बताया गया है कि अंतिम ऋषि पैग़ंबर मुहम्मद(स) शैतान को मारने के लिए बहुतसी ताक़त प्राप्त करेंगे।

तो इस प्रकार हम देखते हैं कि इस श्लोक में भी पैग़ंबर मुहम्मद(स) की प्रशंसा करते हुए उनका सम्मान किया गया है और पैग़ंबर(स) को मानवजाति का गौरव बताया गया है और शैतानों को मारने वाले कह कर आप(स) की महत्ता का वर्णन किया गया है।

प्रमाण - 34

म्लेच्छैर्मुप्ताय शुद्धाय सच्चिदानन्दरूपिणे।
त्वं मां हि किंकरं विद्धि शरणार्थमुपागतम्॥

(भविष्य पुराण :- प्रतिसर्ग पर्व : 3, काण्ड : 3, अध्याय : 3, श्लोक : 8)

शब्दार्थ :-

म्लेच्छ = दुश्मन म्लेच्छों से

मुप्ताय = रक्षा किये गए

शुद्धाय = हे पवित्र

सच्चिदानन्द = सत्, चित् एवं आनन्द से युक्त (परमात्मा के)

रूपिणे = रूप दिखाने वाले

त्वं = तू

मां = मुझे

हि = निस्संदेह

किंकरं = गुलाम

विद्धि = समझ

शरणार्थम् = और अपने चरणों में
उपागतम् = आया हूँ।

अनुवाद :- दुश्मन म्लेच्छों से रक्षा किये गए हो, हे पवित्र सच्चिदानन्द अर्थात परमात्मा का रूप दिखाने वाले, आप मुझे निस्संदेह अपना गुलाम समझिए, मुझको अपने चरणों में आया हुआ जानिए।

व्याख्या :- इस श्लोक में भी अंतिम ऋषि नराशंस पैग़ंबर मुहम्मद(स) की प्रशंसा की गई है और यह कहा गया है कि आपकी म्लेच्छ दुश्मनों के षड़यंत्रों से सुरक्षा की जाएगी। हम जानते हैं कि अरब में पैग़ंबर मुहम्मद(स) से पहले बहुत बुराई और पाप पढ़ गए थे और जब परमात्मा ने पैग़ंबर मुहम्मद(स) को इन पापों को दूर करने के लिए और इन दुष्टों को नाश करने के लिए अवतरित किया तो यह अरब के सारे म्लेच्छ पैग़ंबर मुहम्मद(स) के दुश्मन बन गए और हर दिन पैग़ंबर मुहम्मद(स) की हत्या करने का षडयंत्र रचते थे परंतु परमात्मा ने पैग़ंबर मुहम्मद(स) को हमेशा सुरक्षित रखा है। यह म्लेच्छ दुश्मन कुल साठ हज़ार नब्बे(60,090) की संख्या में थे, इसकी अधिक जानकारी के लिए आप हमारा S.No. 1 का मंत्र देख सकते हैं जिसमें पैग़ंबर मुहम्मद(स) को साठ हज़ार नब्बे दुश्मनों से बचा लेने का वर्णन है और म्लेच्छ दुश्मनों की दुश्मनी का इस्लामी इतिहास साक्षी है। इस प्रकार परमात्मा परमेश्वर अल्लाह ने पैग़ंबर मुहम्मद(स) को म्लेच्छ दुश्मनों से हमेशा सुरक्षित रखा है।

और इस श्लोक में पैग़ंबर मुहम्मद(स) को "सच्चिदानन्द" अर्थात "परमात्मा का रूप अपने रूप से दिखाने वाला" बताया गया है अर्थात पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने अपने अस्तित्व को समाप्त कर के परमात्मा में लीन हो गए थे। इस कारण जो पैग़ंबर मुहम्मद(स) को देखता तो वह वास्तव में परमात्मा परमेश्वर सच्चिदान्नद(अल्लाह) को ही देखता था। इसी बात का वर्णन करते हुए पैग़ंबर(स) फ़रमाते हैं "मनरअनी फ़क़द रा-अल हक़" अर्थात "जिसने मुझे देखा

उसने परमात्मा को देखा" । इस प्रकार पैग़ंबर मुहम्मद(स) सत्, चित् एवं आनन्द से युक्त उस सच्चिदानन्द परमेश्वर का रूप दिखाने वाले हैं और इस श्लोक में महर्षि व्यासजी पैग़ंबर मुहम्मद(स) की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि मुझे अपना दास और चरणों में आया हुआ समझिए ।

इस प्रकार हमने देखा कि भविष्य पुराण के प्रतिसर्ग पर्व : 3, काण्ड : 3, अध्याय : 3, और श्लोक 5 से 8 तक इन श्लोकों में पैग़ंबर मुहम्मद(स) की प्रशंसा, गौरव, महत्ता और प्रतिष्ठा का वर्णन स्पष्ट रूप से किया गया है । इन चार श्लोकों का सार यह है

1. इस भविष्यवाणी में पैग़ंबर मुहम्मद(स) का नाम “महामद” स्पष्ट रूप से बता दिया गया है ।

2. अरब देश का रहने वाले बताया अर्थात मरूस्थलनिवासिने का अर्थ रेगिस्तान है ।

3. आप(स) के शिष्यों का विशेष रूप से वर्णन किया गया शायद ही दुनिया में कोई और भी पैग़ंबर होगा जो इस प्रकार अपने शिष्यों को अपने रंग में रंगीन किया हो ।

4. वह गुनाहों से पाक फरिश्ता सिफ़त अर्थात अपने अंदर देवगुण रखने वाला होगा ।

5. भारत का राजा उन पर हार्दिक श्रद्धा और आस्था रखने वाला होगा ।

6. पैग़ंबर मुहम्मद(स) की दुश्मनों से हिफाज़त होगी और यह हिफ़ाज़त असाधारण रूप से होगी ।

7. पैग़ंबर मुहम्मद(स) शैतान अर्थात दुष्टों का नाश करने वाले होंगे और हर प्रकार के पाप को समाप्त करने वाले होंगे ।

8. पैग़ंबर मुहम्मद(स) "सच्चिदानन्दरूपिणे" अर्थात परमात्मा का रूप दिखाने वाले होंगे ।

9. महर्षि अपने आपको पैग़ंबर मुहम्मद(स) के चरणों में आये हुए घोषित करते हैं।

10. और पैग़ंबर मुहम्मद(स) को "पार्वती के नाथ" अर्थात मानव जाति के गौरव बताया गया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भविष्य पुराण के प्रतिसर्ग पर्व : 3, काण्ड : 3, अध्याय : 3, श्लोक 5 से लेकर 8 तक के श्लोकों में पैग़म्बर मुहम्मद(स) की स्पष्ट रूप से प्रशंस की गई है और आगे इन भविष्यवणियों का सिलसिला भविष्य पुराण के इस पर्व में जारी है जिनका स्पष्टिकरण हमारे अगले श्लोकों में आएगा।

प्रमाण - 35

म्लेच्छैस्सुदूषिता भूमिर्वाहीका नाम विश्रुता।
आर्य्यधर्मो हि नैवात्र वाहीके देशदारुणे ॥

(भविष्य पुराण :- प्रतिसर्गपर्व : 3, काण्ड : 3, अध्याय : 3, श्लोक : 10)

शब्दार्थ :-

म्लेच्छ = म्लेच्छों से

सुदूषिता = खराब की हुई

भूमि = देश

वाहिका = अरब

नाम = नाम से

विश्रुता = प्रसिद्ध

आर्य्यधर्म = आर्य धर्म

नैवा = नहीं है

अत्र = वहाँ

वाहीके = अरब

देश = देश

दारूणे = सख्त में।

अनुवाद :- अरब के प्रसिद्ध देश को म्लेच्छों ने खराब कर दिया है, इस अरब देश में आर्य धर्म नहीं है।

व्याख्या :- इस श्लोक में पैग़ंबर मुहम्मद(स) के प्रकट होने से पहले जो अरब देश की दुर्गाति थी उसका वर्णन किया गया है।

इस श्लोक में अरब देश को प्रसिद्ध देश कहा गया है अर्थात सारी दुनिया में जिसको जाना जाता हो, हम जानते हैं कि अरब देश दुनिया का "नाभीस्थल" है अर्थात भूगोल के बीचों बीच है और अरब देश का वर्णन अथर्ववेद के "कुंताप सूक्त" में भी है और बहुत सारे वेदों के मंत्रों में अरब देश का वर्णन आया है और शास्त्रों में अरब देश को "शालमल द्वीप" कहा गया है और भविष्यपुराण के प्रतिसर्ग पर्व : 3, काण्ड : 3, अध्याय : 3, श्लोक : 6-7 और श्लोक : 22 में भी अरब देश को भूमध्य अर्थात "भूमि के मध्य में स्थापित" कहा गया है और इस श्लोक में यह भी कहा गया है कि अरब देश में एक मदीना शहर होगा जो बहुत बड़ा तीर्थ स्थल होगा। इस प्रकार अरब देश प्राचीन काल से प्रसिद्ध है।

दूसरी बात इस श्लोक में यह बताई गई है कि इस प्रसिद्ध अरब देश को म्लेच्छों ने दूषित अर्थात ख़राब कर दिया है। इस्लाम से पहले अरब में यौन संबंधों और अभिव्यक्ति की आज़ादी लगभग उसी तरह से थी, जैसे आज विक्सित देशों में है, यौन संबंधों के लिए एक से अधिक व्यक्तियों से संबंध की छूट थी, इस्लाम से पहले अरब में वेश्यावृत्ति की आज़ादी थी, इस तरह कि यौन संबंधों को किसी पाप की श्रेणी में नहीं रखा जाता था और इस्लाम से पहले अरब के म्लेच्छ लोग नग्न होकर काबे की परिक्रमा करते थे, अपनी बेटियों को ज़िन्दा ज़मीन में दफ़न कर देते थे, शराब पीना, चोरी-डकेती करना, लोगों की हत्या करना

यह सब आम बात थी। तो इस प्रकार अरब के प्रसिद्ध देश को म्लेच्छों ने दूषित कर दिया था।

तीसरी बात इस श्लोक में यह बताई गई है कि उस अरब देश में आर्य धर्म नहीं है अर्थात ऐसा धर्म जो सारे पापों को नाश करके पुण्य को हर दिशा में फैलाने वाला। क्योंकि "आर्य" एक धर्म का भी नाम है और गुण का भी नाम है। आर्य का अर्थ होता है श्रेष्ठ, उत्तम और महान। इस्लाम धर्म ही वह आर्य धर्म है जो श्रेष्ठ, उत्तम और महान है क्योंकि यही वह धर्म है जो प्रसिद्ध अरब देश जोकि म्लेच्छों के द्वारा भ्रष्ट हो गया था उसको पापों से मुक्त किया और दुष्टों का नाश कर के शांति स्थापित किया है।

इस श्लोक में इस्लाम धर्म के आने से पहले अरब देश की स्थिती बताई गई थी यही अरब देश इस्लाम आने के बाद सारे विश्व का आध्यात्मवाद का केंद्र और सारे विश्व का मार्गदर्शक बना। जिसके प्रमाण में वेदों के कई मंत्र हैं। इसकी अधिक जानकारी के लिए आप हमारे S.No. 25-30 तक के मंत्र देख सकते हैं।

इस प्रकार इस श्लोक में इस्लाम से पहले जो अरब देश की हालत थी उसका स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया है।

प्रमाण - 36

बभूवात्र महामायी योऽसौ दग्धो मया पुरा।
त्रिपुरो बलिदैत्येन प्रेषितः पुनरागतः ॥

(भविष्य पुराण :- प्रतिसर्ग पर्व : 3, काण्ड : 3, अध्याय : 3, श्लोक : 11)

शब्दार्थ :-

बभूव = हुआ था

अत्र = यहाँ

महामायी = बहुत गुमराह

यः = जो

उसौ = वह

दग्धो = जला दिया गया

मया = मुझ से

पुरा = पहले

त्रिपुरो = शैतान

बलि = ताक़तवर

दैत्येन = दुश्मन से

प्रेषितः = भेजा हुआ

पुनरागतः = फिर आ गया है।

अर्थ :- यहाँ पहले भी एक गुमराह शैतान हुआ था जिसको मैंने भस्म कर दिया था, वह ताक़तवर दुश्मन दूसरे रूप में फिर आगया।

व्याख्या :- इस्लाम के दुनिया में आने से पहले भी काबा पुण्य क्षेत्र का सारी दुनिया में महत्व था, लोग दूर-दूर से सफर कर के आते और काबे की परिक्रमा करते और मक्का शहर जिसमें काबा पुण्यस्थल है बहुत बड़ा व्यापार का केंद्र बन गया था।

उस समय जो यमन का गवर्नर था वह एक ईसाई(Christian) था जब उसने देखा कि लोग काबा पुण्य स्थल जिसको "बैतुल्लाह" कहते थे अर्थात परमात्मा का घर, उसी की ओर लोगों की आस्था और श्रद्धा बड़ने लगी थी तब यमन के गवर्नर ने यमन में बहुत बड़ा गिरजा घर(Church) बनवाया ताकि लोग काबे की ओर न जाकर गिरजा घर की तरफ़ आए परंतु इस गिरजा घर का लोगों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, लोग हमेशा की तरह काबे को जाते और वहाँ रुकते, काबे की परिक्रमा करते ओर व्यापार करके लोट जाते। एक दिन यमन के गवर्नर

ने सोंचा कि अगर मैं काबा पुण्य स्थल को ही नष्ट कर दूँ तो लोग ज़रूर इस गिरजा घर की ओर आएँगे और यमन एक बहुत बड़ा व्यापार का केंद्र बन जाएगा। यही बात सोंचकर उसने सेना तय्यार की और उपनी सेना में बहुत सारे हाथियों का उपयोग किया क्योंकि उसने सोंचा कि अरब जो रेगिस्तान का इलाक़ा है वहाँ हाथी नहीं होते तो इन हाथियों को देखकर अरब के लोग डर जाएँगे और वे बिना लड़े ही अपनी हार स्वीकार कर लेंगे। परंतु वह यह नहीं जानता था कि काबा केवल एक व्यापार का केंद्र ही नहीं है अपितु परमात्मा का घर अर्थात आध्यात्मवाद का केंद्र भी है जिसकी रक्षा स्वयं परमात्मा करता है।

यमन का गवर्नर जिसका नाम अब्राहा था वह बहुत बड़े हाथियों के लश्कर को लेकर यमन से निकलता है और मक्का शहर के बाहर पड़ाव डालता है और वहाँ पर चरने वाले ऊँट और बकरियों को अपने क़ब्ज़े में कर लेता है जो कि हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के थे जो काबे की देख भाल करने वाले अधिकारी थे। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब पैग़ंबर मुहम्मद(स) के दादा होते हैं और यह घटना पैग़ंबर मुहम्मद(स) के पैदा होने से 50 दिन पहले की है। जब अब्दुल मुत्तलिब को पता चला की यमन का गवर्नर एक बहुत बड़ा लश्कर लेकर काबा पुण्य स्थल को नष्ट करने के लिए आया है और वह इनके ऊँट और बकरियों को क़ब्ज़ा कर लिया है तो हज़रत अबदुल मुत्तलिब उसके पास जाते हैं और उससे कहते हैं कि आप मेरे ऊँट और बकरियों को वापस करदें। वह कहता है कि मैं तो तुम्हारे काबा पुण्य स्थल को नष्ट करने के लिए आया हूँ आप यह नहीं कह रहे हो कि काबा पुण्य स्थल को नष्ट न करो बल्कि आप अपने ऊँट और बकरियाँ वापस माँग रहे हैं तब हज़रत अब्दुल मुत्तलिब कहते हैं कि ऊँट और बकरियों का मालिक मैं हूँ उनकी सुरक्षा करना मेरा कर्तव्य है और काबा पुण्य स्थल परमात्मा का घर है उसकी सुरक्षा करना स्वयं परमात्मा का कर्तव्य है। यह कहकर हज़रत अब्दुल मुत्तलिब अपने ऊँट और बकरियाँ लेकर वापस हुए और मक्के वालों से कहा कि

तुम सब पहाड़ पर चढ़ जाओ अल्लाह इस पुण्य क्षेत्र की स्वयं सुरक्षा कर लेगा। इतिहास साक्षी है कि परमात्मा ने उस गुमराह शैतान अब्राहा को बिना किसी मनुष्य की सहायता के भस्म कर दिया था। वह इस तरह कि पक्षी अपनी चोंचों में कंकरियाँ उठाते और अब्राहा की सेना पर डाल देते तो उस कंकर के कारण बहुत बड़ा विस्फोट होता और लोग वहीं भस्म हो जाते। इस प्रकार सारी सेना को मक्का पुण्य स्थल से भागना पड़ा और यमन वापस लौटते समय अब्राहा बीमार हो गया और रास्ते में ही मर गया। इस प्रकार इस श्लोक में अब्राहा की ओर संकेत करते हुए बताया गया है कि यहाँ अरब देश में पहले भी एक गुमराह शैतान हुआ था जिसको मैंने भस्म कर दिया था।

"अब्राहा आया था मस्त हाथी का लश्कर लेकर
ज़अम था उसको कि मिस्मार करुँगा काबा
रब्बे काबा ने न ली कोई मदद अरबों की
खुद बला डालकर लशकर को तबाह कर डाला"

(सालार)

और आगे इस श्लोक में बताया गया है कि वह तक़तवर दुश्मन दूसरे रूप में फिर आ गया।

हम जानते हैं कि गुमराह शैतान जो कि यमन के गवर्नर का गुण था वही गुण को लेकर अरब में तक़तवर दुश्मन पैग़ंबर मुहम्मद(स) के विरोध में ठहर गए जैसे अबूजहल, अबूलहब, उतबा, शीबा, आदि और परमात्मा परमेश्वर अल्लाह ने इन सब गुमराह शैतानों को पैग़ंबर मुहम्मद(स) के द्वारा नाश कर दिया और अरब में धर्म राज स्थापित कर दिया। इसकी अधिक जानकारी के लिए आप हमारे S.No. 33, 34 और 35 के मंत्र देख सकते हैं।

प्रमाण - 37

अयोनिः स वरो मत्तः प्राप्तवान्दैत्यवर्द्धनः।
महामद इति ख्यातः पैशाचकृतितत्परः ॥

(भविष्य पुराण :- प्रतिसर्गपर्व : 3, काण्ड : 3, अध्याय : 3, श्लोक : 12)

शब्दार्थ :-

अयोनिः = ब्रह्मा का

वरो = उपाधि

प्राप्तवान = प्राप्त कर लिया है

दैत्यवर्द्धनः = दुश्मनों के सुधार और कामयाबी के लिये

सः = वह

महामद = मुहम्मद

इति ख्यातः = प्रसिद्ध है

पैशाचकृतितत्परः = पैशाचों को शुद्ध करने में व्यस्त है।

अर्थ :- इन दुश्मनों के सुधार और कामयाबी के लिये, जिसने मुझ से ब्रह्मा की उपाधि प्राप्त की है वह प्रसिद्ध मुहम्मद(स) पापियों को शुद्ध करने में व्यस्त हैं।

व्याख्या :- इस श्लोक में पैग़ंबर मुहम्मद(स) को परमात्मा से ब्रह्मा की उपाधि मिलने का वर्णन किया गया है और यह भी बताया गया है कि उनका नाम "मुहम्मद" होगा और वह प्रसिद्ध होंगे और आप(स) दुश्मनों को सुधारने और पापियों को शुद्ध करने में व्यस्त रहेंगे।

ब्रह्मा, विष्णु और महेश ये तीन परमात्मा के विशेष गुण हैं जिनको इस्लाम में रहमान, रहीम और मालिक कहते हैं। ब्रह्मा या रहमान का अर्थ होता है बिलाबदल लोगों को प्रदान करने वाला, जैसे परमात्मा हमारे लिए सूर्य को उदय करता है परंतु हमसे इलेक्ट्रिसिटी बिल(Electricity Bill) नहीं लेता, बारिश को

बरसाता है परंतु वाटर बिल(Water Bill) नहीं माँगता, हमारे लिए धरती प्रदान की है परंतु कभी हम से प्रॉपरटी टेक्स(Property Tax) नहीं माँगता, तो इस प्रकार ब्रह्मा या रहमान का अर्थ होता है कि अपने बंदों को बिलाबदल प्रदान करने वाला। तो इस श्लोक में यह बताया गया है कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) को परमात्मा की ओर से "ब्रह्मा" की उपाधि प्रदान की गई है। इसी कारण पैग़ंबर मुहम्मद(स) लोगों को बिलाबदल परमात्मा का दिव्य संदेश सुनाते रहे और किसी से कुछ धन नहीं माँगा। और पैग़ंबर मुहम्मद(स) दुश्मनों के सुधार और पैशाचों अर्थात पापियों को शुद्ध करने में हमेशा व्यस्त रहते थे।

पैग़ंबर मुहम्मद(स) की आयू जब चालीस(40) वर्ष की हो गई तो परमात्मा ने उन्हें अंतिम ऋषि अर्थात आखरी नबी की पदवी प्रदान की, जिसके बाद पैग़ंबर मुहम्मद(स) कभी कोई दुनिया का कार्य या व्यापार आदि नहीं किये केवल अपना जीवन लोगों के सुधार में लगा दिए। एक समय की घटना है कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) चिलचिलाती धूप में लोगों को परमात्मा का संदेश सुनाकर थक-थका कर घर लौटे और अपनी कंबल बिछाकर लेटने ही वाले थे कि एक क़ाफिले के अपने घर के पास से गुजरने की आवाज़ सुनी तब ही आप(स) उठ खड़े हुए और जाने के लिए कंबल अपने कंधे पर रख लिए तब पैग़ंबर मुहम्मद(स) की धर्मपत्नी हज़रता ख़दीजा(र) ने कहा कि "हे अल्लाह के रसूल(स) आप अभी लोगों को परमात्मा का दिव्य संदेश सुनाकर कड़क धूप में आए हो कुछ देर अराम करलें बाद में चले जाना", इस बात को सुनकर पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने कहा "हे ख़दीजा अगर यह क़ाफिला अब चला जाए और दूसरे रास्ते से अपने स्थान लौट जाए और कल जब प्रलय के दिन यह लोग परमात्मा से शिकायत करें कि हम लोग आप के पैग़ंबर मुहम्मद(स) के घर के पास से गुज़रे परंतु हमें दिव्य संदेश नहीं मिला, अगर मिलता तो हम सब हे परमात्मा आपके आज्ञाकारी होते, तब मैं

परमात्मा को क्या उत्तर दूँगा" यह कहकर पैग़ंबर मुहम्मद(स) उस क़ाफिले को समझाने के लिए चले जाते हैं।

इसी प्रकार एक दिन पैग़ंबर मुहम्मद(स) ताइफ़ के तीन बड़े-बड़े सरदारों को इस्लाम का दिव्य संदेश सुनाने जाते हैं जो मक्के से नब्बे(90) किलो मीटर दूर था, वहाँ जाने के बाद ताइफ़ के तीनों सरदारों ने पैग़ंबर मुहम्मद(स) का विरोध किया और अपनी बस्ती के बच्चों से कहा कि मुहम्मद(स) को पत्थर मार-मार कर हमारी बस्ती से बाहर कर दो, तब बच्चों ने आप(स) को इतना मारा की आप(स) का शरीर खून से गीला हो गया, जब शहर के बाहर गए और आप(स) ने जूते उतारना चाहा तो खून जमकर आप(स) के जूते उतर न पाए। तभी परमात्मा का देवदूत(फ़रिश्ता जिब्रील(अ)) वहाँ उपस्थित होता है और कहता है कि हे पैग़ंबर मुहम्मद(स) अगर आप आदेश दें तो मैं इस ताइफ़ की बस्ती जो दो पहाड़ों के बीच में है इन दो पहाड़ों को रगड़ कर इस बस्ती को नष्ट करदूँ, तब पैग़ंबर मुहम्मद(स) कहते हैं कि नहीं जिब्रील मैं दया सागर और करूणा सागर बना कर भेजा गया हूँ, मैं ऐसा आदेश नहीं दे सक्ता, यह लोग इस दिव्य संदेश को स्वीकार नहीं करेंगे तो कोई बात नहीं आगे चलकर इनकी संतान इसको स्वीकार करेगी। इस प्रकार इतिहास साक्षी है कि ताइफ़ के सारे लोगों ने बाद में इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया, ऐसी अनेक घटनाएँ हमें पैग़ंबर मुहम्मद(स) के जीवन चरित्र में मिलती हैं।

इस प्रकार पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने परमात्मा से ब्रह्मा की उपाधि प्राप्त करके दुश्मनों के सुधार और पापियों को शुद्ध करने में जीवन भर व्यस्त रहे।

और इस श्लोक में पैग़ंबर मुहम्मद(स) का नाम "महामद" आया है और यह भी कहा गया है कि वह प्रसिद्ध होंगे।

हम जानते हैं कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) की भविष्वाणी प्रत्येक नबी, ऋषि, अवतार ने दी है और हर धर्म ग्रंथ में पैग़ंबर मुहम्मद(स) की भविष्यवाणी और

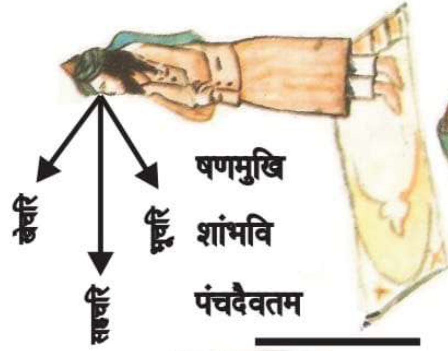
प्रशंसा मौजूद है, न केवल यह बल्कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) की भविष्यवाणी श्री राम चंद्र जी ने नमाज़ प्रार्थना द्वारा हनुमान जी को दी है यह बात "श्री गुरू रामतत्व बोधामृत" में इस प्रकार है एक बार हनुमान जी ने श्री राम चंद्र जी से पूछा कि हे राम मैं प्रार्थना कैसे करूँ ? अगर मैं मिट्टी की मूर्ति बनाकर पूजा करूँ तो लोहा उसको तोड़ देगा तो टूटने वाला खुदा नहीं हो सकता, अगर मैं लोहे की पूजा करूँ तो आग उसको पिगला देगी तो पिगलने वाला खुदा नहीं हो सकता इसी प्रकार अगर मैं आग की पूजा करूँ तो पानी उसको बुझा देगा, अगर मैं पानी की पूजा करूँ तो पानी सूर्य के तेज से भाप बनकर उड़ जाता है तो स्वामी आप ही बताइए कि मैं परमात्मा परमेश्वर की प्रार्थना कैसे करूँ ? यह बात हनुमान जी से सुनकर श्री राम चंद्र जी ने यह श्लोक कहा

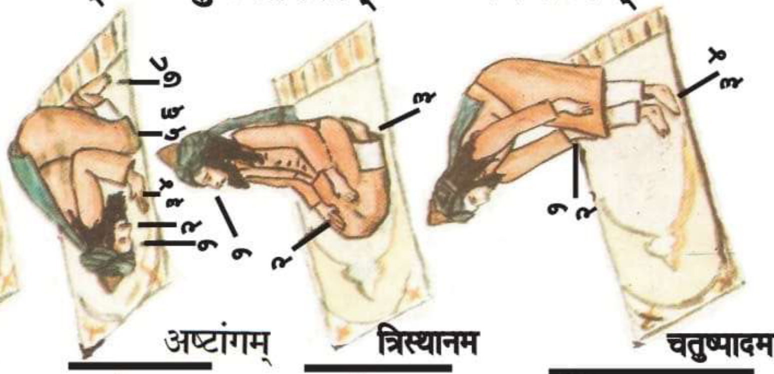
"प्रथमं तारकं चैवा, द्वितियं दंडमुच्चते।
त्रितियं कुंडलाकारं, चतुर्थं अर्धचंद्रकं।
पंचमं बिंदू संयुक्तं, ओम मित्य ज्योति रूपकं" ।।

अर्थात : पहले खड़े होकर(क़याम्) प्रकार की प्रार्थना करना, दूसरे दंडम्(सज्दा) करना, तीसरी बैठकर(क़ायदा) प्रार्थना करना, चौथे झुककर(रुकू) प्रार्थना करना, पांचवां बिंदू रूप में ऐक्य हो जाना यही ज्योति का रूप है।

इस प्रकार राम जी ने हनुमान जी को प्रार्थना सिखाते हुए पैग़ंबर मुहम्मद(स) की भविष्यवाणी दी है वह इस प्रकार की "तारकं" प्रार्थना को मुसलमान "क़याम" कहते हैं जो नमाज़ में ठहर कर की जाती है इस क़याम प्रार्थना में अरबी भाषा का अक्षर 'ا अलिफ़' बनता है और "दंडम" प्रार्थना में 'ح हा' बनता है इसी प्रकार "कुंडलाकारं" प्रार्थना में 'م मीम्' बनता है तथा "अर्ध चंद्रकम्" प्रार्थना में 'د दाल्' बनता है। अगर हम अरबी भाषा के इन चार अक्षरों को मिलाकर पढ़ें तो 'احمد अहमद' होता है। यह 'अहमद' पैग़ंबर मुहम्मद(स)

तारकम् | दंडम् | कुंडलाकारम् | अर्धचंद्रकम्





तारकम् क़याम	दंडम् सजदः	कुंडलाकारम् क़अदह	अर्धचंद्रकम् रुकू
ध्यान को एकत्र करना	आठ अंग ज़मीन को लगे हुए	तीन स्थानों का ध्यान	चौपाए जानवर की तरह हो जाए

आसमान की ओर
सामने की ओर
ज़मीन की ओर
दृष्टि

का दूसरा नाम है इस प्रकार श्री राम चंद्र जी ने हनुमान जी को पैग़ंबर मुहम्मद(स) की भविष्यवाणी दी थी हालांकि हम मुसलमान क़याम(तारकं) के बाद रुकू(अर्ध चंद्रकं) करते हैं फ़िर सजदा(दंडं) और अंत में क़ायदा(कुंडलाकारं) करते हैं। श्री राम चंद्र जी ने ये अनुक्रम(Sequence) केवल पैग़ंबर मुहम्मद(स) की भविष्यवाणी देने के लिए बताया है।

इस प्रकार आप(स) स्मस्त विश्व में प्रसिद्ध हैं और इसकी अधिक जानकारी के लिए आप हमारे S.No. 7 और 8 के मंत्र देख सकते हैं।

प्रमाण - 38

नागन्तव्यं त्वया भूप पैशाचे देशधूर्तके।

मत्प्रसादेन भूपाल तव शुद्धि प्रजायते।।

(भविष्य पुराण :- प्रतिसर्ग पर्व : 3, काण्ड : 3, अध्याय : 3, श्लोक : 13)

शब्दार्थ :-

नागन्तव्यं = नहीं जाना चाहिए

त्वया = तुझे

भूप = हे राजा वहाँ

पैशाचे देश = पैशाच देश

धूर्तके = दुष्टों में

मत् = मेरी

प्रसादेन = कृपा से

भूपाल = हे राजा

तव = तेरा

शुद्धि = शुद्धिकरण

प्रजायते = हो जाएगा।

अर्थ :- हे राजा तुझे दुष्ट पिशाचों के देश में नहीं जाना चाहिए, मेरी कृपा से तेरा शुद्धिकरण यहीं हो जाएगा।

व्याख्या :- इस श्लोक में भारत देश के राजा से कहा गया है कि तुझे दुष्ट पिशाचों के देश नहीं जाना चाहिए, मेरी कृपा से तेरा शुद्धिकरण यहीं हो जाएगा।

अर्थात भारत के राजा को अरब देश जाने में खतरा है इनका शुद्धिकरण यहीं भारत देश में मुसलमान आने पर हो जाएगा।

इस श्लोक में जो भविष्यवाणी दी गई है उसमें इस्लाम धर्म से पहले अरब देश के लोगों की स्थिति का वर्णन किया गया हैं अर्थात अरब देश इस्लाम या पैग़ंबर मुहम्मद(स) आने से पहले दुष्ट पिशाचों का देश था इसीलिए भारत के राजा को वहाँ जाने से रोका गया है। परंतु इसी अरब देश में पैग़ंबर मुहम्मद(स) आने के बाद पिशाचों का नाश हूआ और धर्मराज स्थापित हुआ। इसकी अधिक जानकारी के लिए आप हमारे S.No. 20,21 और 33 के मंत्र देख सकते हैं।

इस प्रकार इस भविष्यवाणी द्वारा हम जान सकते हैं कि भारत के कई राजाओं ने पैग़ंबर मुहम्मद(स) को अंतिम ऋषि स्वीकार किया और बहुत राजाओं ने जब पैग़ंबर मुहम्मद(स) से मिलने की इच्छा प्रकट की तो परमात्मा ने उन्हें पहले ही से सूचित कर दिया कि तुम्हें वहाँ जाने की अवश्यकता नहीं है हम तुम्हारा तज़किया अर्थात शुद्धिकरण यहीं मुसलमानों के आने के पश्चात उनके द्वारा कर देंगे। इतिहास साक्षी है कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने अपने जीवन काल में ही अपने शिष्यों को आदेश दिया कि सारे विश्व में परमात्मा के इस दिव्य संदेश को पहूँचाओ। इसीलिए भारत में पैग़ंबर मुहम्मद(स) के बहुत सारे शिष्य आए जिनकी मज़ारें अर्थात समाधियाँ आज भी भारत देश में उपस्थित हैं और पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने कहा था कि "मैं अरब में हूँ लेकिन अरब मुझ में नहीं, मैं हिन्द में नहीं हूँ लेकिन हिन्द मुझ में है हिन्दुस्तान से मुझे ठंडी हवा आरही है"। इस प्रकार

हम जानते है कि सारे विश्व में तीन लाख अवलिया अल्लाह अर्थात सूफी संत आए हैं। तीन लाख में से केवल पचास हज़ार सारे विश्व में आए परंतु भारत देश में ढ़ाई लाख अवलिया अल्लाह आए। जैसे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, ख्वाजा बंदेनवाज़, निज़ामुद्दीन अवलिया, इत्यादि।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने अरब में प्रकट होकर वहाँ के लोगों का शुद्धिकरण किया और बाद में आप(स) के शिष्यों ने सारी दुनिया में जाकर लोगों का शुद्धिकरण किये और आज भी मुसलमान लोगों का शुद्धिकरण करने में व्यस्त हैं।

और मुसलमान भारत देश में आने के बाद यहाँ की सती प्रथा का ख़ात्मा हुआ, सती प्रथा अर्थात पति की मृत्यु के बाद पत्नी को पति के अंतिम संकार के दौरान उसकी चिता में ज़िंदा जला दिया जाता था।

इतिहास साक्षी है कि इस्लाम धर्म ने भारत में आकर स्त्रीयों का सम्मान बढ़ाया, बाप की संपत्ति में बेटी को हिस्सा दिलाया, माँ के चरणों के नीचे स्वर्ग है कहकर स्त्रीयों का गौरव बढ़ाया, ब्याज को जड़ से समाप्त किया, नियोग की प्रथा को हराम अर्थात निषेध कर दिया, वर्ण व्यवस्था का नाश किया और ग़ुलामी को समाप्त किया, आदि आदि।

इस प्रकार इस्लाम और मुसलमानों ने भारत देश आकर यहाँ के राजा तथा प्रजा को शुद्ध किया।

प्रमाण - 39

स्थापितं तैश्च भूमध्येतत्रोषुर्मदतत्पराः।
मदहीनं पुरं जातं तेषां तीर्थ समं स्मृतम्॥

(भविष्य पुराण :- प्रतिसर्गपर्व : 3, काण्ड : 3, अध्याय : 3, श्लोक : 22)

अर्थ :- स्थापित किया गया भूमि के मध्य में मदीना शहर जो लोगों के लिए तीर्थ स्थल है।

व्याख्या :- इस श्लोक में "मदीना शहर" का वर्णन किया गया है जहाँ पर अंतिम ऋषि पैग़ंबर मुहम्मद(स) की समाधि है। और इस श्लोक में यह भी कहा गया है कि वह भूमि के मध्य अर्थात बीच में स्थापित किया गया है और यह भी कहा गया है कि यह सारी दुनिया के लिए तीर्थ स्थल होगा।

मक्का और मदीना यह दो विश्व के बहुत बड़े पुण्य स्थल और तीर्थ स्थल हैं। मक्का शहर में काबा पुण्य स्थल है जहाँ पर सारी दुनिया के मुसलमान हज के लिए जाते हैं और वहाँ सब एकत्र होकर काबे की परिक्रमा करते हैं यह इसलिए कि इस्लाम धर्म में एकेश्वरवाद की शिक्षा दी गई है और यह काबा पुण्य स्थल भी भूमि के मध्य में है। इस काबे की प्रशंसा में वेदों के कई मंत्र हैं जैसे अथर्ववेद : काण्ड : 10, सूक्त : 2, मंत्र : 28-33 तक इन मंत्रों में काबा पुण्य स्थल की बड़ी प्रशंसा की गई है इसकी अधिक जानकारी के लिए आप हमारे S.No. 15 और S.No. 26-30 तक के मंत्र देख सकते हैं।

और दूसरा जो दुनिया का सब से बड़ा तीर्थ स्थल है वह मदीना है जो मक्का शहर से लगभग 450 km दूर है। जहाँ पैग़ंबर(स) की समाधि है।

पैग़ंबर मुहम्मद(स) को मक्का शहर में जब बहुत कष्ट दिया गया और हर दिन आप(स) पर जान लेवा हमले हो रहे थे तब परमात्मा ने आप(स) को आदेश दिया था कि वह अपने शिष्यों को लेकर मदीना शहर चले जाएँ जिसको अरबी भाषा में "हिजरत"(Migration) कहते हैं इसकी अधिक जानकारी के लिए आप हमारा S.No.1 का मंत्र देख सकते हैं। और इतिहास में इस मदीना शहर का बहुत महत्व बताया गया है और यहाँ के लोग वीरता में बहुत आगे थे जिन्होंने पैग़ंबर मुहम्मद(स) का भरपूर साथ दिया और यह दुनिया का दूसरा सब से बड़ा तीर्थ

स्थल बना, जिसकी भविष्यवाणी वेदों पुराणें और दूसरे धर्म ग्रंथों में मौजूद है और इस श्लोक में मदीना शहर को भूमि के मध्य में स्थापित किया हुआ बताया गया है और इस मदीना शहर की भविष्यवाणी यजुर्वेद : अध्याय : 36, मंत्र : 24, में भी स्पष्ट रूप से दी गई है इसकी अधिक जानकारी के लिए आप हमारा S.No. 18 का मंत्र देख सकते हैं। और मदीना पुण्य स्थल को तीर्थ के लिए सारी दुनिया से मुसलमान जाते हैं और वहाँ जाना अपना सौभाग्य समझते हैं। इस प्रकार मक्का और मदीना ये दोनों पुण्य स्थल भौतिक और आध्यात्मिक रूप से प्रकाशमान हैं और इनके द्वारा सारे विश्व का मार्गदर्शन हो रहा है यही वह पुण्य स्थल हैं जो लोगों की बिगड़ी बना रहे हैं अर्थात सारे विश्व के लोगों को अज्ञानता के अंधकार से निकाल कर ज्ञान के प्रकाश में ला रहे हैं।

इस प्रकार इस श्लोक में जो भविष्यवाणी दी गई थी कि भूमि के मध्य में मदीना शहर स्थापित किया जाएगा और वह लोगों के लिए तीर्थ स्थल होगा यह भी भविष्यवाणी पूरी हुई।

प्रमाण - 40

लिंगच्छेदी शिखाहीनः श्मभुधारी स दूषकः।
उच्चालापी सर्व भक्षी भविष्यति जनो मम ।।

(भविष्य पुराण :- प्रतिसर्गपर्व : 3, काण्ड : 3, अध्याय : 3, श्लोक : 25)

शब्दार्थ :-

लिंगच्छेदी = खतना किये हुए(लिंग छेदन किये हुए) - Circumcision

शिखाहीनः = बिना चोटी वाले

श्मश्रुधारी = दाढ़ी रखने वाले

स = वह

दूषकः = क्रांति लाने वाले
उच्चालापी = ऊँचे स्वर से आलाप करने वाले (अज़ान देने वाले)
सर्वभक्षी = सभी हलाल चीज़ों को खाने वाले
भविष्यति = होंगे
जनो मम = मेरे मानने वाले।

अर्थ :- मेरे मानने वाले खतना किये हुए, बिना चोटी के दाढ़ी वाले और इंक़लाब पैदा करने वाले, अज़ान देने वाले और सब हलाल चीजें खाने वाले होंगे।

व्याख्या :- इसी प्रतिसर्ग पर्व के 23 वें श्लोक में कहा गया है कि "रात के समय एक फ़रिश्ता सिफ़त अर्थात देवगुण रखने वाला आता है और राजा भोज से कहता है"।

और 24 वें श्लोक में वह कहता है कि "हे राजा तेरा आर्य धर्म सब धर्मों से श्रेष्ठ कहा गया है परंतु मैं परमात्मा के आदेश से मांसभक्षी अर्थात मांस खाने वाले के शक्तिशाली धर्म को जारी करूँगा"।

अब इस 25 वें श्लोक में कहा गया है कि "मेरे धर्म का पालन करने वाले लिंगच्छेदी अर्थात खतना किये हुए होंगे, बिना चोटी के दाढ़ी वाले होंगे, दुनिया में क्रांति लाने वाले, अज़ान देले वाले और सब हलाल चीज़ें खाने वाले होंगे"।

इस श्लोक में इस्लाम धर्म और उसके मानने वालों के छे(6) विषेशताएँ बताई गई हैं और यह बात स्पष्ट रूप से बताई गई है कि यह धर्म परमात्मा परमेश्वर की ओर से जारी किया गया है।

1. पहली विशेषता जो बताई गई है कि इस धर्म के मानने वाले लिंगच्छेदी अर्थात खतना किये हुए होंगे, हम जानते हैं कि प्रत्येक मुसलमान खतना (Circumcision) किया हुआ होता है और आज बड़े-बड़े चिकित्सक (Doctors) भी लोगों को खतना करवाने की सलाह दे रहे हैं जिसके द्वारा लोग

बड़े-बड़े रोगों से सुरक्षित रह सकते हैं। यह सारी विशेषताओं को हम संक्षिप्त में बता रहे हैं।

2. दूसरी विशेषता जो बताई गई है वे बिना चोटी के होंगे अर्थात वे अपने सर पर ब्रह्मणों की तरह चोटी नहीं रखेंगे।

3. तीसरी विशेषता यह बताई गई है कि वे लोग दाढ़ी वाले होंगे हम जानते हैं कि प्रत्येक मुसलमान दाढ़ी रखना अपना धार्मिक कर्तव्य समझकर दाढ़ी छोड़ता है।

4. चौथी विशेषता यह बताई गई है कि इस अंतिम धर्म के मानने वाले दुनिया में क्रांति लाने वाले होंगे। हम जानते हैं कि अंतिम धर्म इस्लाम, अंतिम ऋषि पैग़ंबर मुहम्मद(स), अंतिम ग्रंथ दिव्य क़ुरआन और अंतिम उम्मत मुसलमान आने के बाद दुनिया में बहुत बड़ी क्रांति आई।

(अ) जैसे दुनिया से सती प्रथा का खात्मा हुआ, सती प्रथा अर्थात पति की मृत्यु के बाद पत्नी को पति के अंतिम संस्कार के दौरान उसकी चिता में ज़िन्दा जला दिया जाता था।

(आ) बेटियों को पिता की संपत्ति से हिस्सा नहीं दिया जाता था, इस्लाम आकर बेटियों को बाप की संपत्ति में हिस्सा दिलवाया।

(इ) और विश्व में ऐसे भी देश थे जहाँ के लोग अपने बूढ़े माँ-बाप को उनके हाल पर छोड़ देते थे। इस्लाम ने आकर शिक्षा दी कि माँ के चरणों के नीचे स्वर्ग है और पिता स्वर्ग का मध्य द्वार है यह कहकर माँ-बाप का सम्मान करवाया।

(ई) इस्लाम धर्म आने से पहले अपनी बेटियों को लोग ज़िन्दा जमीन में दफ़न कर देते थे लेकिन पैग़ंबर मूहम्मद(स) दुनिया में आने के बाद बेटियों का यह कह कर गैरव बढ़ाया कि कोई भी अपनी बेटी को पालन पोशन कर के अच्छे पुण्यवान वर को देकर अपनी बेटी का विवाह करे तो वह और मैं स्वर्ग में एक साथ रहेंगे।

(उ) इस्लाम धर्म आने के बाद मुसलमानों ने दुष्टों का नाश किया और क्रूर राजाओं के अत्यचार से ग़रीब प्रजा को बचाया, व्यभिचार, चोरी, डकैती, शराब, जूवा,

ब्याज, स्त्रीयों पर अत्यचार, छूत-छात, ऊँच-नीच, ज़ात-पात के भेदों को समाप्त करके सबको एकत्र किया।

(5) पाँचवी विशेषता यह बताई गई है कि वह अज़ान देने वाले होंगे। अज़ान अर्थात ज्योतिरूपम प्रार्थना नमाज़ के लिए मुसलमानों को ऊँचे स्वर में बुलाना है। अज़ान दिन में पाँच वख़्त दी जाती है जिसे सुनकर मुसलमान नमाज़ के लिए मस्जिद की ओर जाते हैं और परमात्मा की प्रार्थना करते हैं और वह अज़ान के शब्द ये हैं :

"अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर" अर्थात परमात्मा परमेश्वर अल्लाह बहुत बड़ा है, सब से महान है।

"अश हदू अल्ला इलाहा इल्लल्लाह" अर्थात मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई दूसरा पूजनीय नहीं है।

"अश हदू अन्ना मुहम्मदर् रसूलुल्लाह" अर्थात मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद(स) अल्लाह के पैग़ंबर हैं।

"हय्या अलस्सलाह" अर्थात आओ नमाज़ की ओर।

"हय्या अलल्फ़लाह" अर्थात आओ सफ़लता की ओर।

"अस्सलातु खैरुम् मिनन नौम" अर्थात नमाज़ नींद से बहतर है। यह शब्द केवल सुबह की अज़ान में कहे जाते हैं।

"अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर" अर्थात अल्लाह सब से बड़ा है अल्लाह सब से महान है।

"ला इलाहा इल्लल्लाह" अर्थात अल्लाह के अतिरिक्त कोई भी पूजनीय नहीं है।

(6) छेटवीं विषेशता यह बताई गई है कि इस अंतिम धर्म के मानने वाले सब हलाल चीज़े खाने वाले होंगे अर्थात वे लोग शाकाहारी और मांसाहारी में श्रेष्ठ और शुद्ध चीज़े खाने वाले होंगे। मांस खाना कोई बुरी बात नहीं है क्योंकि भारत देश के सब ऋषियों और मुनियों ने अपने आश्रमों में क़ुर्बानी करके मांस खाया है

1. और मनुस्मृति अध्याय : 5, श्लोक : 35 में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि

"नियुक्तस्तु यथान्यायं यो मांसं नात्ति मानवः ।
स प्रेत्य पशुतां याति संभवानेकविंशतिम्" ।।

अर्थात : जो व्यक्ति धार्मिक सिद्धांतों के अनुसार क़ुर्बानी कर के मांस नहीं खाता वह मर ने के बाद इक्कीस(21) मांस खाने वाले पशुओं में जन्म लेगा।

2. और वाल्मीकी पुराण, अयोध्य खाण्ड, श्लोक : 5 में लिखा है

"संवस्तदेवी नरामीत्वाम पारियानमि पतिर्वर्ताम
यहे त्याम गो सहस्रंण सुरा घठ शतेनच" ।।

अर्थात : सीता देवी जब अपने पति(राम जी) के साथ वनवास के लिए जाने लगीं तो गंगा के किनारे यह मन्नत(Wish) मांग रही है कि "हे गंगा अगर मैं और मेरे पति सुरक्षित अयोध्या को लौट आएँ तो तेरे किनारे पर हज़ार गायें क़ुर्बान(बलि देना) करूंगी और उसके मांस के साथ पीने के लिए सौ शराब के मटके भी दूंगी"।

3. और श्रीमद् भागवत पुराण, स्कंध : 10, अध्याय : 58, खाण्ड : 2, श्लोक : 15 में कहा गया है

"तत्राविध्यच्छरैर्व्याघ्रान सुकरान महिषान् रुरून ।
शरभान गवयान् खड्गान् हरिणांछाशशल्लकान्" ।।

अर्थात : श्री कृष्ण जी ने यज्ञ के समय कई पशुओं की क़ुर्बानी(बलि) दी जिनमें एक गाय भी थी।

4. इसी प्रकार कूर्म पुराण सूत्र : 40, अध्याय : 17 में कहा गया है कि "मरने वालों की आत्मा को शान्ति प्रदान करने के लिए दावत करके किसी ब्रह्मण को बुलाया जाए और क़ुर्बानी का मांस परोसा जाने पर अगर वह ब्रह्मण घृणा या नफ़रत से

मांस न खाए तो मरने के बाद वह ब्रह्मण नर्क की अग्नी में इतने वर्ष जलेगा जितने की उस पशू के शरीर पर बाल थे" ।

5. और ब्रह्मादी वर्त पुराण में कहा गया है कि एक समय मनू जी ने नर्मदा नदी के किनारे कई पशूओं की कुर्बानी की जिनमें पांच लाख गायें थीं पांच करोड़ लोग उस दावत में उपस्थित थे ।

अधिक जानकारी के लिए आप हमारा यूट्यूब चैनल(Youtube Channel) "Hindu Muslim Uniter"(हिन्दू मुस्लिम युनाईटर) पर हमारा वीडियो "क्या मांस खाना पाप है ?" देख सकते हैं ।

इस प्रकार इस श्लोक में परमात्मा की ओर से जो अंतिम धर्म जारी किया गया है उसकी विषेशताएँ बताई गई है । इसी को हम इस्लाम अर्थात शांति धर्म कहते हैं ।

प्रमाण - 41

विना कौलं च पशवस्तेषां भक्षया मता मम ।

मुसलेनैव संस्कारः कुशैरिव भविष्यति ।।

(भविष्य पुराण :- प्रतिसर्गपर्व : 3, काण्ड : 3, अध्याय : 3, श्लोक : 26)

शब्दार्थ :-

विना कौलं = बिना सूअर के

च = और

पशवस्तेषां = पशु होंगे

भक्षया = खाने के योग्य

मता = धर्म वाले

मम = मेरे

मुसलेन = युद्ध से
अैव = ही
संस्कारः = शुद्धि
कुशैरिव = पवित्र घास के समान
भविष्यति = होगा।

अर्थ :- सूअर के अतिरिक्त और सब श्रेष्ठ अर्थात हलाल पशु खाने वाले होंगे, पवित्र घास से शुद्धि प्राप्त करने की बजाए उनकी शुद्धि युद्ध से होगी।

व्याख्या :- इसी प्रतिसर्ग पर्व के 25 वें श्लोक में बताया गया था कि परमात्मा परमेश्वर के आदेश द्वारा जो धर्म जारी किया जाएगा उसके मानने वाले खतना कराने वाले होंगे, बिना चोटी के दाढ़ी वाले होंगे, दुनिया में क्रांति लाने वाले होंगे, अज़ान देने वाले होंगे और सब हलाल चीजे खाने वाले होंगे। इस श्लोक की व्याख्या के लिए आप हमारा S.No. 40 का श्लोक देख सकते हैं।

अब इस प्रतिसर्ग पर्व : 3, काण्ड : 3, अध्याय : 3, और श्लोक 26, में बताया गया है कि वे लोग अर्थात मुसलमान सूअर(Pork) के अतिरिक्त और सब हलाल पशुओं का मांस खाने वाले होंगे और पवित्र घास से शुद्धि प्राप्त करने की वजाय उनकी शुद्धि युद्ध से होगी।

इस्लाम धर्म में सूअर का मांस खाना हराम अर्थात निषिद्ध किया गया है। दिव्य कुरआन में चार जगह स्पष्ट रूप से बताया गया है कि मुसलमान सूअर का मांस नहीं खा सकते हैं। दिव्य कुरआन में सूरह बकरा आयत : 173 में परमात्मा परमेश्वर अल्लाह फ़रमाता है "उसने तो तुमपर केवल मुर्दार अर्थात मरा हुआ और खून और सूअर का मांस और जिस जानवर पर अल्लाह के अतिरिक्त किसी और का नाम लिया गया हो, हराम(निषिद्ध) ठहराया है" और दिव्य कुरआन सूरह माइदा आयत : 3, में अल्लाह फरमाता हैं "तुम्हारे लिए हराम हुआ मुर्दार, रक्त, सूअर का मांस और वह जानवर जिसपर अल्लाह के अतिरिक्त किसी और का

नाम लिया गया हो" और सूरह अनफ़ाल आयत : 145, और सूरह नहल आयत : 115, में भी सूअर के मांस को परमात्मा ने हराम कहा है। इस प्रकार परमात्मा परमेश्वर अल्लाह ने सूअर के मांस को गंदा, अशुद्ध और अपवित्र बताया है।

अल्लाह तआला दिव्य कुरआन सूरह आराफ, आयत : 157, में फ़रमाता है "और वह (पैग़ंबर) शुद्ध चीज़ो को हलाल(वैध) बताते हैं और अशुद्ध चीज़ों को हराम(निषिद्ध) बताते हैं"। सूअर एक ऐसा जानवर है जो सभी प्रकार के मल खाता है तो इस से यह एक अपवित्र जीव बन जाता है। हाल ही में कुछ डॉकटर्स ने बताया है कि सूअर खाने वालों को 57 प्रकार की घातक बीमारियाँ हो सकती हैं। सूअर में खास तरह के कीड़े होते हैं जो इंसानी शरीर में नहीं जाने चाहिए। यह कीड़े खून में अंडे देते हैं और फिर वह अंडे पूरे शरीर में फैल जाते हैं, यह अगर दिमाग़ में चले जाएँ तो इंसान की मौत भी हो सकती है।

हम जिस तरह का भोजन करते हैं उसका असर हमारे शरीर और हमारे स्वभाव पर ज़रूर पड़ता है। सूअर सब से बेशर्म जीव है केवल यही एक ऐसा जानवर है जो अपने साथियों को बुलाता है कि वे आएँ और उसकी मादा के साथ यौन इच्छा पूरी करें। इसका उदाहरण आप देखना चाहें तो पश्चिमी देश(Western Countries) के लोगों में देख सकते हैं। कुछ पश्चिमी देशों के लोग जब काम करके अपने घर लौटते हैं और घर के दरवाज़े के बाहर किसी अंजान व्यक्ति के जूते(Shoes) नज़र आ जाएँ तो वह व्यक्ति अपने घर में प्रवेश महीं करता जब तक की वह अंजान व्यक्ति स्वयं बाहर न आजाए। ये लोग कहते हैं की "Woman is like a Flower anybody can smell it" अर्थात औरत एक फूल के समान है कोई भी इसकी खुशबू सूंघ सकता। ऐसे अनेक कारण हैं जिसकी वजह से इस्लाम ने सूअर के मांस को हराम कर दिया है। अब अंतिम बात बेशक आपको अजीब लग सकती है लेकिन आज विज्ञान भी कहने लगा है कि सूअर का मांस इंसान को नहीं खाना चाहिए। पश्चिमी देश वाले इस्लाम की

इस बात को स्वीकार करते तो शायद विश्व कई तरह की बिमारियों से बच सकता था।

दूसरी बात इस श्लोक में यह बताई गई है कि परमात्मा के आदेश से जो धर्म जारी किया जाएगा उसके मानने वाले "कुश" अर्थात पवित्र घास से शुद्ध नहीं होंगे बल्कि युद्ध द्वारा उनकी शुद्धी होगी।

कुश एक प्रकार की घास है। भारत में हिन्दु लोग इसे पूजा के काम में लाते हैं। धार्मिक दृष्टि से इस घांस को बहुत पवित्र समझा जाता है और इसकी चटाई पर राजा लोग भी सोते थे। आज भी धार्मिक कृत्यों और श्राद्ध आदि कर्मों में "कुश" का उपयोग होता है। परंतु इस श्लोक में यह बताया गया है कि वे लोग कुश द्वारा शुद्ध नहीं होंगे बल्कि युद्ध द्वारा उनकी शुद्धी होगी। क्योंकि हम जानते हैं कि कृतायुग में धर्म चार पैर पर था, त्रेतायुग में तीन पैर पर था, द्वापारयुग में दो पैर पर था और कल्युग में धर्म केवल एक पैर पर रह जाएगा यह भविष्यवाणी दी गई थी। इसी प्रकार पैग़ंबर मुहम्मद(स) का जो काल था वह कल्युग था धर्म एक पैर पर था अर्थात पाप अपने चरम पर था। ऐसे समय में कल्कि अवतार-नराशंस-अंतिम ऋषि पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने दुनिया में प्रकट होकर पापों को समाप्त किया और युद्ध द्वारा दुष्टों का नाश किया और धर्म राज स्थापित किया। इसी धर्म युद्ध के कारण मुसलमानों का शुद्धिकरण हुआ।

इस प्रकार इस श्लोक में जो बातें बताई गई थीं कि वे लोग सूअर के अतिरिक्त सब हलाल पशुओं का मांस खाने वाले होंगे और पवित्र घास से शुद्धि प्राप्त नहीं करेंगे बल्कि उनकी शुद्धि धर्म युद्ध द्वारा होगी, यह भविष्यवाणी भी मुसलमानों के द्वारा पूरी हुई।

प्रमाण - 42

तस्मान्मुसलवन्तो हि जातयो धर्मदूषकाः ।

इति पैशाचधर्मश्च भविष्यति मया कृतः ।।

(भविष्य पुराण :- प्रतिसर्गपर्व : 3, काण्ड : 3, अध्याय : 3, श्लोक : 27)

शब्दार्थ :-

तस्मात = इस से

मुसलवन् = मुसलमान

हि = निस्संदेह होगा

जातयः = क़ौम का

धर्मदूषकाः = धार्मिक क्रांति उत्पन्न करने वालों का

इति = यह

पैशाच = मांस खाने वालों का

धर्मः = धर्म

भविष्यति = होगा

मया = मुझ से

कृतः = बनाया हुआ।

अर्थ :- धर्म बिगाड़ने वाली क़ौमों से लड़ने भिड़ने वाले होने की वजह से वह मुसलमान कहलाएंगे, यह मांस खाने वाली क़ौम का धर्म मुझ से ही बनाया हुआ होगा।

व्याख्या :- हम जानते हैं कि परमात्मा परमेश्वर अल्लाह समय समय पर एक या एक से अधिक ऋषि, अवतार या नबियों को धरती पर भेजता रहा ताकि लोग पापों को त्याग कर पुण्य करे और परमात्मा की ओर आएँ। इस प्रकार हमको आज अनेक धर्म और अनेक ऋषि, अवतार या नबी नज़र आते हैं यह सब एक

ही परमात्मा की ओर से आए हैं और एक ही दिव्य संदेश लोगों को दिये हैं और वे लोग केवल एक देश के लिए, केवल एक समुदाय के लिए, एक समय तक के लिए आए थे और वे लोग दुनिया से जाने के बाद उनपर श्रद्धा रखने वालों ने इन ऋषि अवतार या नबियों की मुर्तियाँ स्थापित कर के इनकी पूजा प्रारंभ करदी। इस प्रकार आज हम दुनिया में अनेक देवी देवता, God-Goddess देखते हैं। इस प्रकार प्रत्येक धर्म में लोगों ने बिगाड़ पैदा कर दिया। हालांकि हिन्दू धर्म ग्रंथों में कहा गया है कि :

"न काष्टे विद्यते देवा न पाषाणे न मृण्मय।
भावेन विद्यते देवा यद् भवम् तद् भवति" ।।

(कश्यप स्मृति)

अर्थात : परमात्मा न लकड़ी में मिलता है न पत्थर में और न मिट्टी की मूर्ति में बल्कि परमात्मा अंदाज़े से या ध्यान से मिलता है।

इसी प्रकार अवोधूत गीता में कहा गया है कि

"तीर्थे दाने तपो यज्ञे काष्टे पाषाणे केषदा।
शिवम पष्यती मूढात्मा शिवो देहे प्रतिष्ठितः" ।।

अर्थात : समाधियों अथवा तीर्थ स्थलों की यात्रा में, दान धर्म में, कुर्बानी और यज्ञ में, लकड़ी और पत्थरों की मूर्तियों में मुर्ख इंसान परमात्मा को ढूंडता है हालांकि उसका परमात्मा उसके दिल में बैठा है वह उस को नहीं देखता।

और भगवत गीता अध्याय : 9, श्लोक : 25 में कहा गया है कि

"यान्ति देवव्रता देवान पितृन्यान्ति पितृव्रताः।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोपिमाम" ।।

अर्थात : जो भूतों को पूजे वो भूतों को पाए
जो पित्रों को पूजे वो पित्रों को पाए

सनम के पूजारी सनम से मिले
हमारे परस्तार हम से मिले ।।

हम जानते हैं कि प्रत्येक धर्म ग्रंथ में एक ही परमात्मा का वर्णन है जैसे ईसाईयों(Christians) की बाइबल(Bible) में लिखा है : Old Testament (पूर्वविधान) या पुराना नियम :

(1) Deuteronomy 4:35 (व्यवस्था विवरण)

"The Lord is God there is none else besides Him" अर्थात "वह प्रभू परमेश्वर है अर्थात उसके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं हैं"।

(2) Deuteronomy 6:4 में कहा गया है

"Hear O Israel, the Lord our God is One Lord" अर्थात "सुनो हे इस्राईल वह परमात्मा हमारा ईश्वर एक ही परमात्मा है"।

(3) Isaiah 45:5 (यशायाह) में कहा गया है

"I am the Lord and there in nonelse, there is no God besde Me" अर्थात "मैं ही परमात्मा हूँ, मेरे अतिरिक्त कोई नहीं, मेरे इलावा कोई परमात्मा नहीं है"।

New testamest (नवविधान) नया नियम

(1) Gospet of Mark 12:29 (मरकुस)

Jesus answered him "The first of all the Commandment is "Hear o Israel the Lord our God the Lord is one". अर्थात "यीशु ने उसे उत्तर दिया सब आज्ञाओं में से यह मुख्य है, हे इस्राएल सुन प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है"।

(2) 1st Corinthians 8:4 (प्रथम कुरिन्थिंयों)

"Well, we all know that an idol is not really a God and that there is only One God". अर्थात "हम सब जानते हैं कि मूरत वास्तव में परमात्मा परमेश्वर नहीं है और परमात्मा परमेश्वर तो केवल एक ही है"।

ऐसे कई बाइबल में वरसेस या श्लोक हैं जो केवल एक परमात्मा की ओर संकेत कहते हैं परंतु हम ईसाईयों को देखते हैं कि वे लोग यीशु(Jesus) की मूर्ति भी चर्चों में स्थपिक करते हैं और वे लोग Trinity अर्थात त्रित्व पर भी विश्वास रखते हैं। Trinity का अर्थ है कि एक ही ईश्वर में तीन व्यक्तियों को मानना, पिता पुत्र तथा पवित्र आत्मा(Father, Son and Holy Spirit) और इस प्रकार के अनेक बिगाड़ ईसाईयों ने अपने धर्म में उत्पन्न कर लिए हैं। यहाँ हम संक्षिप्त में बता रहें हैं।

इधर हिन्दु धर्म ग्रंथों में भी परमात्मा परमेश्वर के एक होने के अनेक प्रमाण मिलते हैं जैसे :

(क) कंठो उपनिषद में लिखा हुआ है **"एक ऐवो न द्वितीयो यथस्ते न ब्रह्मा न विष्णु न सूर्यो न अग्नी चंद्रा तारकः"**।

अर्थात :- वह परमात्म एक ही है दूसरा नहीं है उस समय से जबके न ब्रह्म थे, न विष्णु थे, न सूरज था, न आग थी और न चाँद तारे थे।

(ख) ऋग्वेद अध्याय : 1, सूक्त : 164, मंत्र : 46 में कहा गया है **"एकम सद विप्र बहुधा वदंती"**।

अर्थात :- वह एक ही सच है, ऋषियों ने उसके कई नाम दिए हैं।

(ग) इसी प्रकार शिव गीता अध्याय : 18, श्लोक : 17 में कहा गया है

"न माता न पिता तस्या न भ्राता न चमातुला: ।
न पुत्रोपी कल्तरम च न पौत्रों न च पुत्रिकः" ।।

अर्थात :- उसको न माँ है न बाप है न भाई है न मामू है। न बेटा है न पत्नी है, न पोता है न पोती है।

इस प्रकार परमात्मा परमेश्वर के एक होने के संबंध में हमें हिन्दू धर्म ग्रंथों में अनेक प्रमाण मिलते हैं। मैं आपके समक्ष संक्षिप्त में बता रहा हूँ। इस प्रकार प्रत्येक धर्म के मानने वालों ने अपने धर्म में बिगाड़ उत्पन्न कर लिए हैं। इसी कारण परमात्मा परमेश्वर अल्लाह ने इस बिगाड़ को ठीक करने के लिए अंतिम धर्म इस्लाम अंतिम ऋषि पैग़ंबर मुहम्मद(स) अंतिम ग्रंथ दिव्य कुरआन और अंतिम उम्मत अर्थात अंतिम समुदाय मुसलमानों को इस बिगाड़ को सुधार ने के लिए प्रकट किया है। और एकेश्वरवाद का संदेश अंतिम धर्म ग्रंथ दिव्य क़ुरआन में इस प्रकार है सूरह : 112, आयत : 104

"क़ुल हुवल लाहू अहद,

अल्लाहुस समद,

लम यलिद वलम युलद,

वलम यकुल लहू कुफुवन अहद"।

अर्थात : (ऐ नबी!) कह दीजिए कि वह (यानी) अल्लाह एक है। अल्लाह बे नियाज़ है। न जना उसने किसी को और न वह जना गया और नहीं है उसके जोड़ का कोई।

और इस अंतिम ग्रंथ यानी दिव्य क़ुरआन को कपिल गीता में "प्रणव वेद" कहा गया है, प्रणव के मानी हर वक़्त पढ़ा जाने वाला इसी को अरबी भाषा में क़ुरआन कहते हैं क़ुरआन का अर्थ भी हर वक़्त पढ़े जाने वाली ग्रंथ होता है, वह श्लोक यह है

"तारकं चैव ऋग्वेदो यजुर्वेदोहि दंडकं कुंडल्यम सामा वेदं।

अर्धचंद्रो रथर्वेदन बिंदुश्च सूक्ष्म वेदो प्रणव वेदोही बीजकं"॥

अर्थात : क़याम ऋग्वेद है, सजदा यजुर्वेद है, क़ाइदा सामवेद है, रुकू अथर्ववेद है और ये सब वेदों को सूक्ष्म रूप से अपने अंदर रखने वाला प्रणव वेद अर्थात दिव्य क़ुरआन है।

इसी प्रकार व्यास उपनिषद, श्रृति : 3, खाण्ड : 3 में भी दिव्य क़ुरआन का इस प्रकार वर्णन आया है

"इतिहासा पुराणा चंदाना नराश्याषि
इंजिलम जब्बुरम तौरेतानी सर्वं ने सत्यः
तद क़ुरआनम् नामकम् ग्रंथम सागच्छाति" ।।

यानी व्यास जी कहते हैं कि इतिहास पुराण इंजील जबूर तौरेत ये सब धर्म ग्रंथ सच्चे हैं लैकिन अंतिम धर्म ग्रंथ जिसका नाम क़ुरआन होगा उसमें ये सब ग्रंथ होंगे।

इसी प्रकार और एक स्थान पर कहा गया है कि

"संकल्पासिद्धं श्लोके षट सहस्र शताधिकं
सर्वशास्त्रार्थ तत्वनाम सारम श्रृति मनोहरम" ।।

व्यास जी कहते हैं एक ऐसी ग्रंथ आने वाली है जिसमें छह हज़ार छह सौ(6600) से अधिक श्लोक रहेंगे और वह दिलों को आकर्षित करने वाली होगी। हम जानते हैं की दिव्य क़ुरआन ही वह अंतिम धर्म ग्रंथ है जिसमें छह हज़ार छह सौ(6600) से अधिक श्लोक हैं।

और इस श्लोक में बताया गया है कि धर्म को बिगाड़ने वाली क़ौमों से लड़ने भिड़ने के कारण उनका नाम मुसलमान होगा। इस्लाम में लड़ना-भिड़ना तीन प्रकार का होता है पहला जिहाद बिल क़लम अर्थात कलम द्वारा युद्ध(War with Pen), दूसरा जिहाद बिल लिसान अर्थात जुबान द्वारा युद्ध(War with

Tongue) और तीसरा जिहाद बिस सैफ़ अर्थात तलवार द्वारा युद्ध(War with Sword) । जिहाद बिस्सैफ़ उसी समय किया जाता है जब दुष्ट और पापी आगे बढ़कर धर्म के प्रचार और प्रसार को रोकते हैं। इसीलिए मुसलमान का अर्थ होता है जो धर्म में बिग़ाड़ पैदा हुआ है उसको समाप्त कहने वाला।

दूसरी बात इस श्लोक में जो बताई गई है वह यह है कि यह मांस खाने वाली क़ौम का धर्म मुझ से ही अर्थात परमात्मा परमेश्वर से ही बनाया हुआ है।

मानव 84 लाख जीवों को सूक्ष्म रूप से अपने शरीर में रखने वाला होता है। इसलिए शास्त्रों में कहा गया है "यथा ब्रह्माण्ड तथा पिंडाण्ड" अर्थात ब्रह्माण्ड में जो कुछ है मानव के शरीर में मौजूद है । ब्रह्माण्ड पंच भूतों से बना है 1) आकाश, 2) वायू, 3) जल, 4) अग्नि और, 5) पृथ्वी। आकाश का संबंध मानव के कानों से है, वायू का संबंध मानव के सीने से है, अग्नि का संबंध नाभि से है, जल का संबंध मानव के गुप्तांग से है, पृथ्वी का संबंध मानव के गुदस्थान से है। इसी लिए इस्लाम जगत के महान कवि अल्लामा इक़बाल कहते हैं :

"राज़े ला महदूद का यह मख्तसर अफ़साना हैं
ला मकाँ के नापने का आदमी पैमाना है"

मालूम हुआ कि मानव अपने अंदर 84 लाख जीवों को सूक्ष्म रूप में रखता है उसके शरीर में शाकाहारी (Herbivorous) और मांसाहारी (Carnivorous) दोनों प्रकार के जीव (Animals) मौजूद होते हैं यही कारण है कि इंसान सर्वभक्षक (Omnivorous) है यानी शाकाहारी और मांसाहारी भोजन खाकर पचाने की क्षमता केवल मानव में है।

तो इस प्रकार इस श्लोक में जो भविष्यवाणी दी गई थी कि धर्मों में जो बिगाड़ पैदा होगा उसको समाप्त करने वाले मांस खाने वाले होंगे और उनका नाम मुसलमान होगा। तो यह भविष्यवाणी भी इस्लाम और मुसलमानों के द्वारा ही पूरी हुई और पैग़ंबर मुहम्मद(स) केवल एक देश, एक समुदाय एक समय सीमा

तक के लिए नहीं आए परंतु सारे विश्व, सारे ब्रह्माण्ड के लिए अंतिम ऋषि, जगत्गुरू बन कर आए हैं। दिव्य क़ुरआन पैग़ंबर मुहम्मद(स) के विषय में कहता है "वमा अर्सलनाका इल्ला रहमतल्लिल आलमीन" अर्थात "हे पैग़ंबर(स) हमने आप को सारे ब्रह्माण्ड के लिए दया सागर बनाकर भेजा है"।

प्रमाण - 43

आइये भविष्य पुराण के प्रतिसर्ग पर्व : 3, काण्ड : 3, अध्याय : 3 का सारांश देखते है।

(1) इस भविष्यवाणी में पैग़ंबर मुहम्मद(स) का नाम स्पष्ट रूप से "महामद" बता दिया गया है।

(2) अरब देश के रहने वाले बताया गया, शब्द "मरूस्थल" का अर्थ रेगिस्थान है।

(3) पैग़ंबर मुहम्मद(स) के शिष्यों का विशेष रूप से वर्णन किया गया शायद ही दुनिया में ऐसा कोई नबी होगा जिसने इस प्रकार अपने शिष्यों को अपने जैसा बना दिया हो।

(4) और कहा गया है कि वह पापों से मुक्त देवगुण रखने वाला होगा।

(5) भारत के राजा को पैग़ंबर मुहम्मद(स) से हार्दिक श्रद्धा होगी।

(6) पैग़ंबर मुहम्मद(स) की दुश्मनों से हिफ़ाज़त होगी और यह हिफ़ाज़त असाधारण रूप से होगी।

(7) पैग़ंबर मुहम्मद(स) शैतान अर्थात दुष्टों का नाश करने वाले होंगे और हर प्रकार के पाप को समाप्त करने वाले होंगे।

(8) पैग़ंबर मुहम्मद(स) "सच्चिदानन्दरूपिणे" अर्थात परमात्मा का रूप दिखाने वाले होंगे।

(9) पैग़ंबर मुहम्मद(स) को "पार्वती के नाथ" अर्थात मानव जाति के गौरव बताया गया है।

(10) और महर्षि व्यास अपने आपको पैग़ंबर मुहम्मद(स) के चरणों में आए हुए घोषित करते हैं।

यहाँ पर मैं आप से कुछ कहना चाहुँगा। आपने सुना कि ब्रह्मा जी ने क्या कहा और व्यास जी ने इसे बता दिया, वेद व्यास महर्षि जी ने पैग़ंबर मुहम्मद(स) को पापों से मुक्त और पवित्र कह कर आप(स) से श्रद्धा प्रकट की और कहा कि मैं आप(स) के चरणों में आया हूँ। हमारे हिन्दु दोस्त जो परमात्मा की ओर से अवतरित धर्म ग्रंथों में विश्वास रखते हैं और अपने ऋषि, मुनियों का सम्मान करते हैं क्या इनका कर्तव्य नहीं है कि वे अंतिम ऋषि पैग़ंबर मुहम्मद(स) पर विश्वास लाएँ और वेद व्यास जी और श्री ब्रह्मा जी की आज्ञा का पालन करें ?

आइये आगे का सारांश देखते हैं।

(11) अरब देश को दुष्ट और पापी बरबाद कर देंगे।

(12) इस देश में आर्य धर्म नहीं होगा।

(13) जिस प्रकार पहले अबराहा आदि दुश्मन नाश हुए इसी तरह यह दुश्मन भी नाश होगा।

(14) धर्म के दुश्मनों के सुधार और उनकी उन्नति के लिए पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने परमात्मा परमेश्वर अल्लाह से ब्रह्मा की उपाधि प्राप्त करली है और वह इन दुश्मनों को शुद्ध करने में व्यस्त रहेंगे।

(15) भारत के राजा को अरब देश जाने में खतरा है उसका तज़किया अर्थात शुद्धिकरण यहीं भारत में मुसलमानों के आने पर हो जाएगा।

(16) आर्य धर्म की भी सत्यता को वह स्वीकार करेंगे और आर्य धर्म को मानने वालों में जो बिगाड़ उत्पन्न होगा उसका परमात्मा के आदेश से सुधार करेंगे।

(17) पैग़ंबर मुहम्मद(स) के मानने वाले खतना किये हुए, बिना चोटी के, दाढ़ी वाले होंगे और दुनिया के धर्मों में क्रांति उत्पन्न करने वाले होंगे।

(18) अंतिम ऋषि का धर्म छुपा हुआ न होगा बल्कि हर मस्जिद के मीनार से उसकी ऊँचे स्वर में घोषणा की जाएगी।

(19) सूअर इनके धर्म में हराम अर्थात निषिद्ध होगा। बाक़ी सब खाने के योग्य पशु हलाल अर्थात वैध होंगे।

(20) हिन्दुओं में कुशा अर्थात घास पवित्र करने के लिए यज्ञ में प्रयोग होती है परंतु इस समुदाय अर्थात मूसलमानों का शुद्धिकरण धर्म युद्ध द्वारा होगा।

(21) धर्मों को बिगाड़ने वाले लोगों के साथ लड़ने-भिड़ने के कारण ही वह मुसलमान कहलाएँगे।

(22) यह मांस खाने वालों का धर्म परमात्मा का धर्म होगा।

यहाँ पर भविष्य पुराण - प्रतिसर्ग पर्व : 3, काण्ड : 3, अध्याय : 3, का सारांश पूरा हुआ। इन श्लोकों की संपूर्ण व्याख्या के लिए आप हमारे S.No. 31 से लेकर 42 तक के श्लोक देख सकते हैं।

अब यहाँ पर एक प्रश्न खड़ा होता हैं "आर्य धर्म होने के बावजूद इस्लाम धर्म की क्या अवश्यकता थी" ?

इस सारांश में आपने सुना की पैग़ंबर मुहम्मद(स) आर्य धर्म की सत्यता को मानेंगे। यहाँ यह व्याख्या की अवश्यकता है कि जब आर्य धर्म सारे धर्मों से श्रेष्ठ है तो फिर इस्लाम की क्या ज़रूरत है ? निस्संदेह जब कभी भी आर्य क़ौम या आर्य समुदाय को कोई धर्म या मज़हब दिया गया होगा वह ज़रूर उनके मार्गदर्शन और सुधार के लिए दूसरे तमाम धर्मों से श्रेष्ठ था होगा।

लेकिन मुहम्मद(स) के काल में आर्य धर्म की क्या हालत थी और इस म्लेच्छ धर्म या इस्लाम में क्या-क्या विशेषताएँ और क्या-क्या अच्छाइयाँ थीं वह महर्षि व्यास जी के अपने शब्दों में सुनने के योग्य है। जिससे पता चलता है कि उस समय से म्लेच्छ धर्म (इस्लाम) ही आर्य धर्म से श्रेष्ठ है। देखें भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पर्व : 3, काण्ड : 1, अध्याय : 4, श्लोक : 21-23, इन श्लोकों में बताया गया है कि "भारत में अयोध्या, मथुरा, काशी, आदि जो सात पवित्र पुरियाँ हैं उनमें अत्यचार हो रहा है। राक्षस, डाकू, भील, तथा मूर्ख लोग आर्यदेश-भारतवर्ष में भर गए हैं। म्लेच्छों के देश में म्लेच्छ धर्म (इस्लाम) के मानने वाले वीर और बुद्धिमान होंगे सारी विशेषताएँ मुसलमानों में रहेंगी और सब बुराइयाँ आर्य देश में होंगी। भारत और उसके द्वीपों में म्लेच्छों(मुसलमानों) का राज्य रहेगा, ऐसा समझकर हे मुनिश्रेष्ठ ! आप लोग हरि का भजन करें"।

अब दूसरा प्रश्न यह खड़ा होता है कि म्लेच्छ किसे कहते हैं ?

इन श्लोकों में आर्य और म्लेच्छ शब्द बार-बार आते हैं। आर्यों की हालत तो आप सुन चुके हैं। अब शब्द म्लेच्छ जो कि सामान्य रूप में बुरा अर्थ रखता है इस म्लेच्छ शब्द की प्रशंसा भी महर्षि वेद व्यास जी ने स्वयं की हैं वह कहते हैं :

"पुण्य कार्य और तेज़ बुद्धि, आध्यत्मिक महत्ता और देवताओं का सम्मान, जो व्यक्ति यह काम करता है उसको बुद्धिमान म्लेच्छ कहते हैं"।

क्या ऐसे समय जब आर्य धर्म तमाम बुराइयों का घर बन गया, यह ज़रूरी न था कि कोई ब्रह्मा जी अरब देश में पैदा होते और अरब के साथ-साथ आर्य धर्म का भी सुधार करते। इसलिए वेद व्यास महर्षि की भविष्यवाणी के अनुसार ऐसा ही हुआ। अब इस समय आर्यों को चाहिए कि वह इस बड़ी शान वाले, श्रेष्ठ, महान, प्रशंसनीय, प्रसिद्ध, पवित्र और पुण्यवान मार्गदशक पैग़ंबर

मुहम्मद(स) के अवतरण पर वेद व्यास महर्षि के कथनुसार परमात्मा परमेश्वर अल्लाह की स्तुति और भजन करें।

प्रमाण - 44

ALLAH UPANISHAD - अल्लाह उपनिषद

ALLOPANISHAD – अल्लोपनिषद

हरिःऊँ वरुण नु दिव्यानुदांत इल्लल्ले मित्र हीं अस्मल्लां इलल्ले मित्रा वरुणा दिव्यानि धत्ते इलल्ले वरुणो राजा पुनर्ददुः । हयामि मित्रो इल्लां इलल्ले इल्लां वरुण मित्रो तेजकामः ।।1।।

हुं होतारमिन्द्रो होता इन्द्रो रामा हासुरिन्द्रा ।। अल्लो ज्येष्टं श्रेष्टं परमं पूर्णं ब्रह्मण अल्लाम ।।2।।

हां अल्लो रसूल महमद रकबरस्य अल्लो अल्लां आदलाबूमेककं अलाबूक निखातकम ।।3।।

अल्लो यज्ञेन हुत्वा अल्ला सूर्यचन्द्र सर्व नक्षत्रा अल्लो ऋषीणां सर्वादिव्यां इन्द्राय पूर्वं माया परमं अंतरीक्षा ।।4।।

अल्लो पृथिव्यानिधत्ते इलल्ले वरुणो राजा पुनर्ददुः ।। इलल्ले रकबर इल्लां रकबर इल्लां इल्लेति इलल्ले ।।5।।

हरिः ऊँ अस्य इल्लां इलल्ले मित्रा वरुणो राजा पूर्ण दधुः ।। हयामि मित्रो इल्लां रकबर इल्लां रसूल महमद रकबरस्य अल्ले अल्लो पुण दधुः ।।6।।

अल्ला इलल्ला अनादि स्वरूपाय अथर्वणो शाखां ह्रीं जनान पशु संधान जलचरान अदृष्टं कुरु कुरु फट असुर संहारिणी ह्रां अल्लो रसूल महमद रकबरस्य अल्ले अल्लो इलल्लेति इलल्लाः ।।7।।

अल्लाह उपनिषद का सरल शब्दों में अनुवाद :-

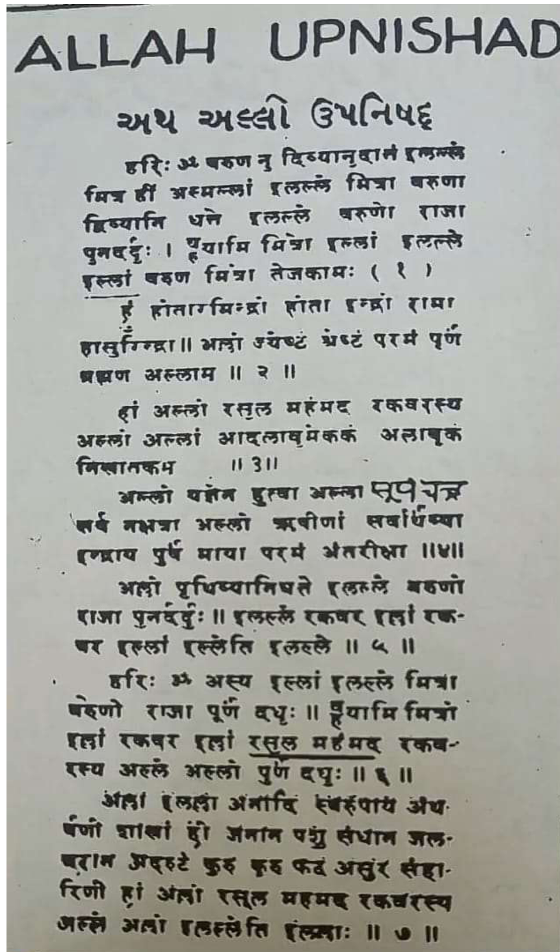
"इस देवता का नाम अल्लाह है वह एक है मित्रा, वरुणा, आदि इसके गुण हैं। निस्संदेह अल्लाह वरुणा है जो समस्त ब्रह्माण्ड का बादशाह है। दोस्तो इस अल्लाह को अपना परमेश्वर समझो वह वरुणा है और एक दोस्त की तरह वह तमाम लोगों के काम सँवारता है वह "इन्द्रा" है अज़ीमुश्शान इन्द्रा। अल्लाह सब से बड़ा सब से श्रेष्ठ सब से ज़्यादा संपूर्ण और सब से ज़्यादा पवित्र है। मुहम्मदुर रसूलुल्लाह(स), अल्लाह के महानतम पैग़ंबर हैं। अल्लाह प्रथम और अंतिम और सारी सृष्टि को बनाने वाला है। सारे अच्छे काम अल्लाह के लिए ही हैं वास्तव में अल्लाह ही ने यह सूरज, चाँद और सितारे पैदा किये हैं"।

अल्लाह ने सब ऋषि भेजे और आसमानों को पैदा किया। धरती और निवास स्थल को प्रकट किया। अल्लाह महान है उसके अतिरिक्त कोई पूजनीय नहीं। हे पुजारी (अथर्वा ऋषि) कह दे "ला इलाहा इलल्लाह"। अल्लाह अनादि काल से है वह सृष्टिकर्ता है वह सारे पापों और कष्टों को दूर करने वाला हैं मुहम्मद(स), अल्लाह के रसूल हैं जो इस जगत के गुरू हैं अतः घोषणा करो अल्लाह एक है उसके अतिरिक्त कोई परमेश्वर नहीं है।

व्याख्या :- हिन्दू धर्म ग्रंथों में वेदों के बाद उपनिषदों का महत्व है और इन उपनिषदों को परमात्मा की वाणी कहा जाता है। इसी कारण हिन्दु धर्म के बहुत सारे पंडित यह विश्वास करते हैं कि उपनिषद वेदों से भी बढ़कर है और वे कहते हैं कि यह दावा खुद उपनिषदों में मौजूद है क्योंकि वेदों का विषय केवल बारिश और खेती का ज़्यादा होना और धन और पशुओं को प्राप्त करना है परंतु उपनिषद दिव्य ज्ञान प्रदान करते हैं और सिखाते हैं कि किस तरह इंसान की आत्मा अपने परमात्मा में लीन हो सकती है। इसलिए कई उपनिषदों को वेदों का परिशिष्ट कहा जाता है परिशिष्ट अर्थात ग्रंथ का वह अंतिम भाग जिसमें आवश्यक या उपयोगी

बातें रहती हैं जो पहले न आ पाई हों। इसीलिए यजुर्वेद के अंतिम अर्थात चालीसवें अध्याय को **"ईश उपनिषद"** कहा जाता है।

अल्लो या अल्लाह उपनिषद का महत्व इसलिए भी है कि इसका अनुवाद गुजराती और दूसरी भाषाओं में मूलशब्द के साथ प्रकाशित किया गया है और प्रकाशित करने वाले खुद हिन्दू पंडित ही हैं। अब हम आपके सामने अल्लाह उपनिषद की फ़ोटो बता रहे हैं जिसको खुद हिन्दू पंडितों ने प्रकाशित किया है जिसमें अल्लाह, रसूल तथा <u>मुहम्मद</u> शब्द स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं।



ALLAH UPNISHAD

અથ અલ્લો ઉપનિષદ્

हरिः ॐ वरुण नु दिव्यानुधाने इल्लल्ले मित्र हीं अस्मल्लां इलल्ले मित्रा वरुणा दिव्यानि धत्ते इलल्ले वरुणो राजा पुनर्दुदुः। हयामि मित्रा इल्लां इलल्ले इल्लां वरुण मित्रा तेजकामः (१)

हूं होतारमिन्द्रो होता इन्द्रा रामा हासुरिन्द्रा॥ अल्लो ज्येष्ठं श्रेष्ठं परमं पूर्णं ब्रह्मण अल्लाम ॥ २ ॥

हां अल्लो रसुल महंमद रकबरस्य अल्लो अल्लां आदल्लाबुमेककं अल्लाबूकं निखातकम ॥ 3॥

अल्लो यज्ञेन हुत्वा अल्ला सूर्यचन्द्र सर्व नक्षत्रा अल्लो ऋषीणां सर्वादिव्या इन्द्राय पुर्व माया परमं अंतरीक्षा ॥४॥

अल्लो पृथिव्यामिधत्ते इलल्ले वरुणो राजा पुनर्दुदुः॥ इलल्ले रकबर इल्लां रकबर इल्लां इल्लेति इलल्ले ॥ ५ ॥

हरिः ॐ अस्य इल्लां इलल्ले मित्रा वरुणो राजा पूर्ण दधुः॥ हयामि मित्रो इल्लां रकबर इल्लां <u>रसुल महंमद</u> रकबरस्य अल्लं अल्लो पुर्ण दधुः ॥ ६ ॥

अल्ला इल्ला अनादि स्वरूपाय अथर्वणी शाखां हुं ह्रीं जनान पशुन सिधान जलचरान अदृष्टं कुरु कुरु फट् असुर संहारिणी हां अल्ला रसुल महमद रकबरस्य अल्लं अल्लां इलल्लेति इल्लाः ॥ ७ ॥

नागेन्द्र नाथ वसु जी जो एक हिन्दू पंडित थे उन्होंने अपनी पुस्तक "विश्व कोष" जिसको अंग्रेज़ी में "Encyclopedia Indica" कहते हैं उसके दूसरे भाग में जो कोलकाता से प्रकाशित की गई है। उसमें लिखा है कि अल्लाह उपनिषद में परमेश्वर की प्रशंसा के गीत गाए गएं हैं और अल्लाह, परमेश्वर या ब्रह्मा का नाम है लेकिन इस पुस्तक के तीसरे भाग में यह दिखाने की भी कोशिश की गई है कि यह उपनिषद अविश्वसनीय(Unbelievable) है।

इसी दावे के समर्थन में यह बयान किया गया है कि इस उपनिषद को देखकर बहुत से हिन्दू मुसलमान बन गए और यह कि इसे एक नव मुस्लिम अर्थात इस्लाम स्वीकार करने वाले पंडित ने तैयार किया था। अब विचार करने योग्य बात यह है कि अगर यह उपनिषद किसी नव मुस्लिम की लिखी हुई है तो फिर यह किस तरह हिन्दुओं के घरों में उपनिषदों के नाम से पहुँच गई और किस तरह यह बंगाल में कोलकाता से दकन में औरंगाबाद पहुँची जहाँ हिन्दू पंडितों ने इसे उपनिषद के नाम से प्रकाशित किया और ऐसा क्यों हुआ कि मुंबई में हिन्दू पंडितों ने इसे गुजराती में अनुवाद कर के छापा और प्रकाशित किया और फिर यह कैसे हुआ कि संस्कृत भाषा के शब्द कोष में माहेर(निपुण) लोगों ने इस अल्लोपनिषद पर ग़ौर कर के इसको स्वीकार किया।

मज़ेदार बात वह है जिसको आर्या समाजियों ने प्रस्तुत किया है कि यह सूक्त अर्थात अल्लाह उपनिषद अथर्ववेद में मिलाया गया है लेकिन उन्होंने यह न सोचा कि ऐसा कह कर वे वेदों के दर्जे(Position) को संदिग्ध और अविश्वसनीय बना रहे हैं। जब एक मुसलमान की पुस्तक वेदों में जगह पा सकती है तो हिन्दू पंडितों ने खुद इसमें क्या नहीं मिलाया होगा। ऐसे विष के कारण पवित्र वेद ज़हरीले और बेजान हो जाते हैं।

ऐसे लोगों की मुर्खतापूर्ण बातें सुनकर आश्चर्य होता है हालांकि यह विचार आ सकता है कि कोई ग़रीब पंडित ने मुसलमानों में आदर और सम्मान

प्राप्त करने के लिए यह काम किया हो लेकिन राजा राधा कांत जी जैसे मालदार और धनि जिन्होंने "शब्द कल्पद्रुम" नामक शब्दकोष की पुस्तक लिखी है। इनको किस चीज़ ने अपनी शब्दकोष में यह लिखने पर मज़बूर किया कि अल्लाह उपनिषद अथर्ववेद का उपनिषद है। फिर यह कैसे हुआ कि पुस्तक "वाचस्पत्यम्" जो संस्कृत भाषा की एक प्राचीन शब्दकोष है इसके लेखक ने इस पुस्तक में अल्लाह सूक्त का वर्णन मुसलमानों के भारत में आने से बहुत पहले किया था। इस प्रकार जो लोग यह कहते हैं कि अकबर बादशाह ने हमारे पंडितों को धन देकर हमारे धर्म ग्रंथों में अल्लाह-मुहम्मद का नाम लिखवाया झूठ साबित होता है।

अल्लाह उपनिषद की नकल(Copy) जो औरंगाबाद में छापी गई थी जिसका वर्णन राजा राधा कांत बहादुर जी की शब्दकोष "शब्द कल्पद्रुम" में किया गया और जो मुंबई में गुजराती अनुवाद के साथ प्रकाशित हुई किसी मुसलमान के घर से हासिल नहीं की गई थी बल्कि अल्लोपनिषद के हाथ से लिखे हुए प्राचीन कॉपियाँ हिन्दू पंडितों के ग्रंथालयों की शोभा बनीं रहीं जो इन पवित्र ग्रंथों को अपनी जान से ज्यादा प्रिय रखते थे और इन्हें हज़ारों साल सावधानी और सुरक्षा से रखा और जो मुसलमानों का ऐसी पवित्र ग्रंथो को छूना भी पाप समझते थे लेकिन जब कोई व्यक्ति ठानले कि सत्य कितना ही प्रकाशमान क्यों न हो स्वीकार नहीं करूँगा तो फिर इसका क्या इलाज किया जाए। हाँ एक बुद्धिमान व्यक्ति इस संभावना को मान सकता है कि हिन्दू पंडितों ने इन ग्रंथो को प्रकाशित करते समय मात्र पक्षपात या तरफ़दारी के कारण इनके मूलग्रंथ(Text) को बिगाड़ दिया हो ताकि यह अस्पष्ट(Unclear) हो जाएँ और समझ में न आएँ लेकिन यह समझना कि इन हिन्दू पंडितों ने अपने ही धर्म ग्रंथों में अपने ही धर्म के विरुद्ध बातें मिलाई है नासमझी और मूर्खता है।

जिस तरह भविष्य पुराण में पैग़ंबर मुहम्मद(स) का नाम, उनके देश, उनके समुदाय का वर्णन किया गया है उनके शिष्यों की प्रशंसा में गीत गाए गएँ हैं और इनके धर्म को परमात्मा का स्थापित किया हुआ धर्म कहा गया है इसी तरह अल्लाह उपनिषद में इस्लाम के कलमे अर्थात महामंत्र का दो जगह वर्णन आया है और पैग़ंबर मुहम्मद(स) के पवित्र नाम का वर्णन भी और फिर इस कलमे तौहीद अर्थात एकेश्वरवाद के मंत्र पर जोर दिया गया है। इस मंत्र में हम अल्लाह उपनिषद के उस पेज की फोटो दिखा रहे है जिसको खुद हिन्दू पंडितों ने ही प्रकाशित किया था। जिसमें अल्लाह, रसूल, मुहम्मद, आदि शब्दों का वर्णन है ताकि सत्य को खोजने वाले हिन्दू भाईयों के लिए अंतिम और संपूर्ण दलील मिल जाए और वह अपने ऋषि, मुनियों के आदेश के अनुसार पैग़ंबर मुहम्मद(स) पर विश्वास लाएँ कर्योंकि पैग़ंबर मुहम्मद(स) की उच्च शिक्षा हिन्दू मत की छूत-छात और जात-पात की लानत से मुक्ति प्रदान करती है और एकेश्वरवाद के शुद्ध और संपूर्ण धार्मिक विश्वास को मज़बूत करती है ताकि लोग इह लोक और परलोक में सफलता प्राप्त कर के परमात्मा में लीन हो जाएँ।

प्रमाण - 45

संग्राम पुराण की भविष्यवाणी :-

यहां न पक्षपात कछु राखहुं।
वेद, पुराण, संत मत भखहुं॥
संवत विक्रम दोऊ अनंगा।
महाकोक नस चतुर्पतंगा॥
राजनीति भव प्रीति दिखावै।

आपन मत सबका समझावै ।।

सुरन चतुसुदर सतचारी ।

तिनको वंश भयो अति भारी ।।

तब तक सुन्दर मद्दिकोया ।

बिना महामद पार न होया ।।

तबसे मानहु जन्तु भिखारी ।

समरथ नाम एहि व्रतधारी ।।

हर सुन्दर निर्माण न होई ।

तुलसी बचन सत्य सच होई ।।

(संग्राम पुराण :- स्कन्द : 12, काण्ड : 6, पद्यानुवाद : गोस्वामी तुलसीदास)

पंडित धर्मवीर उपाध्याय जी ने इन श्लोकों का भावानुवाद इस प्रकार किया है।

तुलसीदास जी कहते हैं : "मैंने यहाँ किसी प्रकार का पक्षपात न करते हुए संतों, वेदों और पुराणों के मत को कहा है। सातवीं विक्रमी सदी में चारों सूर्यों के प्रकाश के साथ वह पैदा होगा। राज करने में जैसी परिस्थितियाँ हों, प्रेम से या सख्ती से वह अपना मत सभी को समझा सकेगा। उसके साथ चार देवता(प्रमुख सहयोगी) होंगे, जिनकी सहायता से उसके अनुयायियों की संख्या काफ़ी हो जाएगी। जब तक सुन्दर वाणी(क़ुरआन) धरती पर रहेगी (उसके) और मुहम्मद(हज़रत मुहम्मद (स)) के बिना मुक्ति नहीं मिलेगी। इंसान, भिखारी, कीड़े-मकोड़े और जानवर इस व्रतधारी का नाम लेते ही ईश्वर के भक्त हो जाएँगे। फिर कोई उसकी तरह का पैदा न होगा (अर्थात, कोई रसूल नहीं आएगा), तुलसीदास जी ऐसा कहते हैं कि उनका वचन सत्य सिद्ध होगा"।

व्याख्या :- संग्राम पुराण की गिनती पुराणों में की जाती है। इस पुराण में भी ईश्वर के अंतिम ईशदूत पैग़ंबर हज़रत मुहम्मद(स) के आगमन(Arrival) की

भविष्यवाणी मिलती है। पंडित धर्मवीर उपाध्याय जी ने अपनी मशहूर किताब "अंतिम ईश्वरदूत" में लिखा है काकभुशुण्डि जी और गरूड़ जी दोनों राम जी की सेवा में बहुत समय तक रहे। वे राम जी के उपदेशों को न केवल सुनते ही रहे, बल्कि लोगों को सुनाते भी रहे। इन्हीं उपदेशों की चर्चा जो संस्कृत भाषा में थी तुलसीदास जी ने "संग्राम पुराण" के अपने अनुवाद में की है, जिसमें शंकर जी ने अपने पुत्र षण्मुख को आनेवाले धर्म और अवतार(ईशदूत) के विषय में भविष्यवाणी दी है।

यहाँ मैं एक बात स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि संग्राम पुराण की गिनती भले ही अर्वाचीन या नये पुराणों में की जाती हो लेकिन इसका आधार प्राचीन हिन्दू धर्मग्रंथ ही हैं।

इस संग्राम पुराण के 12 वें स्कन्ध के 6 वें कांड में जो भविष्यवाणी दी गई है उसमें चार बातों का स्वष्टीकरण ज़रूरी है।

(1) इस भविष्यवाणी में बताया गया है कि उसके साथ चार देवता होंगे। हम जानते हैं कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) के चार शिष्य सब से निकट थे जो अपने अंदर देवगुण रखने वाले थे। जिन्हें खुलफ़ा-ए- राशिदीन(उत्तरधिकारी) कहा जाता है। पहले हज़रत अबूबकर सिद्दीक़(रज़िअल्लाह अनहु), दूसरे हज़रत उमर(र), तीसरे हज़रत उसमान-ए-ग़नी(र) और चौथे हज़रत अली(र), यह चारों पैग़ंबर मुहम्मद(स) के खास सहयोगी थे और इन्हीं की ओर संकेत करते हुए हिन्दू धर्म ग्रंथों में पैग़ंबर मुहम्मद(स) को "चतुर्भुजं" भी कहा गया है अर्थात चार हाथ वाले और इन्हीं चार शिष्यों द्वारा परमात्मा का संदेश विश्व की चारों दिशाओं में फैला।

(2) दूसरी बात इस भविष्यवाणी की जो स्पष्टिकरण के योग्य है वह है सुन्दर वाणी। सुन्दर वाणी अर्थात दिव्य कुरआन है जिसको सुनकर दुश्मन भी अपने आपको भूल जाते थे। ऐसे अनेक घटनाएँ हमें इस्लामिक इतिहास में मिलते हैं। मैं यहाँ पर एक घटना का वर्णन करना चाहता हूँ वह यह कि मक्का शहर के सभी दुश्मन

कुरआन को सुनने के लिए छिप-छिप कर काबा पुण्य क्षेत्र के पास आते क्योंकि प्रातः काल की नमाज़ जिसको फ़जर कहा जाता है जो सुबह 5 बजे के लगभग होती है तो यह लोग अंधेरे में आकर नमाज़ में जो दिव्य कुरआन पढ़ा जाता उसको छिपकर सुनते और जब नमाज़ समाप्त हो जाती तो थोड़ी सी रोशनी छा जाती जिसके कारण वह एक दूसरे को देख लेते और क़सम खाते कि दुबारा इस दिव्य क़ुरआन को नहीं सोनेंगे परंतु फिर वे लोग छिपकर आते और दिव्य कुरआन सुनते। क्योंकि वे लोग अरबी भाषा जानते थे इसी कारण उनको दिव्य क़ुरआन की सुन्दरता और आध्यात्मिक शक्ति ने आकर्षित किया था। परंतु उनके दुष्कर्म इस दिव्य वाणी को स्वीकार करने से रोकते थे। इस से यह बात स्पष्ट होती है कि दिव्य क़ुरआन एक सुन्दर वाणी है जो परमात्मा की ओर से अवतरित हुई है।

(3) तीसरी बात जो इस भविष्यवाणी में बताई गई है वह यह है कि सुन्दर वाणी अर्थात दिव्य कुरआन और अंतिम ऋषि पैग़ंबर मुहम्मद(स) के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं होगी। क्योंकि पैग़ंबर मुहम्मद(स) और दिव्य कुरआन ही लोगों को छूत-छात, जात-पात से मुक्त कर सकते हैं और एकेश्वरवाद की शिक्षा प्रदान करके सबका उद्धार कर सकते हैं और सर्व अवतार सत्य, सर्व धर्म ग्रंथ सत्य की घोषणा द्वारा सारे मानव को एकत्र कर सकते हैं। इस प्रकार सारे विश्व में शांति स्थापित हो सकती है।

(4) चौथी बात जो इस भविष्यवाणी में बताई गई है वह यह है कि "फिर कोई उसकी तरह का पैदा न होगा" अर्थात वह अंतिम ऋषि होंगे। हम जानते हैं कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) से पहले दुनिया में एक लाख चौबीस हज़ार(1,24,000) अवतार या नबी आए हैं। वे केवल एक समुदाय के मार्गदर्शन के लिए या केवल एक देश के लिए या केवल एक समय सीमा तक के लिए आते थे परंतु अंतिम ऋषि पैग़ंबर मुहम्मद(स) सारे ब्रह्माण्ड के मार्गदर्शन के लिए अवतरित किये गए हैं। इसके प्रमाण में दिव्य कुरआन कहता है "वमा अरसल-नाका इल्ला रहमतल

लिल आलमीन" अर्थात "हे पेग़ंबर हम आपको सारे ब्रह्मण्ड के लिए दया सागर बना कर भेजे हैं" और दूसरे स्थान पर दिव्य कुरआन कहता है "क़ुल या अय्युहन्नासु इन्नी रसूलुल्लाहि इलेकुम जमीअ" अर्थात "कह दीजिए हे पैग़ंबर मुहम्मद(स) ऐ लोगो मैं तुम सब के लिए अल्लाह का रसूल बनाकर भेजा गया हूँ"। और दिव्य कुरआन में पैग़ंबर मुहम्मद(स) को "खातमन्नबिय्यीन" कहा गया है अर्थात आखरी(Last) पैग़ंबर। इस प्रकार पैग़ंबर मुहम्मद(स) की तरह अब दूसरा कोई पैदा न होगा।

और इसी संग्राम पुराण में कलमा-ए-तय्यबा अर्थात कलयुग का महामंत्र कुछ इस तरह लिखा हुआ है :

"ला इलाहा हरणे पापं इल्लल्लाहु परम पदं

जन्म वैकुंठ प्राप्त अनोति तू जपे नामे मुहम्मदं"।

अर्थात "ला इलाहा" कहने से आपके पाप नाश हो जाएंगे, "इल्लल्लाह" कहने से आपका आध्यात्मिक उत्थान होगा और "पैग़ंबर मुहम्मद(स)" का नाम जप करने से आप स्वर्ग में जाएँगे।

और एक जगह सग्रांम पुराण में कहा गया है कि

जब संग्राम का दिन होवे।

बिना मुहम्मद नय्या पर न होवे॥

अर्थात "जब प्रलय या क़यामत का दिन होगा तब बिना पैग़ंबर मुहम्मद(स) को माने मुक्ति न होगी"।

इस प्रकार हम देखते हैं कि संग्राम पुराण में तुलसी दास महाराज ने पैग़ंबर मुहम्मद(स) की न केवल प्रशंसा की है बल्कि आप(स) को मानने और आप(स) का महामंत्र जप करने की भी लोगों को आज्ञा दी है।

प्रमाण - 46

हज़रत मुहम्मद(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ही कल्कि अवतार हैं।

हिन्दू धर्म ग्रंथों के अनुसार महाविष्णु के दस(10) प्रमुख अवतार बताए गए हैं जो हिन्दू धर्म ग्रंथों में भगवान विष्णु के "दशावतार" के नाम से प्रसिद्ध हैं उनके नाम ये हैं :

(1) मत्स्य, (2) कूर्म, (3) वराह, (4) नरसिंह, (5) वामन, (6) भार्गव, (7) राघव, (8) कृष्ण, (9) बौद्ध, (10) कल्कि।

संस्कृत के बहुत बड़े विद्वान डॉ. वेदप्रकाश उपाध्याय जी जिन्होंने प्रयाग विश्वविध्यालय से संस्कृत में एम. ए (M.A) किया और बहुत सारे पुरस्कार(Awards) प्राप्त किए हैं । उन्होंने अपने एक शोधपत्र(Research Letter) में मुहम्मद(स) को कल्कि अवतार बताया है और इन्होंने कई पुस्तकें पैग़ंबर मुहम्मद(स) के बारे में लिखी हैं। इनमें से एक **"कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब"** और दूसरी **"नराशंस और अंतिम ऋषि"** प्रसिद्ध हैं। वेद प्रकाश उपाध्याय जी ने अपनी दूसरी पुस्तक में वेदों में जिस नराशंस का वर्णन किया गया है वह पैग़ंबर मुहम्मद(स) ही हैं यह आपने इस पुस्तक में सिद्ध किया और पहली पुस्तक "कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब" में आपने कल्कि और मुहम्मद(स) की विशेषतओं का तुलनात्मक अध्ययन कर के यह सिद्ध कर दिया है कि "कल्कि" का अवतार हो चुका है और वह "हज़रत मुहम्मद(स)" ही हैं और इनकी इस पुस्तक की प्रामाणिकता को कई विद्वान पंडितों ने स्वीकार किया है जिनके लेख उसी पुस्तक में मौजूद हैं।

"अवतार" का अर्थ है ऊँचे स्थान से नीचे स्थान पर उतरना। विशेषकर यह शुभ शब्द उन उत्तम आत्माओं के लिए प्रयोग किया जाता है, जो धरती पर

कुछ अद्भुत कार्य करते हैं जो परमात्मा की ओर से भेजे हुए होते हैं जिनको नबी या अवतार (Prophet) भी कहा जाता है।

कल्कि अवतार को ईश्वर का अन्तिम अवतार बताया गया है। "ईश्वर का अवतार" शब्द में "का" शब्द सम्बन्धकारक चिह्न है, अतः ज़ाहिर है कि ईश्वर से जिस व्यक्ति का संबंध है उसका अवतीर्ण होना। प्रश्न यह खड़ा होता है कि ईश्वर से किसका संबंध रहता है उत्तर है कि उसके भक्त का ही ईश्वर से संबंध रहता है। ऋग्वेद में ऐसे व्यक्ति को "कीरि" कहा गया है। हिन्दी में "कीरि" शब्द का अर्थ "ईश्वर का प्रशंसक" और अरबी में "अहमद" होता है। लेकिन क्या ईश्वर का प्रशंसक "कीरि" या "अहमद" एक नहीं हो सकता। हर देश और हर समय के लिए अलग-अलग अवतार हुए हैं क्योंकि एक अवतार से पूरे विश्व का कल्याण नहीं हो सकता था। इसलिए दुनिया में अंतिम अवतार पैग़ंबर मुहम्मद(स) से पहले एक लाख चौबीस हज़ार(1,24,000) अवतार या नबी आए हैं। क़ुरआन में है कि हर देश में, हर समुदाय में और हर काल में रसूल(संदेशवाहक) भेजे गए हैं। अंतिम अवतार कल्कि की अलग विशेषता है। वह किसी एक हिस्से के लिए नहीं बल्कि सारे ब्रह्माण्ड के लिए भेजे गए हैं।

जब लोग वास्तविक धर्म से विमुख होकर अधर्म की राह पकड़ लेते हैं या धर्म को अपने स्वार्थ के लिए तोड़-मरोड़ देते हैं, तो उन्हें फिर सही मार्ग दिखाने के लिए ईश्वर अपने अवतार या नबी को भेजता है।

अब हमें यह जानना होगा कि अंतिम अवतार के आने के लक्षण क्या होंगे।

कल्कि के अवतरित होने का समय उन परिस्थितियों में बताया गया है, जबकि बर्बरता और साम्राज्य होगा, लोगों में हिंसा और अराजकता का बोल बाला होगा, दूसरों को मारकर उनका धन लूट लेना, लड़कियों को पैदा होते ही ज़मीन में दफ़न कर देना, एक ईश्वर को छोड़कर कई देवी-देवताओं की पूजा करना,

पेड़ पौधों एवं पत्थरों को ईश्वर मानने की प्रवृत्ति, भलाई की आड़ में बुराई करने की प्रवृत्ति, असमानता, इत्यादि परिस्थितियाँ होंगी। ऐसे ही नाज़ुक दौर में हज़रत मुहम्मद(स) भेजे गए थे। सातवीं शताबदी के शुरू में रोमन और पर्सियन साम्राज्यों की जितनी बुरी अवस्था थी, उतनी शायद कभी नहीं हुई। बाइजेन्टाइन साम्राज्य के कमज़ोर हो जाने से सम्पूर्ण शासन भ्रष्ट हो चुका था। पादरियों के दुष्कर्मों और दुष्टताओं के फलस्वरूप ईसाई धर्म(Christianity) बहुत गिर गया था। उस समय हज़रत मुहम्मद(स) भेजे गए। इस्लाम धर्म रोमन साम्राज्य के संघर्षों से दूर था। इस्लाम धर्म के भाग्य में यही लिखा था कि यह तूफ़ान की तरह से संपूर्ण पृथ्वी पर छा जाएगा और अपने समक्ष बहुत से साम्राज्यों, शासकों और प्रथाओं को इस तरह उड़ा देगा जैसे कि आँधी मिट्टी को उड़ा देती है। गिरजाघर(Church) के पादरियों ने धर्म के टुकड़े-टुकड़े कर डाले थे और शांति, प्रेम एवं अच्छाइयाँ लुप्त हो गई थीं। वे मूल धर्म को भूल गए थे। धर्म के विषय में अपने तरह-तरह के विचार प्रस्तुत कर के परस्पर लड़ाई-झगड़ा करते रहते थे। और रोमन गिरजाघरों में बहुतसी भ्रम की बातें धर्म के रूप में मानी जाने लगीं और मूर्ति पूजा बहुत ही निर्लज्जता से की जाने लगी। इसके परिणाम स्वरूप एक ईश्वर के स्थान पर तीन ईश्वर(Trinity) हो गए और मरयम(येशु की माँ) को ईश्वर की माँ समझा जाने लगा। अज्ञानता के इस दौर में अल्लाह ने अपना अंतिम रसूल पैग़ंबर मुहम्मद(स) की सूरत में भेजा।

दूसरी बात ध्यान देने की यह है कि अंतिम अवतार उस समय होगा जबकि युद्धों में तलवार का प्रयोग होता होगा और घोड़ों की सवारी की जाती हो। भागवत पुराण :- स्कंध : 12, अध्याय : 2, और श्लोक : 19 में उल्लेख है कि "देवताओं द्वारा दिए गए तेज़ रफ़तार छोड़े पर चढ़कर आठों ऐश्वर्यों और गुणों से युक्त जगत्पति तलवार से दुष्टों का दमन करेंगे"। तलवारों और घोड़ों का समय तो अब समाप्त हो चुका है। आज से लगभग चौदह सौ(1,400) वर्ष पूर्व तलवारों

और घोड़ों का प्रयोग होता था। उसके लगभग सौ(100) वर्ष बाद से बारूद का निर्माण, सोड़ा और कोयला मिलाकर होने लगा था। वर्तमान समय में तो घोड़ों और तलवारों का स्थान टैंकों और मिसाइलों आदि ने ले लिया है।

कुछ हिन्दू भाईयों की यह मान्यता है कि कल्कि अवतार कल्युग के अंत में आएंगे, जिसका कोई प्रमाण नहीं है क्योंकि जब बीमारि ज़्यादा हो जाती है तो डाक्टर आता है इसी प्रकार जब पाप बढ़ जाते हैं तो अवतार प्रकट होता है और स्वामी शुकमुनी जी ने श्री कृष्ण जी से दिव्य ज्ञान पाकर भविष्यवाणी की है कि कल्कि अवतार कल्युग के 3,658 वर्ष के बाद होंगे। अब अर्थात 2022 ईसवी को कल्युग के 5,124 वर्ष हो चुके हैं अगर हम 3,658 को 5,124 से कम(Minus) कर दें तो पता चल जाएगा कि कल्कि अवतार आज से 1,466 वर्ष पहले जन्म ले चुके हैं। हम जानते हैं कि साढ़े चौदाह सौ वर्ष पूर्व धरती पर केवल एक ही महान पुरूष ने जन्म लिया था जिनका नाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा अहमद ए मुजतबा सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम हैं।

महाविष्णु के दसवें अवतार हज़रत मुहम्मद(स) के बारे में हज़ारों साल पहले कृता, त्रेता, द्वापार युग के अवतारों, ऋषियों और मुनियों ने बहुत सारी भविष्यवाणियों का वर्णन किया है। जैसे अंतिम ऋषि कल्कि अवतार का जन्म कहाँ और किस देश में होगा, उनके माता-पिता का नाम क्या होगा, उनका पुण्यक्षेत्र कैसा होगा, उनका मुक्ति मंत्र क्या होगा, वह कौन सी तारीख को, कौन से महीने में, कौन से दिन, कौन से समय जन्म लेंगे, उनकी प्रार्थना कैसी रहेगी, उनका भौतिक और आध्यात्मिक वाहन या सवारी क्या होगी, उनके शिष्य कैसे रहेंगे, उनका नाम क्या होगा, वह किस से शादी करेंगे, आदि-आदि। इन सब बातों का वर्णन हमें हिन्दू धर्म ग्रंथों में मिलता है। जिनको हम हमारे आने वाले श्लोकों में परमात्मा की इच्छा से बताएँगे। और मैं आप सब से यह अनुरोध करता हूँ कि आप डॉ वेद प्रकाश उपाध्याय जी के पुस्तकें "कल्कि अवतार और मुहम्मद

साहब" और "नराशंस और अंतिम ऋषि" और डॉ. एम. ए. श्री वास्तव जी की पुस्तक "हज़रत मुहम्मद(स) और अंतिम धर्म ग्रंथ" और क्यू एस खान जी की पुस्तक "पवित्र वेद और इस्लाम धर्म" और मौलाना अब्दुल हक़ विध्यार्थी साहब की पुस्तक "मीसाक़ुन्नबिय्यीन" का अध्ययन करें।

प्रमाण - 47

सम्भलग्राममुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मनः।
भवने विष्णुयशसः कल्किः प्रादुर्भविष्यति ॥

(श्रीमद भगवत पुराण :- स्कंध : 12, अध्याय : 2, श्लोक : 18)

अनुवाद :- उन दिनों सम्भल ग्राम में विष्णुयश नाम के एक श्रेष्ठ ब्रह्मण होंगे वह बहुत बड़े दानी होंगे उनका हृदय परमात्मा की भक्ति से भरा हुआ होगा, उन्हीं के घर कल्कि अवतार प्रकट होगें।

व्याख्या :- कल्कि अवतार का वर्णन श्री मद्भागवत पुराण, विष्णु पुराण, कल्कि पुराण, भविष्य पुराण आदि कई पुराणों में आता है। विष्णु के प्रमुख दस अवतारों में कलयुग में होने वाले यह अन्तिम अवतार हैं। कल्कि अवतार कलयुग में सत्युग की स्थापना करेंगे। अतः कलि का नाश करने के कारण इनका प्रसिद्ध नाम "कल्कि" होगा।

पुराणों द्वारा स्पष्ट है कि श्री कल्कि अवतार की जन्म भूमि सम्भल या शम्भल ग्राम है।

सम्भल ग्राम, मुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मनः।
भवने विष्णुयशसः कल्कि प्रादुर्भविष्यति ॥

अर्थात :- उन दिनों सम्भल ग्राम में विष्णुयश नाम के एक श्रेष्ठ ब्राह्मण होंगे वह बहुत बड़े दानी होंगे और उनका हृदय परमात्मा की भक्ति से भरा हुआ होगा, उन्हीं के घर कल्कि अवतार प्रकट होंगे।

यह बात तो स्पष्ट है कि कल्कि अवतार सम्भल ग्राम में पैदा होंगे। परंतु केवल ग्राम के नाम से ही संतोष नहीं हो सकता, जबतक कि उसका पूरा विवरण न हो। पहले यह निश्चय करना जरूरी है, कि "शम्भल" ग्राम का नाम है या किसी ग्राम का विशेषण(Adjective) है। संज्ञा(Noun) अथवा सर्वनाम(Pronoun) की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। जैसे अच्छा लड़का, तीन पुस्तकें, नई क़लम इत्यादि। इनमें अच्छा, तीन और नई शब्द विशेषण है जो इन शब्दों की विशेषता बताते हैं। शम्भल किसी ग्राम का नाम नहीं हो सकता, क्योंकि यदि केवल किसी ख़ास ग्राम को शम्भल नाम दिया गया होता तो उसका स्थान भी बतलाया गया होता। परन्तु पुराणों में कहीं भी शम्भल ग्राम का स्थान नहीं बतलाया गया है। भारत में खोजने पर यदि कहीं शम्भल नामक ग्राम मिलता भी है, तो वहाँ आज से लगभग साढ़े चौदह सौ वर्ष पहले कोई पुरूष ऐसा नहीं पैदा हुआ जो लोगों का मार्गदर्शक और उद्धारक हो। फिर अन्तिम अवतार कोई खेल तो नहीं है कि अवतार हो जाए और समाज में ज़रा सा परिवर्तन भी न हो, अतः "शम्भल" शब्द को विशेषण मान कर उसका अर्थ जानना ज़रूरी है।

"शम्भल" शब्द "शम्"(शान्त करना) धातु से बना हैं अर्थात जिस स्थान में शान्ति मिले और इसका दूसरा अर्थ है अपनी ओर लोगों को आकर्षित करना और "शम्भर" शब्द का अर्थ "जल के समीप का स्थान" भी होता है।

अन्तिम अवतार के स्थान के विषय में केवल इतना ही विचारणीय है कि वह स्थान, जिसके आस-पास जल हो और वह स्थान आकर्षक एवं शांतिदायक हो। अवतार की भूमि पवित्र होती है, अतः उस स्थान में भी पवित्रता होनी चाहिए

और हिंसा आदि नहीं होनी चाहिए। साथ ही साथ वह स्थान एक तीर्थ स्थल होना चाहिए अर्थात लोगों का धार्मिक स्थान हो।

"शम्भल" का शाब्दिक अर्थ है "शान्ति का स्थान" अन्तिम अवतार का स्थान शान्तिदायक और सबको एक कर के समानता स्थापित करने वाला होना चाहिए। अंतिम अवतार के लिये जरूरी नहीं कि वह भारत में ही हो और संस्कृत या हिन्दी ही बोले। भाषा, वेशभूषा तो केवल देश-काल के अनुसार होती है। यदि अवतारों के लिए एक ही प्रकार की भाषा, वेशभूषा, परमात्मा की ओर से घोषित की जाती तो सभी देशों के अन्दर होने वाले अवतारों की भाषा तथा वेशभूषा एक ही होती। यह कहना अज्ञानता है, कि अवतार केवल भारत में ही हो। क्या भारत ही ईश्वर का प्रिय स्थान है और अन्य देश नहीं, अथवा क्या सृष्टि केवल भारत ही है दूसरे देश नहीं।

अतः अन्तिम अवतार भारत के बाहर भी हो सकता है और वहाँ उस देश की भाषा, रीति-रिवाज तथा वेषभूषा के अनुसार उसको चलना होगा, परन्तु अधर्म एवं अन्याय के विरूद्ध।

समय को दृष्टि में रखते हुए इतना तो स्पष्ट है कि भारत में आज से लगभग चौदह-पन्द्रह सौ वर्ष पूर्व कोई ऐसा व्यक्ति नहीं हुआ जो अन्तिम अवतार की कसौटी पर खरा उतरे। और जितने भी पुराण हैं, कल्कि के अवतार के विषय में सभी स्थान को "शम्भल" बतलाते हैं। "सम्भल" या "शम्भल" शब्द एक ही हैं।

डॉ. वेदप्रकाश उपाध्याय जी (संस्कृत विद्धान प्रयाग विश्वविध्यालय) ने भी अपनी पुस्तक "कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब" में लिखा है कि सम्भल स्थान की विशेषता है, स्थान का नाम नहीं। वैदिक संस्कृत में "सम" का अर्थ है "शांति" अर्थात संभल वह स्थान है जहाँ पर किसी को शांति मिले। हज़रत मुहम्मद(स) मक्का में पैदा हुए जिसका दूसरा नाम "ब-लदुल अमीन" है। दिव्य कुरआन सूरह तीन आयत : 3, में अल्लाह तआला ने फ़रमाया "व हाज़ल ब-

लदुल अमीन" अर्थात "यह (मक्का) शांति का शहर है" । "बलद" का अर्थ है शहर और "अमीन" का अर्थ है शांति । और दूसरी जगह दिव्य कुरआन सूरह आले इमरान आयत : 97 में कहा गया है "वमन द-ख-लहु काना आमिना" अर्थात "जो कोई उसमें प्रवेश किया उसने शांति प्राप्त कर ली" । प्रसिद्ध पुस्तक "Encyclopedia Britanica" में भी मक्का को अमन(शांति) का शहर कहा गया है । इस प्रकार मक्का शहर और मक्का शहर में जो काबा पुण्य स्थल है उसकी प्रशंसा वेदों में भी आई है। इसकी अधिक जानकारी के लिए आप हमारे S.No. 15 और S.No. 26 से 30 तक के मंत्र देख सकते हैं।

तो यह बात सिद्ध हो गई है कि शम्भल ग्राम या सम्भल ग्राम मक्का पुण्य क्षेत्र ही है जहाँ पर अंतिम अवतार कल्कि ने जन्म लिया और वह "हज़रत मुहम्मद(स)" ही हैं।

इस भागवत पुराण के श्लोक के अनुसार कल्कि अवतार का जन्म श्रेष्ठ ब्रह्मण अर्थात पुरोहित के घर में होगा। हम जानते हैं कि हज़रत अब्दुल मुत्तलिब जो हज़रत मुहम्मद(स) के दादा हैं, मक्का के प्रधान अथवा गुरू थे और काबा के न्यासी(Trustee) भी थे।

इस भागवत पुराण के श्लोक में भी और कल्कि पुराण में भी कल्कि अवतार के पिता का नाम "विष्णुयश" बताया गया है । "विष्णु" अर्थात ईश्वर, "यश" अर्थात उपासक, यानी ईश्वर का उपासक, इसी को अरबी आषा में "अब्दुल्लाह" कहते है, "अब्द" अर्थात उपासक "अल्लाह" अर्थात ईश्वर। यानी विष्णु यश का अर्थ हुआ अबदुल्लाह, जो मुहम्मद(स) के पिता का नाम था। इस प्रकार भाषा का भेद है पर तत्व एक है, पानी को जल कहो, वाटर कहो, या नीर कहो एक ही बात है। अगर हम इस भाषा के अंतर को समझ जाएंगे तो भारत ही नहीं बल्कि सारा विश्व स्वर्ग समान बन जाएगा।

प्रमाण - 48

शम्भले विष्णुयशसो गृहे प्रादुर्भवाम्यहम् ।

सुमत्यामातरि विभो। पत्नीयां त्वन्निदेशतः ।।

(कल्कि पुराण :- अध्याय : 2, श्लोक : 4)

सृमत्यां विष्णु यशसा गर्भमाधत्त वैष्णवम् ।

(कल्कि पुराण :- अध्याय : 2, श्लोक : 11)

अर्थ :- शम्भल ग्राम में विष्णुयश के घर में कल्कि अवतार प्रकट होंगे, विष्णुयश की पत्नी सुमति के गर्भ से वह विष्णु के अवतार पैदा होंगे।

व्याख्या :- शम्भल के विषय में आप जान चुके हैं कि वह मक्का शहर है। श्री मद्भागवत पुराण :- स्कन्ध : 12, अध्याय : 2 और श्लोक : 18, में भी कल्कि अवतार की जन्म भूमि सम्भल ग्राम ही बताई गई है। सम्भल और शम्भल एक ही शब्द है इसकी अधिक जानकारी के लिए आप हमारा S.No. 47 का श्लोक देख सकते हैं।

पिछले श्लोकों में भी हमने देखा कि कल्कि अवतार के पिता का नाम विष्णु यश बताया गया था और उनकी जन्म भूमि सम्भल ग्राम ही बताई गई थी वह श्लोक श्री मद्भागवत पूराण का है :

सम्भलग्राम मुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मनः ।

भवने विष्णुयशसः कल्किः प्रादुर्भविष्यति ।।

और कल्कि पुराण के इस श्लोक में भी स्पष्ट रूप से कल्कि अवतार के पिता का नाम विष्णुयश ही बताया गया है और इस श्लोक में और अधिक जानकारी देते हुए कहा गया है कि विष्णुयश की पत्नी का नाम "सुमति" होगा जो कल्कि अवतार की माता होंगी और कल्कि पुराण के दूसरे अध्याय के 11 वें

श्लोक में भी यही बताया गया कि वह कल्कि अवतार विष्णुयश की पत्नी सुमति के गर्भ से ही पैदा होंगे।

अब इन श्लोकों में जो विष्णुयश और सुमति शब्द है इसकी व्याख्या करना ज़रूरी है। हम जानते हैं कि परमात्मा ने अलग-अलग देशों में अलग-अलग अवतार या पैग़ंबर भेजे हैं ताकि लोगों का उद्धार हो सके। दुनिया में 1,24,000 अवतार आए हैं वे सब देश और काल के अनुसार भषा बोलते थे। हमारे भरत देश मे भी कई अवतार प्रकट हुए हैं उनकी भाषा संस्कृत होने के कारण वे लोग संस्कृत भाषा में ही भविष्यवाणियाँ बताए हैं। हम जानते है कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) को हिन्दू धर्म ग्रंथों में अनेक नामों से याद किया गया है जैसे वेदों में अनेक स्थान पर "नाराशंस" कहा गया है, जैसे अथर्ववेद – कांड : 20, सूक्त : 127, मंत्र : 1।

इंद जना उप श्रुत नराशंस स्तविष्यते।
षष्टिं सहस्रानवतिं च कौरम आ रूशमेषु दद्महे॥

अर्थात "ऐ लोगो ! यह भविष्यवाणी आदर से सुनो! मुहम्मद(स) तारीफ किया जाएगा 60,090 दुश्मनों में इस हिजरत करने वाले या शांति फैलाने वाले को हम हिफ़ाज़त में लेते हैं"।

इस मंत्र में नराशंस हज़रत मुहम्मद(स) को कहा गया है। नराशंस का अर्थ होता है "वह नर जिसकी प्रशंसा की गई" इसी को अरबी भाषा में "मुहम्मद" कहते हैं। मुहम्मद(स) का भी अर्थ होता है "वह व्यक्ति जिसकी हम्द अर्थात प्रशंसा की गई" इसकी अधिक जानकारी के लिए आप हमारा S.No. 1 को मंत्र देख सकते हैं।

और पंगम्बर मुहम्मद(स) को विष्णु के प्रमुख दस अवतारों में अंतिम अवतार कहा गया है वह दशावतार यह हैं :

(1) मत्स्य, (2) कूर्म, (3) वराह, (4) नरसिंह, (5) वामन, (6) भार्गव, (7) राघव, (8) कृष्ण, (9) बौद्ध, (10) कल्कि।

अंतिम अवतार का अर्थ होता है आखरी नबी। सारे मुसलमानों की यही मान्यता है कि हज़रत मुहम्मद(स) आखरी पैग़ंबर हैं दिव्य कुरआन इस विषय में सूरह अहज़ाब, आयत : 40, में कहता है

"मा काना मुहम्मदुन अबा अहदिम् मिर्रिजालिकुम् वला किर् रसूलल्लाही व ख़ातमन्नबिय्यीन"

अर्थात :- पैग़ंबर मुहम्मद(स) तुम में से किसी पुरूष के बाप नहीं हैं बल्कि अल्लाह के पैग़ंबर और आख़री नबी हैं।

और पैग़ंबर मुहम्मद(स) को कल्कि अवतार और जगतगुरू भी कहा गया है।

विष्णु यशस्युता देवं दुष्ट दुराचारा मर्दनं।
सुमति परामानंदं कल्कि वंदे जगत गुरू॥

अर्थात :- वह विष्णुयश यानी अब्दुल्लाह के बेटे देवगुण रखने वाले होंगे और दुष्टों का नाश करेंगे वह सुमति अर्थात आमेना के बेटे होंगे इस बुलंद अखलाक़ वाले कल्कि को मैं सलाम करता हूँ और वह जगत के गुरू होंगे।

पैग़ंबर मुहम्मद(स) को कल्कि इसलिए कहा गया है कि वह दुष्ट अर्थात कलि का नाश करेंगे, पापों को समाप्त कर के धर्मराज स्थापित करेंगे और आप(स) को जगत गुरू भी कहा गया है जगत को अरबी में आलम कहते हैं और गुरू को सर्वर कहते हैं इस प्रकार जगतगरू का अर्थ सर्वर-ए-आलम होता है। मुसलमान पैग़ंबर मुहम्मद(स) को "सरवरे आलम" भी कहते है।

और गुरू की प्रशंसा में हिन्दू धर्म ग्रंथों में इस प्रकार की गई है

ब्रह्मानंदं परमा सुखदं केवलं ज्ञाना मूर्त्यं
द्वंद्वातीतं गगना सदृशं तत्वमस्यादि लक्ष्यं
एकं नित्यं विमला वचनं सर्वादि साक्षि भूतं

भावातीतं त्रिगुणा रहितं सद्गुरू तन्नमामी

गुरू ब्रह्मा गुरू विष्णू गुरू देवो महेश्वरः

गुरू साक्षात परा ब्रह्मा तस्मय श्री गुरू वे नमः नमः नमः ।।

अर्थात : ब्रह्म आनंद है और वह परम सुख है वह केवल ज्ञान की मूर्ति है, वह अखंड है वह आकाश के समान सर्वव्यापी है वह "तू है" का लक्ष्य है, वह हमेशा रहने वाला है, उसके बोल निर्मल हैं। आदी और अनादी में वही है वह भाव से अतीत है त्रिगुण से रहित है, हे सच्चे गुरू मैं तेरी ही सेवा करता हूँ। गुरू ब्रह्म है, गुरू विष्णू है, गुरू महेश्वर है, गुरू ही परब्रह्म का साक्षात रूप है। इसलिए मैं ऐसे गुरू का आज्ञा पालन करता हूँ।

इस प्रकर इस गुरू मंत्र में गुरू की बहुत प्रशांसा की गई है और गुरू को परमात्मा का प्रतीक कहा गया है।

और गुरू बोध तत्वामृत में है

"जपस्तपम् व्रतम तीरतम् यज्ञोदानो तदै वचा।

गुरू तत्वा न विज्ञाया सर्वम व्यर्थम भवेतप्रिये" ।।

अर्थात : कोई जप करे तप करे तीर्थ करे यज्ञ या दान करे अगर गुरू की बात न माने तो ये सब व्यर्थ है।

और व्यास स्मृति में पैग़ंबर मुहम्मद(स) को जगत गुरू कहा गया है वह श्लोक यह है

"ब्रह्म कृता शिवा सहस्रा ना-मसू मृत्युंजया

सूक्ष्म तनुर जगद व्यापी जगत-गुरू" ।।

अर्थात : ब्रह्म शक्तियों का केंद्र, शिव के सहस्र नामों को धारण किया हुआ, मृत्यू पर विजय प्राप्त किया हुआ, अपने सूक्ष्म शरीर से सारे जगत में व्याप्त रहने वाला वही जगत का गुरू है।।

दुनिया में गुरू तो बहुत हैं लेकिन जगत गुरू हज़रत मुहम्मद(स) को ही कहा गया है।

इस प्रकार हम देखते है कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) को हिन्दू धर्म ग्रंथों में कल्कि अवतार, नराशंस, अंतिम ऋषि, जगतगुरू, आदि कई नामों से याद किया गया है और दूसरे धर्म ग्रंथों मे दूसरे नामों से याद किया गया है परंतु सब अवतारों और नबियों ने हज़रत मुहम्मद(स) की ओर ही संकेत किया है।

जिस प्रकार पैग़ंबर मुहम्मद(स) को हिन्दू धर्म ग्रंथों में संस्कृत भाषा के नामों से याद किया गया है उसी प्रकार उनके माता और पिता का भी नाम संस्कृत भाषा में बताया गया है। इन श्लोकों में कल्कि अवतार पैग़ंबर मुहम्मद(स) के पिता का नाम विष्णुयश बताया गया है विष्णु अर्थात अल्लाह, यश अर्थात बंदा, तो विष्णुयश का अर्थ हुआ अल्लाह का बंदा। इसी को अरबी भाषा में "अब्दुल्लाह" कहते है। क्योंकि अब्द अरबी भाषा में बन्दा, गुलाम या उपासक को ही कहते हैं और माता का नाम सुमति सोमवती आया है जिसका अर्थ है शांति एवं मननशील स्वभाववाली स्त्री, जिसको अरबी भाषा में "आमेना" कहते है, आमेना का भी अर्थ शांति एवं मननशील स्वभाववाली स्त्री ही होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) के पिता का नाम विष्णुयश अर्थात अब्दुल्लाह है और माता का नाम सुमति अर्थात आमेना है। यह केवल भाषा का भेद है परंतु तत्व एक है। आज हम सबको इस सच्चाई को समझने और इसको स्वीकार करने की आवश्यकता है।

प्रमाण - 49

द्वादश्या शुक्लपक्षस्य माधवे मासि माधव।
जात ददृश्तु पुत्र पितरौ हृष्टमानसौ ॥

(कल्कि पुराण :- अध्याय : 2, श्लोक : 15)

अर्थात :- "कल्कि अवतार माधव महीने की 12 तारीख अर्थात चौदहवीं के चाँद(पूर्णिमा) से दो दिन पहले जन्म लेंगे उनको देखकर माता-पिता बहुत प्रसन्न होंगे" ।

व्याख्या :- हमने पिछले मंत्रों और श्लोकों से यह जान लिया कि कल्कि अवतार, हज़रत मुहम्मद(स) ही हैं और आप(स) को नराशंस, अंतिम ऋषि, कल्कि अवतार, जगतगुरू, आदि कई नामों से याद किया गया है और पैग़ंबर मुहम्मद(स) के माता और पिता का नाम भी बताया गया कि उनके पिता का नाम विष्णुयश अर्थात अब्दुल्लाह होगा और माता का नाम सुमति अर्थात आमेना होगा।

अब इस श्लोक में कल्कि अवतार पैग़ंबर मुहम्मद(स) की जन्म तिथि या तारीख बताई गई है।

इस श्लोक में बताया गया है कि कल्कि अवतार माधव मास की 12 तारीख को जन्म लेंगे। हम जानते हैं कि माधव मास को मुसलमान माहे रबिउल अव्वल कहते हैं और हम यह भी जानते हैं कि हज़रत मुहम्मद(स) रबिउल अव्वल की 12 वीं तारीख़ को ही पैदा हुए हैं।

हज़रत मुहम्मद(स) 570 ई. को सोमवार के दिन प्रातः काल के समय मक्का शहर में सुमति अर्थात अमेना जी के गर्भ से पैदा हुए और आप(स) छः साल की आयु में ही यतीम अर्थात अनाथ हो गए जिसका वर्णन अथर्ववेद – काण्ड : 20, सूक्त : 21, और मंत्र : 9 में स्पष्टरूप से आया है। इस मंत्र का अनुवाद है "तूने हे इन्द्र(ईश्वर), अनाथ, प्रसिद्ध, बड़ी प्रशंसा वाले (मुहम्मद(स)) के साथ उन लोगों के बीस सरदारों और साठ हज़ार निन्यानवे पकड़ में न आने वाले दुश्मनों को अपने हथियार रथ और चक्र से उलट-पलट कर दिया है" । इस मंत्र की व्याख्या के लिए आप हमारा S.No. 21 का मंत्र देख सकते है।

इस प्रकार पैग़ंबर मुहम्मद(स) इस श्लोक की भविष्यवाणी के अनुसार 12 माधव मास अर्थात 12 रबिउल अव्वल के शुक्ल पक्ष यानी पूर्णिमा से दो दिन

पहले पैदा हुए। और आप(स) के जन्म लेने के बाद दुनिया से बुराई का खात्मा हुआ, दुष्टों का नाश हुआ, और लोग पुण्यवान बने और पैग़ंबर(स) ने लोगों को अज्ञानता के अंधकार से निकाल कर दिव्य ज्ञान के प्रकाश में लाया।

आज मुसलमान 12 रबिउल अव्वल को मुहम्मद(स) के जन्म दिन के अवसर पर ईद मनाते हैं और रबिउल अव्वल की 12 तारीख़ मुसलमानों के पास सब से बड़ी ईद मानी जाती है, जिसको "ईदुल अयाद" कहा जाता है अर्थात "ईदों की ईद" क्योंकि इसी दिन नराशंस, अंतिम ऋषि, कल्कि अवतार, जगत गुरू, फ़ारखलीत, बाग़ के मालिक, मैत्रेय ने जन्म लिया है। जिनके द्वारा सारे संसार को मुक्ति का मार्ग प्राप्त हुआ है। इसीलिए व्यासोपनिषद में कहा गया :

ये मानवा विगत राग परावरग्याः
मोहम्मदं धर्मगुरू सततं स्मरंति
ध्यानेन तेन हत् कल्मष्म चेतनास्ते
मातु पयो धर रसम् न पुनः पिवंती ॥

अर्थात "जो व्यक्ति क्रोध या ग़ुस्से से उत्पन्न होने वाले दुर्गुणों को छोड़कर सब से मूह मोड़कर जगत के गुरू तथा जगत के उद्धारक मुहम्मद(स) को हर दम हर समय याद करता है तो इस ध्यान से उसके जान का अंधेरा दूर हो जाता है इसको न पुनर्जन्म होगा और न वह दोबारा माँ का दूध पियेगा"।

अब यह बात छिपी नहीं रही कि वेदों, उपनिषदों और पुराणों में इस सृष्टि के अन्तिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद(स) के आगमन की भविष्यवाणियाँ की गई है। अगर एक दो भविष्यवाणियाँ होते तो लोग इंकार कर सकते थे परंतु हिन्दू धर्म ग्रंथों में सैंकड़ों भविष्यवाणियाँ पेग़ंबर मुहम्मद(स) के आगमन के विषय में हैं। न केवल हिन्दू धर्म ग्रंथों में बल्कि ईसाई, बुद्धि, पारसी, आदि धर्म ग्रंथों में पैग़ंबर मुहम्मद(स) की भविष्यवाणियाँ आज भी मौजूद हैं। इसीलिए भगवतगीता :- अध्याय : 16, श्लोक : 23, में कहा गया है :

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ।।

अर्थात "जो कोई शास्त्र विधि को छोड़कर अपनी ख्वाहेशात या इच्छा के अनुसार चलता है तो न उसको सिद्धि प्राप्त होगी न सुख और न उसको मुक्ति मिलेगी" ।

हमारा उद्देश्य केवल यह है कि इस तुलनात्मक अध्ययन (Comparative Study) द्वारा लोग एकत्र हो जाएँ और धार्मिक द्वेष दूर हो जाए और लोग सारे अवतारों का आदर सम्मान करें, सारे धर्म ग्रंथों पर विश्वास लाएँ और सत्य को ग्रहण करें। आज जो राजनीतिक पार्टियों द्वारा हिन्दू मुसलमानों में द्वेष पैदा किया जा रहा है उसको समाप्त करने की यह एक कोशिश है।

प्रमाण - 50

अश्वमाशुगमारुबह्य देवदत्तं जगत्पतिः ।
असिनासाधु दमनमष्टैश्वर्य गुणान्वितः ।।

(भागवत पुराण :- स्कन्ध : 12, अध्याय : 2, श्लोक : 19)

अर्थात :- आठ गुणों से सजा कर ईश्वर ने उसे एक तेज़ रफ़तार घोड़ा और तलवार उसके हाथ में दी, ताकि वह दुनिया की रक्षा सभी दुष्टों से कर सके।

व्याख्या :- भागवत पुराण के इस श्लोक में अंतिम अवतार के अश्वारोही और खड़गधारी होने का उल्लेख है अर्थात उनकी सवारी ऐसे घोड़े की होगी जो तेज़ गति से चलने वाला होगा और परमात्मा द्वारा दिया हुआ होगा। तलवार से वह दुष्टों का संहार करेंगे। घोड़े पर चढ़कर तलवार से दुष्टों का दमन करेंगे। हज़रत मुहम्मद(स) को भी परमात्मा की ओर से घोड़ा प्राप्त हुआ था जिसका नाम "बुर्राक़" था। उसपर बैठकर अंतिम रसूल हज़रत मुहम्मद(स) ने रात में तीर्थयात्रा की थी इसे "मेअराज" भी कहते हैं। और इतिहास साक्षी है कि पैग़ंबर(स) ने घोड़े

पर बैठकर तलवार से दुश्मनों का दमन किया। मुहम्मद(स) को घोड़े बहुत पसंद थे। आप(स) के पास सात घोड़े और नौ तलवारें थीं। हम जानते हैं कि अब घोड़ों और तलवारों का दौर नहीं रहा अब ऐटम बॉम, नैट्रोजन बॉम, मिज़ाइल आदि का दौर है। अरब के लोग 1100 ई. से सोड़ा और कोयले को मिलाकर बॉम बनाते और प्रयोग करते आरहे हैं। इस विस्फोटक के बनते ही तलवार का महत्व कम हो गया था। इसलिए कल्कि अवतार का जन्म 1100 ई. से पहले होना चाहिए न कि कल्युग के अंत में। अतः कल्कि अवतार आज से लगभग साढ़े चौदह सौ वर्ष पहले प्रकट हो चुके हैं। इसकी अधिक जानकारी के लिए आप हमारा S.No. 46 का श्लोक देख सकते हैं।

इस श्लोक में अंतिम अवतार को "जगत्पति" कहा गया है। जगत का अर्थ है संसार और पति का अर्थ है रक्षक। जगत्पति शब्द का अर्थ हुआ कि अपने उपदेशों द्वारा गिरते हुए जगत को बचाने वाला। क्योंकि कल्कि अवतार केवल एक समाज या देश के उद्धार के लिए नहीं प्रकट हुए हैं बल्कि सारे संसार के उद्धार के लिए प्रकट हुए हैं। पैग़ंबर मुहम्मद(स) से पहले 1,24,000 अवतार या नबी इस संसार में प्रकट हुए हैं परन्तु वे केवल एक समाज या देश के उद्धार के लिए आते थे। इसीलिए परमात्मा परमेश्वर अल्लाह दिव्य कुरआन में उन अवतारों के विषय में कहता है कि "मूसा लि कौमिही" "ईसा लिक़ौमिही" अर्थात मुसा अपने समाज के लिए थे, ईसा अपने समाज के लिए थे। परंतु जब पैग़ंबर मुहम्मद(स) का विषय आता है तो दिव्य क़ुरआन घोषणा करता है "वमा अर-सलनाका इल्ला रह्मतल् लिल् आलमीन्" अर्थात और हे पैग़ंबर(स) हमने तुम्हें सारे संसार के लिए दयासागर बना कर भेजा है और दूसरे स्थान पर दिव्य कुरआन में कहा गया है "क़ुल या अय्युहन्नासु इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम जमीआ" अर्थात "घोषणा कर दीजिए अए पैग़ंबर(स) मैं तुम सब के लिए अल्लाह का पैग़ंबर हूँ"। इस प्रकार पैग़ंबर मुहम्मद(स) ही जगतगुरू और "जगत्पति" सिद्ध होते हैं।

इस श्लोक में एक शब्द आया है "असाधुदमन" अर्थात अंतिम अवतार दुष्टों का दमन करेंगे, उनको पराजित करेंगे और पापियों का नाश करेंगे। अवतार का कर्तव्य होता है कि वह असाधु का दमन करे और साधु की रक्षा करे। इसी बात को भगवत गीता में कहा गया "परित्राणय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्" अर्थात परमात्मा साधुओं की रक्षा करता है और दुष्टों का नाश करता है। परमात्मा अपने अवतारों द्वारा दुष्टों का नाश करता है और अच्छे लोगों की रक्षा करता है। इस प्रकार हज़रत मुहम्मद(स) ने दुष्टों का नाश किया और शिष्टों का परिपालन किया।

अब आखरी बात जो इस श्लोक में बताई गई है वह है "अष्टैश्वर्य गुणान्वितः" अर्थात आठ सिद्धियों या गुणों से युक्त। यानी अंतिम अवतार आठ ईश्वर के गुण रखने वाले होंगे। ये आठ ईश्वरीय गुण महाभारत में भी बताए गए हैं:

(1) वह महान ज्ञानी होंगे (Wisdom)

(2) वह उच्च वंश के होंगे (Honoured Family)

(3) वह आत्मनियंत्रक होंगे (Self Control)

(4) वह दिव्य ज्ञान रखने वाले होंगे (Divine knowledge)

(5) वह पराक्रमी होंगे (Braveness)

(6) वह कम बोलने वाले होंगे (Balanced Speech)

(7) वह बहुत दान करने वाले होंगे (Extremely Charitable)

(8) वह कृतज्ञ होंगे (Greatfulness)।

यह आठ विशेष गुण अंतिम अवतार पैग़ंबर मुहम्मद(स) में किस प्रकार थे इसकी व्याख्या हम अगले श्लोक में परमात्मा की इच्छा से बताएँगे।

प्रमाण - 51

अष्टौ गुणः पुरूषं दीपयन्ति
प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रुतं च।
पराक्रमश्चबहुयाषिता च
दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च ।।

(महाभारत)

अर्थात :- किसी दिव्य पुरुष को आठ गुण प्रकाशित करते हैं वे आठ ईश्वरीय गुण यह हैं 1) प्रज्ञा, 2) कुलीनता, 3) इन्द्रिय-दमन, 4) श्रुतिज्ञान, 5) पराक्रम, 6) थोड़ा बोलना, 7) दान और 8) कृतज्ञता।

व्याख्या :- श्री मद्भागवत पुराण स्कन्ध : 12, अध्याय : 2, और श्लोक : 19, में बताया गया था कि कल्कि अवतार आठ ईश्वरीय गुणों से युक्त होंगे।

वोह आठ विषेशताएँ महा भारत में भी बताई गई हैं। वह आठ ईश्वरीय गुण पैग़ंबर(स) में किस प्रकार मौजूद थे, आइए देखें।

(1) पहला जो कल्कि अवतार का विशेष गुण बताया गया है वह है "प्रज्ञा" अर्थात वह महानज्ञानी होंगे। हम जानते हैं कि पैग़ंबर(स) द्वारा प्रकट होने वाली दिव्य कुरआन भौतिक और आध्यात्मिक ज्ञान का स्रोत है, आज विज्ञान भी दिव्य कुरआन के ज्ञान को स्वीकार कर रहा है और कई वैज्ञानिकों ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया है। और लाखों अहादीस अर्थात पैग़ंबर(स) के वाणियाँ दुनिया का मार्गदर्शन कर रहे हैं। हदीसों में जीवन के प्रत्येक पहलू का ज्ञान दिया गया है, जैसे मानव परमात्मा में कैसे लीन हो सकता है, अपने माँ-बाप का कैसे आदर-सम्मान करना है, कैसे पति-पत्नी जीवन बिताएँ, कैसे अपनी संतान का पालन पोषण करें, आदि-आदि। इसीलिए प्रत्येक धर्म के विद्धानों ने पैग़ंबर(स) की प्रशंसा की है जैसे माईकल-एच-हार्ट ने अपनी पुस्तक "The 100" में लिखा है:

"Muhammad(pbuh) was the only Man in History who was Supremely Successful on both the Religious and the Secular levels".
अर्थात :- "इतिहास में केवल मुहम्मद(स) ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने लौकिक और धार्मिक सतह पर सर्वोच्च सफ़लता प्राप्त की थी" ।

इस तरह कई विद्वानों ने पैग़ंबर मुहम्मद(स) की प्रशंसा की और आप(स) को महान ज्ञानी माना । इस प्रकार पैग़ंबर मुहम्मद(स) के लाखों वाणियों द्वारा लोग इह लोक और परलोक में सफलता प्राप्त कर रहे हैं । और सूलह ए हुदैबिया और फ़तेह मक्का की घटनाएँ और ऐसे अनेक प्रमाण हैं जिसके द्वारा सिद्ध होता है कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) प्रज्ञा अर्थात महान ज्ञानी थे ।

(2) दूसरी कल्कि अवतार की विशेषता यह बताई गई है कि वह उच्च वंश के होंगे । हम जानते हैं कि अंतिम अवतार हज़रत मुहम्मद(स) ऊँचे पुरोहित परिवार में पैदा हुए थे । हज़रत मुहम्मद(स) हाशिम परिवार के कुरैश वंश में पैदा हुए थे जो मक्के का सब से उच्च वंश कहलाता था और यही परिवार काबे का संरक्षक था ।

(3) आठ ईश्वरीय गुणों में तीसरा गुण है "इन्द्रियदमन", अर्थात अपने इन्द्रियों को वश में रखने वाला, हम जानते हैं कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) अपने नफ़स पर क़ाबू रखने वाले थे इसका सबूत यह है कि आप(स) ने पच्चीस(25) साल की आयु में अपने से पन्द्रह(15) वर्ष बड़ी अर्थात चालीस(40) साल की आयु वाली विधवा औरत से शादी की और पैग़ंबर(स) ने उन्हीं के साथ अपनी पूरी जवानी बिता दी, और लगभग 25-30 वर्ष तक दूसरी शादी नहीं किये । और पहली बीवी हज़रता खदीज़ा(र) की मृत्यु के बाद दूसरे विवाह किये और पैग़ंबर(स) का 11 या 12 शादियाँ करना अपनी काम इच्छा को पूरी करने के लिए नहीं था बल्कि अलग-अलग समूदायों में परस्पर प्रेम भाव पैदा करने के लिए था । पैग़ंबर मुहम्मद(स)

के तमाम इंन्द्रियों का उनके वश में रहने का प्रमाण यह भी है कि उन्होंने सब बूढ़ी या ज़्यादा आयु वाली औरतों से विवाह किया जिनमें केवल एक आईशा(र) कम आयु के थे। अगर पैग़ंबर मुहम्मद(स) के अंदर काम की भावना होती तो आप(स) अपनी जवानी में ही यह सारे विवाह करते। इस प्रकार अगर हम पैग़ंबर(स) के जीवन चरित्र को ग़ौर से देखेंगे तो हमको पता चलेगा कि जिस प्रकार कमल का फूल पानी में रहकर पानी से जुदा रहता है उसी प्रकार पैग़ंबर(स) ने अनेक शादियाँ कर के भी अपने इन्द्रियों को वश में रखा था।

(4) "श्रुतं" आठ ईश्वरीय गुणों में चौथा गुण है। "श्रुतं" का अर्थ है जो ईश्वर के द्वारा सुनाया गया और ऋषियों, अवतारों और नबियों द्वारा सुना गया हो। "श्रुतं" शब्द "श्रुं (सुनना)" धातु से बना है। पैग़ंबर मुहम्मद(स) पर फरिश्ते जिब्रील द्वारा ईश्वरीय ज्ञान उतारा जाता था, जिसे "वही" भी कहा जाता है। और कई दूसरे धर्म के विद्वानों ने भी माना की पैग़ंबर मुहम्मद(स) पर ईश्वरीय वाणी आती थी। इस प्रकार मुहम्मद(स) श्रुतं अर्थात दिव्य ज्ञान रखने वाले हैं जो आज मुसलमानों के पास कुरआन के रूप में मौजूद है।

(5) अष्टगुणों में "पराक्रम" पांचवा गुण है। पैग़ंबर मुहम्मद(स) शारीरिक रूप से भी बहुत शक्तिशाली थे, आपने अरब के सब से बड़े पहलवान रुकाना को तीन बार पछाड़ दिया था और आप(स) के शिष्य कहते हैं कि कभी युद्ध में दुश्मन हावी होते तो हम पैग़ंबर(स) का सहारा लेते। ऐसे अनेक उदाहरण हैं मैं यहाँ केवल एक घटना को बताना चाहता हूँ जिससे पैग़ंबर मुहम्मद(स) की बहादुरी सिद्ध होती है। एक समय की बात है पैग़ंबर मुहम्मद(स) और आप(स) के शिष्य अपने-अपने क़ैमों(डेरों) में आराम कर रहे थे रात का समय था अचानक बहुत दूर से लशकर के आने की आवाजें सुनाई दी तब सब शिष्य अपने क़ैमों से बाहर निकले और सोंचने लगे कि यह लशकर जो आरहा है क्या वह युद्ध के लिए आने वाला दुश्मन का लशकर है या फिर कोई व्यापार को जाने वाला क़ाफ़िला है, यह

बात मालूम करने के लिए एक साथी को भेजने ही वाले थे कि दूर से धूल उड़ती हुई दिखाई दी और एक व्यक्ति घोड़े पर सवार आते हुए दिखाई दिया। जब वह निकट आये तो लोगों ने देखा कि वह पैग़ंबर मुहम्मद(स) ही हैं और पैग़ंबर(स) ने अपने शिष्यों से कहा कि वह कोई दुश्मन का लशकर नहीं है बल्कि व्यापार को तेज़ी से जाने वाला क़ाफ़िला है तुम लोग जाओ और निश्चिंत होकर अराम करो। इस प्रकार अनेक घटनाएँ इतिहास में हमें मिलती है जिसके द्वारा पैग़ंबर मुहम्मद(स) के पराक्रमी होने का सबूत मिलता है।

(6) छटवां गुण "अबहुभाषिता" है अर्थात कम बोलना। महान पुरूषों का बहुत बड़ा गुण कम बोलना होता है। पैग़ंबर मुहम्मद(स) अधिकतर मौन रहा करते थे, परंतु जो कुछ बोलते थे वह इतना प्रभावशाली होता कि लोग अपने आप को भूल जाते। आप(स) अकसर ख़ामूश रहते, पर लोग आप(स) की बातों को सुनना बहुत पसन्द करते। दिव्य कुरआन में अल्लाह परमेश्वर फरमाता है "वमा यंतिक़ु अनिल हवा इन हुआ इल्ला वहयुंयूहा" अर्थात पैग़ंबर(स) अपनी इच्छा से कोई बात नहीं कहते जो बोलते हैं वह ईश्वरीय वाणी होती है और अरबी भाषा में कहा गया है "ख़ैरुल कलामी मा क़ल्ला व दल्ला" अर्थात बेहतरीन बात वह है जो छोटी और दलील वाली हो।

(7) अष्टेश्वर्यगुणान्वितः में "दान" सातवां गुण है। दान महापुरूषों की निशानी होती है इतिहास में आता है कि कल्कि अवतार हज़रत मुहम्मद(स) बहुत बड़े दानी थे आपने अपनी सारी दौलत ग़रीबों को दान करदी थी और कभी कोई आप(स) के घर से खाली हाथ नहीं लौटता था। इतिहास साक्षी है कि आप(स) के दान देने को देखकर दुश्मन यह कहते थे कि ऐसा दान करने वाला तो एक पैग़ंबर ही हो सकता है। और इतिहास साक्षी है कि जब भी पैग़ंबर मुहम्मद(स) के पास धन दौलत आती तो आप(स) उसे रात होने से पहले ग़रीबों में बाँट देते और ख़ाली हाथ घर लौटते। यही कारण था कि जब आप(स) का देहान्त हुआ

तो घर में चिराग़ अर्थात दीप जलाने के लिए तेल नहीं था। इस प्रकार पैग़ंबर मुहम्मद(स) बहुत दान करने वाले थे।

(8) आठ दैवी गुणों में "कृतज्ञता" आठवां गुण है। कृतज्ञता अर्थात किसी भी रूप में की गई सहायता के लिए आभार प्रकट करना यानी शुक्रगुज़ार (Greatfulness) होना है। पैग़ंबर मूहम्मद(स) हमेशा शुक्रगुज़ार रहते और लोगों को भी कृतज्ञता का उपदेश देते। पैग़ंबर मूहम्मद(स) ने फरमाया "अगर कोई मनुष्य किसी मनुष्य की सहायता पर उसका आभार प्रकट नहीं करता तो निस्संदेह उसने परमात्मा का भी आभार प्रकट नहीं किया"। अतः आपने कहा कि मनुष्य को चाहिए कि वह हमेशा शुक्रगुज़ार रहे। और पैग़ंबर मूहम्मद(स) तहज्जुद अर्थात रात की नमाज़ में कई घंटे खड़े रहते जिसके कारण आपके पैर सूज जाते। एक समय बीबी आईशा(र) ने कहा "हे अल्लह के पैग़ंबर आप क्यों इतनी देर तक नमाज़ पढ़ते है आप तो बहुत पुण्यवान हैं तब पैग़ंबर(स) ने कहा कि "ऐ आईशा क्या मैं परमात्मा का शुक्रगुज़ार बन्दा न बनू"। इसीलिए दिव्या कुरआन में कहा गया है "लइन शकरतुम लअज़िदन्नकुम" अर्थात "अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम्हें और दूँगा"।

इस प्रकार हम देखते हैं कि श्री मद्भागवत पुराण :- स्कन्ध : 12, अध्याय : 2, और श्लोक : 19, में जो कल्कि अवतार के आठ ईश्वरीय गुण बताए गये थे वे सब के सब पैग़ंबर मुहम्मद(स) में उत्तम रूप से पाए जाते हैं। अतः सिद्ध हुआ कि कल्कि अवतार हज़रत मुहम्मद(स) ही हैं।

अंत में मैं परमात्मा परमेश्वर अल्लाह से प्रार्थना करता हूँ कि वह हमें अष्टैश्वर्य गुणान्वितः अर्थात आठ ईश्वरीय गुण रखने वाले कल्कि अवतार को मानने की क्षमता प्रदान करे।

प्रमाण - 52

चतुर्भिर्भ्रातृभिर्देव। करिष्यामि कलिक्षयम्।
भवन्तो बान्धवा देवाः स्वाशेनावतरिष्यथ।।

(कल्कि पुराण :- अध्याय : 2, श्लोक : 5)

अर्थ :- "चार सहयोगियों के साथ मिलकर वह देव, कलि का अर्थात शैतान का नाश करेगा। अब सभी देवताओं को भी अपने-अपने बाँधवों सहित पृथ्वी पर जाना होगा"।

व्याख्या :- इस श्लोक में कल्कि अवतार अंतिम ऋषि के चार शिष्यों का स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया है। श्लोक में "भ्राता" शब्द आया है जिसका अर्थ है भाई या सहायक अर्थात अन्तिम अवतार के सहायक चार होंगे, जो हर तरह से उनकी सहायता करेंगे।

हम जानते हैं कि कल्कि अवतार पैग़ंबर मुहम्मद(स) के भी चार प्रमुख साथी या सहयोगी थे जिनके साथ होकर पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने शैतान का नाश किया था। वे चार सहयोगी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़(र) हज़रत उमर(र) हज़रत उसमान(र) और हज़रत अली(र) थे। यह चार पैग़ंबर मुहम्मद(स) के खलीफा (उत्तराधिकारी) थे जिन्होंने पैग़ंबर मुहम्मद(स) के देहांत के बाद इस्लाम धर्म के प्रचार और प्रसार के कार्य को जारी रखा और इस्लाम के संदेश को दुनिया के कोने कोने तक पहुँचाया। इनको खुलफा-ए-राशिदीन (The Rightly Guided Successors) कहते हैं। और विलियम-एल-लैंगर(William L. Langer) ने अपनी पुस्तक "An Encyclopedia of World History" के Page No. 184 में लिखा है कि "हज़रत मुहम्मद(स) और उनके चार साथियों हज़रत अबू बक्र, हज़रत अमर, हज़रत उस्मान, और हज़रत अली(रज़िअल्लाह अन्हुम) ने

इस्लाम के संदेश को आम किया और पुरानी अमानवीय परंपराओं को समाप्त किया"।

और पैग़ंबर मुहम्मद(स) को हिन्दू धर्म ग्रंथों में "चतुर्भुजम्" भी कहा गया अर्थात चार हाथ वाले, हम जानते हैं कि जिस प्रकार एक पिता अपने दो जवान पुत्रों को देखकर कहता है कि यह मेरे दो भुजाएँ हैं इसी प्रकार पैग़ंबर मुहम्मद(स) के चार शिष्यों को उनकी भुजाएँ कहा गया है क्योंकि यह चार शिष्य पैग़ंबर मुहम्मद(स) के सहायक थे जिनके द्वारा आप(स) ने कलि का या शैतानों का नाश किया। पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने इन चार शिष्यों की बड़ी प्रशंसा की है। इन चार शिष्यों की न केवल इस्लामिक इतिहास में प्रशंसा मिलती है बल्कि हिन्दू धर्म ग्रंथों में भी इन चारों की बड़ी प्रशंसा की गई है।

जैसे फ़ुक़रा-ए-इस्लाम के अनुसार अनासिर(भूत) चार हैं जिनको "अनासिरे अरबा" कहते हैं वोह यह हैं वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी। आकाश को हज़रत मुहम्मद(स) का सम्मान करते हुए वायू, अग्नि, जल और पृथ्वी से अलग कर दिया गया है। भारत के प्राचीन संतों के अनुसार भूत पाँच हैं। जिनको पंचभूत कहते हैं वोह हैं (1) आकाश, (2) वायू, (3) अग्नि, (4) जल और (5) पृथ्वी। और भारत के प्राचीन संतों के अनुसार सृष्टी वाहक शक्तियाँ पाँच हैं। सद्युजाति, वामदेव, अघोर, तत्पुरूष, ईशान्य।

(1) ईशान्य का संबंध आकाश या अंतरिक्ष से है जोकि कल्कि अवतार पैग़ंबर मुहम्मद(स) की उपाधि है।

(2) तत्पुरूष का संबंध जल या पानी से है जो कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़(र) की उपाधि है।

(3) अघोर का संबंध अग्नि या आग से है जो कि हज़रत उमर(र) की उपाधि है।

(4) वामदेव का संबंध वायू या हवा से है जो कि हज़रत उसमान(र) की उपाधि है।

(5) सद्युजाति का संबंध मिट्टी या पृथ्वी से है जोकि हज़रत अली(र) की उपाधि है।

मुहम्मद(स) की दिव्य वाणियों(हदीसों) में है कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़(र) "पानी" के प्रतीक हैं, हज़रत उमर(र) "अग्नि" के प्रतीक हैं, हज़रत उस्मान(र) "वायू" के प्रतीक हैं और हज़रत अली(र) "मिट्टी" के प्रतीक हैं और हम जानते हैं कि कल्कि अवतार पैग़ंबर मुहम्मद(स) आकाश के समान सब को घेरे हुए हैं।

भारत के प्रचिन संतों की मान्यता है कि इन ही पाँच शक्तियों से सृष्टी का निर्माण हुआ। वे कहते हैं कि :

सद्युजाति के मुख से मिट्टी उत्पन्न हुई,
वामदेव के मुख से वायू पैदा हुई,
अघोर के मुख से अग्नि निकली,
तत्पुरूष के मुख से जल निकला,
ईशान्य के मुख से आकाश(अंतरिक्ष) जन्मा।

हिन्दू संत आत्माओं के सार-तत्व को "परमात्मा" कहते हैं वह अल्लाह के प्रतीक पैग़ंबर मुहम्मद(स) हैं। जो अल्लाह की ज़ात में लीन हुए, उन्हीं का दूसरा नाम "महात्मा" है और दिव्य कुरआन में है "सानी इसनैन" अर्थात "तत्पुरूष" उसे दो में का एक पुरूष कहते हैं यह आप(स) के प्रिय शिष्य हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़(र) हैं और भारत के प्राचीन संतों के अनुसार "गणपति" ईश्वर के सुपुत्र हैं। ईश्वर अर्थात रब्बुल-आ-लमीन, हम जानते हैं कि रब्बुल-आ-लमीन के मज़हर अर्थात प्रतीक रहमतुल्लिल-आ-लमीन हैं यानी वह करूणा सागर मुहम्मद(स) हैं और हज़रत अली(र) पैग़ंबर मुहम्मद(स) के दामाद हैं और दामाद पुत्र के समान होता है।

गणपति के विषय में भारत के प्राचीन संतों ने कहा है : "सद्युजाति" यह ज्ञान का प्रकुख द्वारा है। भारत की क़ौमें "बिस्मिल्लाहिर्रमान निर्रहीम" की बजाए "ओम" ॐ लिखती है। यह ओम ॐ शब्द आकार में अरबी शब्द "अली" علی का ही रूप है। भारत में जब मूर्तिपुजा का प्रचलन आम हुआ, तो इसी शब्द अली के आकार علی को आकृति के रूप में लिखा जाने लगा। यानी एक बलवान मनुष्य के धड़ पर यह शब्द अली की आकृति बना दी गई। यही रूपकात्मक आकृति है, जिससे "ओम ॐ " या "अली علی " की आकृति बनती है।

हिन्दुओं की ऐसी मान्यता है कि ईश्वर विद्या नगर है और गणपति उस ज्ञान के नगर का प्रमुख द्वारा है। हदीस शरीफ़ है "अना मदीनतुल इल्म व अलीयुन बाबुहा" अर्थात मैं ज्ञान का नगर हूँ, और अली उसका द्वार हैं। हिन्दू भाईयों के यहाँ प्रत्येक ज्ञान का आरंभ गणपति की पूजा से होता है चाहे शब्द ॐ हो या आकृति रूप में मूर्ति हो वह वास्तव में अरबी शब्द "अली علی" का ही आकार है।

दूसरी बात इस श्लोक में जो बताई गई है वह है "अब सभी देवताओं को भी अपने-अपने बांधवों सहित पृथ्वी पर जाना होगा"। हिन्दू धर्म ग्रंथों में ऋषि, मुनियों को भी देवता कहा जाता है, हम जानते हैं कि कल्कि अवतार पैग़ंबर मुहम्मद(स) से पहले दुनिया में 1,24,000 हज़ार ऋषि, पैग़ंबर या देवता आए और कल्कि अवतार पैग़ंबर मुहम्मद(स) अंतिम ऋषि बनकर आए।

पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने जब अपना आखरी कुतबा (भाषण) अरफ़ात के मैदान में दिया तो उस समय आप(स) के शिष्यों की संख्या भी 1,24,000 थी, इस बात का इतिहास साक्षी है और उस भाषण में पैग़ंबर(स) ने कहा "मन अहब्बा अंय्यंज़ुरा इला इब्राहीम फ़ल यनज़ुर इला अबीबक्र, व मन अहब्बा अंय्यंज़ुरा

इला नूह फ़ल यनजुर इला उमर, व मन अहब्बा अंय्यंज़ुरा इला इद्रीस फ़ल यनजुर इला उस्मान, व मन अहब्बा अंय्यंज़ुरा इला यह्या फ़ल यनजुर इला अली, व मन अहब्बा अंय्यंज़ुरा इला ईसा इबने मर्यम फ़ल यनजुर इला अबी ज़र्ग़फ़्फारी" । अर्थात जो कोई पैग़ंबर इब्राहीम(अ) को देखना चाहता है तो वह अबूबक्र सद्दीक़(र) को देखे और जो कोई पैग़ंबर नूह(अ) को देखना चाहता है तो वह उमर(र) को देखे और जो कोई पैग़ंबर इदरीस(अ) को देखना चाहता है तो वह उस्मान(र) को देखें और जो कोई पैग़ंबर यहया(अ) को देखना चाहता है तो वह अली(र) को देखे और अगर कोई मरयम के बेटे ईसा(अ) को देखना चाहता है तो वह अबूज़र ग़फ़्फारी(र) को देखे। और पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने आगे फरमाया "मा मिन नबिय्यीन इल्ला लहू नज़ीरूम् मिन उम्मती" अर्थात "ऐसा कोई नबी नहीं है जिसका तुल्य या जिसका समान मेरे अनुयायों में न हो"। और इन देवताओं के पद पर चलने वाले अवलियल्लाह के रूप में आते रहते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस श्लोक के अनुसार पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने चार प्रमुख साथियों और सभी देवताओं को लेकर दुष्टों को खत्म किया, पापों को समाप्त किया, शैतानों का नाश किया और धर्मराज स्थापित किया।

प्रमाण - 53

विचरन्नाशुना क्षोण्या हयेनाप्रतिमद्युतिः ।
नृपलिंगच्छदो दस्यून् कोटिशो निहनिष्यति ॥

(भागवत पुराण :- स्कन्ध : 12, अध्याय : 2, श्लोक : 20)

अनुवाद :- उनके रोम-रोम से अतुलनीय नूर(तेज) की किरणें फैलती होंगी। वे अपने शीघ्रगामी छोड़े से पृथ्वी पर सर्वत्र विचरण करेंगे और राजा के वेष में छिपकर रहने वाले कोटि-कोटि डाकुओं का संहार करेंगे।

व्याख्या :- हमने श्री मद् भागवत पुराण :- स्कंध : 12, अध्याय : 2, ओर श्लोक : 18, में देखा था कि कल्कि अवतार "सम्भलग्राम" अर्थात मक्का शहर में "मुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मनः" अर्थात ऊँचे वंश के पुरोहित के घर "विष्णुयशसः" अर्थात हज़रत अब्दुल्लाह से पैदा होंगे। वह श्लोक है :

सम्भलग्राम मुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मनः ।

भवने विष्णुयशसः कल्किः प्रादुर्भविष्यति ।।

इस श्लोक की व्याख्या के लिए आप हमारा S.No. 47 का श्लोक देख सकते हैं।

और भागवत पुराण के इसी स्कन्ध के 19 वें श्लोक में बताया गया था कि कल्कि अवतार "तेज रफ़्तार घोड़े पर सवार होकर तलवार के द्वारा दुष्टों का दमन करेंगे, वह जगत्पति होंगे और वह आठ ईश्वरीय गुण रखने वाले होंगे"। इन श्लोकों की व्याख्या के लिए आप हमारे S.No. 50 और 51 के श्लोक देख सकते हैं।

अब इसी भागवत पुराण :- स्कन्ध : 12, अध्याय : 2, के श्लोक : 20, में बताया गया है कि कल्कि अवतार के रोम-रोम से तेज यानी नूर की किरणें फैलेंगी और वह अपने तेज़ रफ़्तार घोड़े पर बैठकर जो राजओं के भेस में डाकु छिपे हैं उनका संहार या नाश करेंगें।

हम जानते हैं कि परमात्मा परमेश्वर अल्लाह ने अपने बारे में दिव्य कुरआन में कहा कि "अल्लाहु नूरूस्समावाति वल अर्ज़"(नूरः35) अर्थात अल्लाह ज़मीन और आसमान का नूर है। और एक स्थान पर दिव्य कुरआन में पैग़ंबर मुहम्मद(स) की प्रशंसा करते हुए परमात्मा परमेश्वर अल्लाह फरमाता है "क़द जा-अकुम मिनल्लाहि नूरूंव् वकितबुम् मुबीन"(मायदा : 15) अर्थात "निस्संदेह तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से तेज(नूर) और स्पष्ट किताब आगई है"। इस आयत की व्याख्या करते हुए इस्लाम धर्म के सभी विद्वानों ने यहाँ "नूर"

पैग़ंबर मुहम्मद(स) को कहा और स्पष्ट किताब "दिव्य कुरआन" को कहा। न केवल यह बल्कि हदीसों में कई जगह पर पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने स्वयं को नूर, तेज, प्रकाश या ज्योति कहा है मैं यहाँ केवल एक हदीस प्रकट करना चाहुँगा वह है "अना मिन्नूरिल्लाहि व कुल्लु शैइम् मिन नूरी" अर्थात "मैं अल्लाह के नूर से हूँ और सारा ब्रह्माण्ड मेरे नूर से है" और कई इस्लामिक इतिहास की पुस्तकों में भी कहा गया है कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) के शरीर से नूर या तेज की किरणें फैलती थीं।

और दूसरी बात इस श्लोक में जो बताई गई है वह यह कि कल्कि अवतार तेज़ रफ़तार घोड़े पर बैठकर राजाओं के भेस में छिपे डाकुओं का संहार करेंगे। तेज़ रफ़तार घोड़े और तलवार की व्याख्या के लिए आप हमारा S.No. 50 का श्लोक देख सकते है।

हम जानते हैं कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने राजाओं के भेस में छिपे डाकुओं का संहार किया उन्हें नाश किया जैसे अबूजहेल, उतबा, शीबा, आदि जो राजाओं के भेस में छिपे डाकू थे जिन्होंने ग़रिबों का माल नाहक़ लूटा, ग़रिबों को गुलाम बनाया, सूद या व्याज के द्वारा ग़रीबों का खून चूसा, इतिहास इनके दुर्गुणों से भरा है। इसके अतिरिक्त ईरान और रूम जैसे सम्राट जिनके सत्यचार के कारण लोग परेशान थे। ऐसे दुष्टों का नाश किया। अगर आप पैग़ंबर मुहम्मद(स) के जीवन चरित्र को पढ़ेंगे तो आपको यह बात स्पष्ट हो जाएगी। इसकी अधिक जानकारी के लिए आप हमारा S.No. 33 का श्लोक देख सकते हैं।

प्रमाण - 54

अथ तेशां भविष्यन्ति मनांसि विशदानि वै।
वासुदेवांगरागाति पुण्यगन्धानिलस्पृशाम् ॥

(भागवत पुराण :- स्कन्ध : 12, अध्याय : 2, श्लोक : 21)

भावार्थ :- कल्कि अवतार के शरीर से सुगन्ध निकलेगी, जो हवा में मिलकर लोगों के मन को निर्मल करेगी।

व्याख्या :- कल्कि अवतार हज़रत मुहम्मद(स) के शरीर की ख़ुशबू तो प्रसिद्ध ही है। हज़रत मुहम्मद(स) जिनसे हाथ मिलाते थे, उनके हाथ से दिन भर सुगन्ध आती रहती थी। और पैग़ंबर मुहम्मद(स) के शिष्य कहते हैं कि मुहम्मद(स) के शरीर की सुगन्ध हवा को खुशबूदार कर देती थी। पैग़ंबर मुहम्मद(स) के पसीने से खुशबू आने के अनेक अहादीस हमको मिलते हैं उदाहरणार्थ सही बुखारी, हदीस नं : 6281, में है कि कल्कि अवतार पैग़ंबर मुहम्मद(स) कभी-कभी अपने शिष्य हज़रत अनस(र) के घर जाते और दोपहर के समय थोड़ा सा विश्राम करते, एक दिन हज़रत मुहम्मद(स) ने देखा की हज़रत अनस(र) की माँ ने पैग़ंबर मुहम्मद(स) के थोड़े से पसीने को जो उस चमड़े के बिस्तर पर ठहरा हुआ था एक शीशी में भरने लगीं, तब कल्कि अवतार मुहम्मद(स) की नीन्द खुल गई, तो पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने पूछा ऐ उम्मे सुलेम यह क्या कर रहे हो ? तब हज़रत अनस(र) की माता उम्मे सुलेम(र) ने जवाब दिया या रसूलुल्लाह(स) आपके पसीने को जमा कर रही हूँ क्योंकि यह बहुत खुशबूदार होता है इस पसीने को मैं अपने अतर में मिलाऊँगी ताकि वह ज़्यादा खुशबूदार हो जाए और अपने बच्चों के लिए मैं इसमें बरकत देखती हूँ। यह सुनकर पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने कहा "तुमने सही किया" और आप(स) ने उनके लिए दुआ की। इसलिए हज़रत अनस(र) ने वसीयत की थी कि मेरे मरने के बाद मेरे शरीर पर और मेरे कफ़न पर वही खुशबू लगाई जाए जिसमें हुज़ूर-ए-अनवर-मुहम्मद(स) के पवित्र शरीर का मुबारक पसीना मिला हुआ है। कई हदीसों में हमें यह बात मिलती है कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) के शरीर और आप(स) के पसीने से खुशबू या सुगन्ध निकलती थी। सही बुखारी हदीस : 3553 और मुस्नद अहमद की हदीस नं : 1897 में है कि हज़रत अबू जुहैफ़ा(र) कहते हैं कि "मैंने पैग़ंबर मुहम्मद(स) के हाथ को अपने

चहरे पर रखा, मैंने उनके हाथ को बर्फ से ज्यादा ठंड़ा महसूस किया, पैग़ंबर(स) के हाथ से निकलने वाली खुशबू को मिश्क (कस्तूरी) से ज्यादा खुशबूदार पाया" और पैग़ंबर मुहम्मद(स) के एक शिष्य हज़रत जाबिर(र) कहते हैं कि अगर पैग़ंबर मुहम्मद(स) किसी गली से गुज़रते तो दूसरे लोग आपके शरीर से निकलने वाली सुगन्ध से पहचान लेते कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) यहाँ से गुज़रे हैं। इस प्रकार हमको पैग़ंबर मुहम्मद(स) के शरीर और उनके पसीने में खुशबू होने के कई प्रमाण मिलते हैं। इसकी अधिक जानकारी के लिए आप हदीसों की पुस्तकों में सही बुखारी हदीस नं. 3553, 6281, मुस्नद अहमद 1897, 11,322-11,985, 11,986 और 12,423, भी देख सकते हैं और सर विलियम म्योर(Sir William Muir) ने अपनी पुस्तक "THE LIFE OF MAHOMET from Original Sources" में लिखा कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) के शरीर और पसीने से वास्तव में सुगन्ध आती थी। जब आप(स) घर से निकलते तो सारी हवा भी सुगन्धित हो जाती थी। Sir William Muir ने कहा कि यह सब बातें मैंने Original Sources अर्थात मूल स्रोत से ली हैं जो कि वास्तविक हैं। इस प्रकार इस श्लोक में जो बात बताई गई थी कि कल्कि अवतार के शरीर और पसीने से सुगन्ध निकलेगी यह बात भी पैग़ंबर मुहम्मद(स) से ही पूरी होती है।

प्रमाण - 55

तेषां प्रजाविसर्गश्च स्थविष्ठः सम्भविष्यति।
वासुदेवे भगवति सत्त्वमूर्तौ हृदि स्थिते ।।

(भागवत पुराण :- स्कन्ध : 12, अध्याय : 2, श्लोक : 22)

अर्थ :- कल्कि अवतार अपनी प्रजा(शिष्यों) के हृदयों को पवित्र कर देंगे और उनके दिलों में परमात्मा विराजमान होंगे और फिर उनकी सन्तान शक्तिशाली और बलवान होने लगेगी।

व्याख्या :- हम जानते हैं कि कल्कि अवतार पैग़ंबर मुहम्मद(स) के दुनिया में प्रकट होने से पहले लोग अज्ञानता के अंधेरे में पड़े हुए थे, पापों के कारण उनके दिल काले हो चुके थे और उनके दिलों में केवल शैतान बैठा हुआ था। परंतु कल्कि अवतार पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने दुनिया में आने के बाद लोगों को अज्ञानता के अंधकार से निकाल कर ज्ञान के प्रकाश में लाया और उनके दिलों को दिव्य वाणी द्वारा पवित्र किया और उनके दिलों से शैतान को निकाल कर परमात्मा को बिठाया।

इसी लिये पैग़ंबर मुहम्मद(स) कहते हैं कि चलते फिरते मुरदों में या शवों में सब से पहले ज़िन्दा होने वाले अबूबक्र सिद्दीक़(र) हैं। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़(र) कल्कि अवतार मुहम्मद(स) के प्रथम शिष्य हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि जो लोग अज्ञानता में हैं, जिनके दिल पापों से काले हो चुके हैं और जिनके दिलों में शैतान बैठा हुआ है वास्तव में वह लोग जीवित नहीं हैं बल्कि मरे हुए हैं और एक हदीस में है कि "क़ुलूबुल मौमिनीना अर्शुल्लाहि तअला" अर्थात "पुण्यवान व्यक्ति का हृदय परमात्मा का सिंहासन होता है" और एक हदीस में है कि जब इंसान एक गुनाह करता है तो उसके दिल पर एक काला दाग़ लग जाता है अगर वह व्यक्ति तौबा कर ले अर्थात परमात्मा से क्षमा मांगले तो वह काला दाग़ गायब हो जाता है और अगर वह तौबा न करे और गुनाह या पाप करते ही जाए तो उसका दिल काला हो जाता है। दिल पर काला दाग़ लगना या दिल काला हो जाना आध्यात्मिक रूप से होता है। और दिव्य क़ुरआन के सुरह अल-मुतफ़्फ़िफ़ीन(83) आयत : 14 में अल्लाह तअला का फ़रमान है "हरगिज़ नहीं बल्कि इन लोगों के दिलों पर इनके बुरे कर्मों का जंग चढ़ गया है" और कल्कि

अवतार पैग़ंबर मुहम्मद(स) कहते हैं कि जिस प्रकार लोहे को जंग लगता है उसी प्रकार इंसानों के दिलों को भी जंग लगता है और दिलों का जंग दिव्य कुरआन द्वारा दूर होता है।

इसीलिए दिव्य कुरआन में सूरह अनफाल - आयत : 2, में परमात्मा परमेश्वर अल्लाह फ़रमाता है कि "मौमिन या पुण्यवान वही है कि जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाए तो उनके दिल डर जाते हैं और जब इन पर आयतें पढ़ी जाएँ वह उनके ईमान को बढ़ाती है और वह अपने रब पर भरोसा रखते है"। और एक हदीस में है "अल्लाह अल्लाह फ़ी अस्हाबी" अर्थात "प्रत्येक शिष्य में अल्लाह या परमात्मा विराजमान है"।

इस प्रकार कल्कि अवतार हज़रत मुहम्मद(स) ने अपने शिष्यों के हृदयों को दिव्य कुरआन द्वारा पवित्र किया और परमात्मा उनके दिलों में विराजमान हो गया। जिसका सब से बड़ा प्रमाण यह है कि आज पैग़ंबर मुहम्मद(स) की उम्मत अर्थात मुसलमानों में ही परमात्मा से संबंध रखने वाले अवलिया अल्लाह पैदा हो रहे हैं।

अब दूसरी बात इस श्लोक में जो बताई गई है वह यह है कि उनकी सनतान शक्तिशाली और बलवान होने लगेगी अर्थात न केवल पैग़ंबर मुहम्मद(स) के शिष्यों ने दुष्टों का नाश किया बल्कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) के शिष्यों की संतानों ने भी दुनिया से दुष्टों का नाश किया और पापों को समाप्त किया और दुनिया के कोने कोने तक इस्लाम के दिव्य संदेश को पहुँचाया। जिसके कारण वे शक्तिशाली और बलवान कहलाए। आज दुनिया में सत्तावन(57) मुस्लिम देश हैं जहाँ पर अपराध दूसरे देशों की तुलना में बहुत कम है। इस्लाम में जो पाप को समाप्त करने के किया कठोर नियम बनाए गए हैं वह परमात्मा परमेश्वर अल्लाह की ओर से ही है। जैसे हत्या करने वाले को सज़ाए मौत व्यभिचार करने वाले के लिए सौ(100) कोड़े, चोरी और डकेती करने वाले के हाथ काट दिए जाना,

इत्यादि। इन कठोर नियमों द्वारा दुष्टों का नाश और शिष्टों का परिपालन होता है और शक्तिशाली और बलवान लोग ही परमात्मा के नियमों को दुनिया में स्थापित कर सकते है।

इस प्रकार इस श्लोक में जो भविष्यवाणी दी गई है कि "कल्कि अवतार अपने शिष्यों के हृदयों को पवित्र कर देंगे जिसके बाद उनके दिलों में परमात्मा विराजमान होंगे और उनकी सन्तान भी शक्ति शाली और बलवान होगी" यह भविष्यवाणी भी हज़रत मुहम्मद(स) और आपकी उम्मत अर्थात मुसलमानों द्वारा पूरी होती है।

प्रमाण - 56

यदावतीर्णो भगवान् कल्किर्धर्मपतिर्हरिः।

कृतं भविष्यति तदा प्रजासूतिश्च सात्त्विकी॥

(भागवत पुराण :- स्कन्ध : 12, अध्याय : 2, श्लोक : 23)

अनुवाद :- प्रजा के नयन-मनोहारी हरि ही धर्म के रक्षक और स्वामी हैं। वे ही भगवान जब कल्कि के रूप में अवतार ग्रहण करेंगे, उसी समय सत्युग का प्रारम्भ हो जाएगा और प्रजा की सन्तान परम्परा स्वयं ही सत्त्वगुण से युक्त हो जाएगी।

व्याख्या :- इस श्लोक में बताया गया है कि परमात्मा परमेश्वर अल्लाह ही धर्म के रक्षक और स्वामी है और वही कल्कि का अवतार ग्रहण करेंगे। हम जानते हैं कि कल्कि अवतार पैग़ंबर मुहम्मद(स) "मज़हरूल्लाह" बनकर आए अर्थात परमात्मा को अपने वजूद से दिखाने वाले। एक हदीस में है कि "मन रानी फ-क़द राअल हक़" अर्थात पैग़ंबर मुहम्मद(स) कहते हैं कि "जिसने मुझे देखा उसने परमात्मा परमेश्वर अल्लाह को देखा"। और एक समय पैग़ंबर मुहम्मद(स) की धर्मपत्नी आप से प्रश्न करते हैं कि "हे अल्लाह के रसूल क्या आपने परमात्मा को

देखा है?" अरबी शब्द ये हैं "हल राएता रब्बुका या रसूलल्लाह?" अर्थात "क्या आप(स) ने परमात्मा परमेश्वर अल्लाह को देखा है?" पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने उत्तर दिया "नूरल्ली अराहू" अर्थात "वह नूर मेरा ही है और मैं उसे देखता हूँ" । इस प्रकार अनेक संदर्भों पर कल्कि अवतार पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने खुद को परमात्मा परमेश्वर अल्लाह का ही रूप कहा है।

जैसे भारत के प्राचीन संतों के अनुसार तौहीद यानी एकेश्वरवाद के चार अवस्थाएँ हैं (1) द्वैत, (2) अद्वैत, (3) विशिष्ठा अद्वैत और (4) शक्ति अद्वैत।

इसी प्रकार फुक़रा-ए-इस्लाम भी तौहीद के चार मुक़ाम बताते हैं।
(1) वाहिदियत, (2) वहदत, (3) वहदते खुसूसी और (4) वहदते वजूदी
इन तौहीद या एकेश्वरवाद के अवस्थाओं की अधिक जानकारी के लिए **"हज़रत मौलाना सिद्दीक़ दीनदार चनबस्वेश्वर साहब क़िबला"** की पुस्तक **"जामिउल बहरैन"** पढ़ें, जिस को संस्कृत में **"संगमनाथ"** और अंग्रेज़ी में **"Hindu-Muslim Uniter"** कहते हैं।

अब दूसरी बात इस श्लोक में यह बताई गई है कि जब भगवान कल्कि के रूप में अवतार लेंगे उसी समय सत्युग का प्रारंभ हो जाएगा। सत्युग को अरबी भाषा में "यौमुल हक़" कहते हैं अर्थात हक़ या सत्य के प्रकट होने का ज़माना। हज़रत मुहम्मद(स) के प्रकट होने को परमात्मा परमेश्वर अल्लाह, हक़ का प्रकट होना फ़रमाता है दिव्य कुरआन, सूरह ज़ुखरूफ - आयत : 78, में अल्लाह तअला ने फ़रमाया "लक़द जिअनाकुम बिल हक़" अर्थात "निश्चय ही हम तुम्हारे पास हक़ यानी सत्य लेकर आए हैं"। इस आयत में संबोधन सारे इंसानों की ओर है, और इस हक़ के आने की बशारत या भविष्यवाणी सारे धर्म ग्रंथों में मौजूद है। लगभग सारे धर्म भारत में जमा हैं वह आज से नहीं बल्कि लाखों वर्षों से जमा हैं और जब कभी शाम, मिस्र, ईरान, तुर्किस्तान, मध्य पूर्वी देशों से कोई नबी या अवतार आया निश्चित रूप से इनमें आध्यात्मिक और शारीरिक उन्नति हुई।

प्राचीन काल की ऐसी कोई क़ौम या समुदाय हमें नज़र नहीं आता जिसने भारत की ओर दृष्टि न की हो। आर्यन और सीथियन से पहले आद और समूद की क़ौमें भारत आये थे। जिनका वर्णन दिव्य कुरआन में है जो बहादुर और शक्तिशाली क़ौमें थीं। "आद" आज वह आदी द्राविड़ी कहलाते हैं बड़ी ताक़तवर क़ौमें थीं आज भी वह ताक़तवर हैं इनकी शारीरिक ताक़त की तुलना में आर्यन्स और सीथियन्स कुछ नहीं हैं। आद क़ौम ने ही भारत में बुलंद व बाला, ऊँचे और मज़बूत क़िले बनाये जिसकी मिसाल दुनिया में नहीं है और समूद क़ौम आई इसने पहाड़ों में घरें बनाएँ और शाही दरबारें पत्थारों को काट कर बनाएं हैं आज वह दुनिया में प्रसिद्ध हैं, जैसे अजंता-एलोरा, बादामी, नासिक, आदि। और दूसरी क़ौमें जो बाद मार्गदर्शन के ताक़तवर हुईं वह सब भारत आईं अब भी इनके ज़ात-पात की भिन्नता इस बात का प्रमाण है कि वोह मज़बूत क़ौमें थीं इनके रंग-रूप में भी अंतर है। इनके पास सत्युग की भविष्यवाणी है यानी लिखा है कि पहली बार जो सत्युग होगा वह 3680 वर्ष कल्युग में होगा अर्थात 570 ईसवी में होगा और दूसरी बार जो सत्युग होगा वह 1943 ईसवी में होगा, अंतर 1300 साल का होगा। अल्लाह तअला सारे क़ौमों को संबोधित करते हुए इस बात को दिव्य कुरआन में सूरह ज़ुख़रूफ़ - आयत : 78, में इस प्रकार फरमाता है "निश्चय ही हम तुम्हारे पास हक़ या सत्य लेकर आए हैं, किन्तु तुममें से अधिकतर लोगों को सत्य प्रिय नहीं"। अर्थात इस आयत में सारे लोगों से घोषणा की गई है कि वह हक़ "जगतगुरू हज़रत मुहम्मद(स)" हैं और पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने भी यही फरमाया "मन रअनी फक़द रअ अल हक़" अर्थात "जिसने मुझे देखा उसने हक़ को देखा"। और अल्लाह ने खुला निशान हक़ का यह बताया कि जो नबियों की नबुव्वत और तत्वज्ञान पर विश्वास करेगा वही हक़ है देखें दिव्य कुरआन, सूरह बक़रा - आयत : 91, "व हुवल हक़्क़ु मुसद्दिक़ल लिमा मअहुम" अर्थात "वही हक़ है, उसकी पुष्टि करता है जो उनके पास है"। और पैग़ंबर मुहम्मद(स) के ज़माने के

सारे मुसलमान पैग़ंबर मुहम्मद(स) को हक़ मानते थे अल्लाह तआला स्वयं इसकी गवाही देता है देखे दिव्य कुरआन सूरह बक़रा आयत : 26, "अन्नहुल हक़्क़ु मिर् रब्बिहिम" और अल्लाह तअला ने पैग़ंबर मुहम्मद(स) की किताब को ही हक़ कहा है देखे दिव्य कुरआन, सूरह बक़रा – आयत : 91, "वहुवल हक़्क़ु मुसद्दिक़ल लिमा मअहुम" और अल्लाह तअला पैग़ंबर मुहम्मद(स) के धर्म यानी इस्लाम को ही हक़ कहता है देखें दिव्य कुरआन, सूरह फ़तह – आयत : 28, "हुवल्लज़ी अरसला रसुलहू बिल्हुदा व दीनिल् हक़्" ।

इस प्रकार सत्युग जो कि यौमुल हक़ है अर्थात हक़ या सत्य के प्रकट होने का ज़माना है वह कल्कि अवतार पैग़ंबर मुहम्मद(स) से ही प्रारंभ हुआ है। जिसके कारण आप(स) की प्रजा में और उनकी सन्तान में सत्वगुण पैदा हुए।

इस तरह भागवत पुराण की यह भविष्यवाणी भी कल्कि अवतार अंतिम ऋषि हज़रत मुहम्मद(स) द्वारा ही पूरी होती है।

प्रमाण - 57

अथासौ युगसंध्यायां दस्युप्रायेषु राजसु।
जनिता विष्णुयशसो नाम्ना कल्किर्जगत्पतिः ॥

(भागवत पुराण :- स्कन्ध : 1, अध्याय : 3, श्लोक : 25)

अर्थ :- इसके भी बहुत पीछे जब कलियुग में संध्या अर्थात अंधकार छाने लगेगा और राजा लोग लुटेरे हो जाएँगे, तब जगत् के रक्षक भगवान, विष्णुयश नामक ब्राह्मण के घर कल्कि रूप में अवतीर्ण होंगे।

व्याख्या :- इस श्लोक में कहा गया है कि जब कलियुग में संध्या अर्थात अंधकार छा जाएगा तो राजा लोग लुटेरे हो जाएँगे। हम जानते हैं कि कल्कि अवतार हज़रत मुहम्मद(स) के प्रकट होने से पहले दुनिया पापों के चरम पर थी, जिसकी

लाठी उसकी भैंस की कहावत पूरी होती थी और राजा लोग लुटेरे हो गए थे। अरब देश में राजा या सरदार जैसे अबूजहल, उतबा, शीबा, आदि सब ग़रीबों का नाहक़ माल लूटते और ग़रीबों को ग़ुलाम बनाते और ब्याज के द्वारा मासूम लोगों का खून चूसते थे और छूत-छात, ऊँच-नीच, ज़ात-पात ये सब बुराईयाँ भारत में भी चरम पर थीं जिसके कारण शूद्रों का पतन हो रहा था। परंतु कल्कि अवतार हज़रत मुहम्मद(स) के प्रकट होने के बाद इन राजाओं के भेस में छिपे हुए लुटेरों का नाश हुआ, पापों का खात्मा हुआ और धर्म राज स्थापित हुआ। इसकी अधिक जानकारी के लिए आप हमारा S.No. 53 का श्लोक देख सकते हैं।

आगे इस श्लोक में कल्कि अवतार को "जगत्पति" कहा गया है। जगत का अर्थ होता है ब्रह्माण्ड और पति का अर्था होता है रक्षक। इस प्रकार कल्कि अवतार को "जगत रक्षक" कहा गया है। इतिहास साक्षी है कि कल्कि अवतार हज़रत मुहम्मद(स) ने किस प्रकार जगत की रक्षा की है। पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने दुनिया में आकर दुष्टों का नाश किया और शिष्टों का परिपालन किया और आप(स) ने अपने उपदेशों के द्वारा गिरते हुए समाज को उठाया। पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने औरतों और मासूम बच्चियों की भी रक्षा की। क्योंकि पैग़ंबर मुहम्मद(स) से पहले अरब के लोग अपनी बेटियों को ज़िन्दा ज़मीन में दफन कर देते थे और औरतों पर अत्यचार करना और उनके साथ अन्याय करना आम बात थी, पर पैग़ंबर मुहम्मद(स) के दुनिया में आने के बाद औरतों और मासूम बच्चियों की भी रक्षा हुई और पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने ग़ुलामों और मज़दूरों की रक्षा की और आप(स) महिलाओं के मुक्तिदाता कह लाए। इस प्रकार कल्कि अवतार हज़रत मुहम्मद(स) ने शारिरिक और आध्यात्मिक रूप से लोगों की रक्षा की। न केवल यह बल्कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने दिव्य कुरआन द्वारा ऐसे नियम स्थापित किये जिसके कारण अब क़यामत तक लोगों की रक्षा इस दिव्य कुरआन द्वारा होती

रहेगी। इसीलिए आप(स) को जगत्पति कहा गया है इसकी अधिक जानकारी के लिए आप हमारा S.No. 50 का श्लोक देख सक्ते हैं।

और इस श्लोक में कहा गया है कि कल्कि अवतार, विष्णुयश नामक ब्रह्मण के घर पैदा होंगे। हम जानते हैं कि विष्णुयश संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ होता है "परमात्मा का उपासक" विष्णु अर्थात परमात्मा, यश अर्थात उपासक, इसी विष्णुयश शब्द का अनुवाद अगर हम अरबी भाषा में करेंगे तो अब्दुल्लाह होगा। अब्द अर्थात उपासक, अल्लाह अर्थात परमात्मा। इस प्रकार इतिहास साक्षी है कि हज़रत मुहम्मद(स) के पिता का नाम अब्दुल्लाह था जो एक ब्रह्मण अर्थात हाशमी वंश के क़ुरेश परिवार से थे जो कि बहुत ऊँचा पुरोहित परिवार था और पैग़ंबर मुहम्मद(स) के दादा हज़रत अब्दुल मुत्तलिब काबा पुण्य स्थल के न्यासी(Trustee) भी थे। इसकी अधिक जानकारी के लिए आप हमारे S.No. 47 और 48 के श्लोक देख सकते हैं।

इस प्रकार भागवत पुराण की यह भविष्यवाण भी कल्कि अवतार हज़रत मुहम्मद(स) के द्वारा ही पूरी होती है।

प्रमाण - 58

इदं भागवतं नाम पुराणं ब्रह्मसम्मितम्।
भक्तिज्ञानविरागाणां स्थापनाय प्रकाशितम्॥

(भागवत पुराण – माहात्म्य, अध्याय : 2, श्लोक : 71)

अर्थ :- यह भागवत पुराण वेदों के समान है। श्रीव्यासदेव ने इसे भक्ति, ज्ञान और वैराग्य की स्थापना के लिये प्रकाशित किया है।

व्याख्या :- भागवत पुराण के इस श्लोक में स्पष्ट रूप से यह बात बताई गई है कि भागवत पुराण कोई साधरण ग्रंथ नहीं है बल्कि यह वेदों के समान है। और वेद

व्यास महर्षि ने साफ़ लफ़्ज़ों में कह दिया है कि यह भागवत पुराण भक्ति, ज्ञान और वैराग्य की स्थापना के लिए प्रकाशित किया गया है।

हमने आपके सामने श्री मद् भागवत पुराण के कई श्लोकों की व्याख्या की है जिनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि कल्कि अवतार, जगत्पति, जगतगुरू, हज़रत मुहम्मद(स) ही हैं।

आइये भागवत पुराण के उन श्लोकों का सारांश देखें जिनमें कल्कि अवतार की विशेषताएँ बताई गई हैं जिनकी व्याख्या हमने हमारे पिछले श्लोकों में कर दी है।

श्री मद् भागवत पुराण :- स्कन्ध : 12, अध्याय : 2, श्लोक : 18 में यह भविष्यवाणी दी गई थी कि कल्कि अवतार सम्भलग्राम में एक श्रेष्ठ ब्रह्मण के घर में पैदा होंगे और उनके पिता का नाम विष्णुयश होगा। यह भविष्यवाणी भी हज़रत मुहम्मद(स) द्वारा पूरी हुई सम्भल या शम्भलग्राम मक्का शहर को कहा गया है "शम्भल" शब्द "शम्" धातू से बना है जिसका अर्थ "शान्त करना" होता है। इस प्रकार शम्भलग्राम का अर्थ होता है "शान्ति का शहर" मक्के शहर का दूसरा नाम "ब-ल-दुल अमीन" है अर्थात "शान्ति का शहर" । इस तरह शम्भलग्राम और बलदुल अमीन दोनों शब्दों का अर्थ एक ही है और वह मक्का शहर है और विष्णुयश को अरबी भाषा में अब्दुल्ला कहते हैं जो की हज़रत मुहम्मद(स) के पिता का नाम था। इस श्लोक की व्याख्या के लिए आप हमारा S.No. 47 का श्लोक देख सकते हैं।

और भागवत पुराण के इसी स्कन्ध के 19 वें श्लोक में कल्कि अवतार को आठ ईश्वरीय गुणों से युक्त कहा गया था और यह भी भविष्यवाणी दी गई थी कि कल्कि अवतार घोड़े पर सवार होकर हाथ में तलवार लिए हुए दुष्टों का नाश करेंगे और शिष्टों का परिपालन करेंगे। संस्कृत भाषा के बहुत बड़े पंड़ित डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय जी ने अपनी पुस्तक "कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब" में

बड़ी ही अच्छी व्याख्या करते हुए लिखा कि यह दौर घोड़ों और तलवारों का नहीं है हमें कल्कि अवतार को पहचानने के लिए 1400 वर्ष पीछे जाना होगा और आपने कहा कि वह कल्कि अवतार हज़रत मुहम्मद(स) ही हैं। इस प्रकार यह भविष्यवाणी भी हज़रत मुहम्मद(स) द्वारा ही पूरी हूई देखें S.No. 50 और 51 के श्लोक।

और इसी स्कन्ध के 20 वें श्लोक में यह भविष्यवाणी दी गई थी कि कल्कि अवतार के रोम-रोम से तेज(नूर) की किरणें फैलेगी और वह तेज़ रफ़तार घोड़े पर सवार होकर राजा के भेस में छिपे ड़ाकुओं का संहार करेंगे। यह भविष्यवाणी भी हज़रत मुहम्मद(स) द्वारा पूरी हुई। इस श्लोक की व्याख्या के लिए आप हमारा S.No. 53 का श्लोक देख सकते है।

और भागवत पुराण के 21 वें श्लोक में कहा गया था कि कल्कि अवतार के शरीर से सुगन्ध निकलेगी, जो हवा में मिलकर लोगों के मन निर्मल करेगी। यह भविष्यवाणी भी कल्कि अवतार हज़रत मुहम्मद(स) द्वारा ही पूरी हुई। इस श्लोक के स्पष्टिकरण के लिए आप हमारा S.No. 54 का श्लोक देख सकते हैं।

और भागवत पुराण के इसी 12 वें स्कन्ध के 22 वें श्लोक में यह भविष्यवाणी दी गई थी कि कल्कि अवतार अपनी प्रजा के हृदयों को पवित्र कर देंगे और उनके दिलों में परमात्मा विराजमान होंगे और फिर उनकी सन्तान शक्तिशाली और बलवान होने लगेगी। यह भविष्यवाणी भी हज़रत मुहम्मद(स) द्वारा ही पूरी हुई। इस श्लोक की व्याख्या के लिए आप हमारा S.No. 55 का श्लोक देख सकते हैं।

और भागवत पुराण के स्कन्ध : 12, अध्याय : 2, और श्लोक : 23 में भविष्यवाणी दी गई थी कि कल्कि अवतार धर्म के रक्षक और स्वामी होंगे और वह जब अवतरित होंगे उसी समय सत्युग का प्रारंभ होगा। हमने देखा की कल्कि अवतार हज़रत मुहम्मद(स) किस प्रकार धर्म के रक्षक और स्वामी कहलाए और

किस प्रकार पैग़ंबर मुहम्मद(स) के प्रकट होते ही सत्युग का प्रारंभ हो गया। इस श्लोक की व्याख्या के लिए आप हमारा S.No. 56 का श्लोक देख सकते हैं।

और भागवत पुराण :- स्कन्ध : 1, अध्याय : 3, श्लोक : 25, में भविष्यवाणी दी गई थी कि भगवान उस समय कल्कि का अवतार ग्रहण करेंगे जब कलियुग में राजा लोग लुटेरे हो जाएँगें। और यह भी बताया गया कि वह विष्णुयश नामक ब्रह्मण के घर कल्कि का रूप अवतीर्ण करेंगे। यह भविष्यवणी भी कल्कि अवतार हज़रत मुहम्मद(स) द्वारा ही पूरी हुई। इस श्लोक की व्याख्या के लिए आप हमारा S.No. 57 का श्लोक देख सकते हैं।

तो कहने का तात्पर्य यह है कि इस श्लोक में अर्थात भागवत पुराण माहात्मय - अध्याय : 2, श्लोक : 71 में यह बात बताई जारही है कि भागवत पुराण वेदों के समान है तो हमें चाहिए कि इस भागवत पुराण के भविष्यवाणियों के अनुसार हम कल्कि अवतार हज़रत मुहम्मद(स) पर विश्वास लाकर इहलोक और परलोक में सफलता प्राप्त करें।

प्रमाण - 59

इदं भागवतं नाम पुराणं ब्रह्मसम्मितम्।
भक्तिज्ञानविरागााणं स्थापनाय प्रकाशितम्॥

(भागवत पुराण माहात्म्य :- अध्याय : 2, श्लोक : 71)

अर्थ :- यह भागवत पुराण वेदों के समान है। श्रीव्यासदेव ने इसे भक्ति ज्ञान और वैराग्य की स्थापना के लिये प्रकाशित किया है।

व्याख्या :- भागवत पुराण के इस श्लोक में यह बात स्पष्ट रूप से बताई गई है कि भागवत पुराण वेदों के समान है और श्री वेद व्यास महर्षि जी ने भागवत पुराण को भक्ति, ज्ञान और वैराग्य की स्थापना के लिए प्रकाशित किया है।

भागवत पुराण के कई श्लोकों में कल्कि अवतार की भविष्यवाणी दी गई है कुछ श्लोकों की व्याख्या हमने हमारे पिछले श्लोकों में कर दी है। जिनसे यह स्पष्ट हो गया कि कल्कि अवतार हज़रत मुहम्मद(स) ही हैं। श्रीमद् भागवत पुराण की विशेषता भक्ति, ज्ञान और वैराग्य की स्थापना बताई गई है। तो हमें यह देखना होगा कि क्या कल्कि अवतार हज़रत मुहम्मद(स) में भक्ति, ज्ञान और वैराग्या ये तीन विशेषताएँ थी अथवा नहीं।

पहली विशेषता "भक्ति" बताई गई है। "भक्ति" का अर्थ होता है परमात्मा की प्रेम से प्रार्थना करना या दूसरे शब्दों में "अल्लाह की इबादत" करना है।

हम जानते हैं कि कल्कि अवतार हज़रत मुहम्मद(स) हमेशा अल्लाह की इबादत में या भक्ति में मगन रहते थे। पैग़ंबर मुहम्मद(स) पैंतीस(35) साल से लेकर चालीस(40) साल की आयु तक ग़ारे हिरा में अकेले जाकर परमात्मा की भक्ति में लीन रहते थे। जिस गुफ़ा में कोई भी व्यक्ति सीधा खड़ा नहीं हो सकता और जो सैंकड़ों फुट ऊँचाई पर है। जब पैग़ंबर मुहम्मद(स) की आयु चालीस वर्ष की हुई तब परमात्मा परमेश्वर अल्लाह ने अपने फ़रिश्ते जिबराईल द्वारा पैग़ंबर मुहम्मद(स) को अवतारवाद की पदवी प्रदान की। और आप(स) को अंतिम अवतार बनाया। अवतारवाद की पदवी मिलने के बाद पैग़ंबर मुहम्मद(स) की भक्ति बहुत बढ़ गई थी। पैग़ंबर मुहम्मद(स) परमात्मा के आदेश अनुसार रोज़ाना नमाज़ पढ़ते, रातों में उठकर रोज़ाना तहज्जुद की नमाज़ पढ़ते और दो दो तीन-तीन घंटे आप(स) नमाज़ में खड़े रहते जिसके कारण आप(स) के पैर(Foot) सूज जाते यह देखकर आप(स) की धर्मपत्नी हज़रत आईशा(र) ने एक बार कहा कि "ऐ अल्लाह के रसूल(स) आप तो बहुत पुण्यवान हैं फिर आप परमात्मा की इतनी कठोर भक्ति करके स्वयं को इतना कष्ट क्यों देते हैं" तब पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने उत्तर दिया "ऐ आईशा क्या मैं भक्ति कर के परमात्मा का शुक्रगुज़ार बन्दा न बनू"। हम यह तीन विशेषताएँ(भक्ति, ज्ञान और वैराग्य) जो कल्कि अवतार पैग़ंबर

मुहम्मद(स) में है इन्हें संक्षिप्त में बता रहे हैं इन विशेषताओं को आप विस्तार से जानना चाहते हैं तो पैग़ंबर मुहम्मद(स) के जीवन चरित्र के पस्तकों का अध्ययन कर सकते हैं।

और दूसरी विशेषता "ज्ञान" बताई गई है यह विशेषता भी कल्कि अवतार हज़रत मुहम्मद(स) में संपूर्ण रूप से थी। ज्ञान को मुसलमान इल्मो इरफ़ान कहते है और पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने कहा "अना उल्लिमतु अव्वलुहु व आखिरहु" अर्थात "मुझे ज्ञान दिया गया है आदि और अनादि काल का" और हम जानते हैं कि कल्कि अवतार हज़रत मुहम्मद(स) ने आदि काल के अवतारों का, उनकी ग्रंथों का, उनकी कौमों का, दुनिया को ज्ञान दिया और दुनिया के अंत तक होने वाली सारी घटनाओं की भविष्यवाणीयों का दुनिया को ज्ञान प्रदान किया और पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने कहा "अना मदीनतुल इल्म" अर्थात "मैं ज्ञान का शहर हूँ"। इस प्रकार परमात्मा ने पैग़ंबर मुहम्मद(स) को संपूर्ण ज्ञान प्रदान किया है।

तीसरी विशेषता "वैराग्य" बताई गई है यानी जीवनमुक्त अर्थात सांसारिक बंधनों से छुटकारा प्राप्त करना। फुक़रा-ए-इस्लाम वैरागय को "फ़कीरी" कहते हैं। अधिकतर लोगों ने वैराग्या या फ़क़ीरी को नहीं समझा है। बहुत सारे लोग वैराग्य प्राप्त करने की इच्छा से ब्रह्मचारी बन जाते हैं और वे जीवन भर शादी नहीं करते और संतान को पैदा नहीं करते और समझते हैं कि हमने संसारिक बंधनों से छुटकारा प्राप्त कर लिया है और हम सन्यासी या वैरागी बन गए हैं। यह लोगों की गलत धारणा है। ब्रह्मचारी का अर्थ होता है कि "ब्रह्म के सिद्धांतों पर आचरण करने वाला" न कि शादी विवाह न करने वाला। क्या शिव जी ने शादी नहीं की थी, क्या राम जी ने शादी नहीं की थी, क्या कृष्ण जी ने शादी नहीं की थी। अगर दुनिया के सब लोग ऐसे लोगों की तरह ब्रह्मचारि, देवदासी, फ़ादर, नन, आदि बन जाएँ तो फिर यह दुनिया पचास-साठ साल में समाप्त हो जाएगी।

परंतु ऐसा नहीं है, वैराग्य का अर्थ हरग़िज़ यह नहीं है कि आप शादी न करें आप संतान पैदा न करें, आप घर-बार को छोड़कर वन या जंगल चले जाएँ, आदि आदि। वैराग्य या फ़क़ीरी का वास्तविक अर्थ होता है दुनिया में रहते हुए दुनिया के मोह-मया से बचे रहें और सांसारिक बंधनों को रखते हुए भी उन बंधनों से मुक्त रहें और परमात्मा परमेश्वर अल्लाह के बताए हुए नियमों का संपूर्ण रूप से पालन करते रहें। जिस प्रकार एक कमल का फूल पानी में होता है परंतु उस फूल पर एक बूंद पानी नहीं होता। और जिस प्रकार नाव(कश्ती) के नीचे पानी रहता है तो सफ़र आसान रहता है जब वही पानी नाव में भर जाए तो नाव डूब जाती है। इस प्रकार पुण्यवान लोग संसार में रहते हैं उनके बीबी बच्चे घर-दार सब होता है परंतु वे लोग इस सांसारिक माया से दूर रहते है।

मैं यहाँ आपको यह बात उदाहरण देकर समझाना चाहता हूँ क्योंकि उदाहरण से कोई भी बात अच्छी तरह समझ आ जाती है।

किसी गाँव में एक बहुत बूढे गुरू और एक शिष्य रहते थे। गुरू गाँव के किनारे एकांत में परमात्मा की भक्ति में मगन रहते थे। शिष्य का घर गाँव में था वह अपनी बीबी बच्चों के साथ रहते थे। और रोज़ाना गुरू को भोजन लेजाकर दिया करते। एक दिन शिष्य को कुछ काम के कारण शहर जाना पड़ा तो शिष्य ने अपनी पत्नी से कहा कि तुम आज दोपहर का भोजन मेरे गुरू को दे आओ मुझे आने तक शाम हो जाएगी, पत्नी ने कहा ठीक है। पति ने पूछा तुम कैसे जाओगी रास्ते में नदी है और वहाँ नाव भी नहीं होती, तब पत्नी ने कहा आप ही बताइए कि मैं कैसे नदी पार करूँ, पति ने कहा तुम नदी से कहना "ऐ नदी मैं ऐसे पति की पत्नी हूँ जो मुझे कभी हाथ भी नहीं लगाए, पत्नी ने यह बात सुनकर पति से कहा क्यों झूठ कहने के लिए बोल रहे हो जी क्या हमारे छह(6) बच्चे नहीं हैं पति ने कहा हाँ छप बच्चे तो हैं परंतु यह झूठ नहीं है तुम ऐसा ही कहो नदी तुम्हें रास्ता दे देगी। पति शहर चले गए और पत्नी भोजन लेकर गुरूजी के पास जाने लगी

तो रास्ते में नदी बह रही थी पत्नी ने नदी से कहा "ऐ नदी मैं ऐसे पति की पत्नी हूँ जो मुझे कभी हाथ नहीं लगाए" यह सुनकर नदी रास्ता दे देती है और पानी दोनों ओर हट जाता है पत्नी जब गुरू जी के पास पहुँचती है तो देखा कि गुरूजी परमात्मा की भक्ति में लीन है कुछ देर बाद गुरू जी ने आंखें खोली और अपने शिष्य की पत्नी से कहा बैठो बेटी शायद तुम भोजन लाई हो यह कहकर गुरू जी ने अपने हाथ-मूह धोए और भोजन किया पानी भी पी लिया और जाते समय उस औरत से पूछा बेटी आते समय नदी को क्या कहा था कि उसने तुम्हें रास्ता दे दिया तब औरत ने कहा गुरू जी मैंने कहा "ऐ नदी मैं ऐसे पति की पत्नी हूँ जिसने मुझे कभी हाथ भी नहीं लगाया" तो नदी ने रास्ता दे दिया। गुरूजी ने कहा अब जाते समय तुम्हें नदी से यह कहना होगा कि "ऐ नदी मैं ऐसे पति की पत्नी हूँ जिनके गुरू ने कभी खाया और न पिया"। यह बात सुनकर स्त्री हैरान हो गई और मन ही मन में सोंचने लगी कि यह गुरू भी झूठा और चेला भी झूठा है। जब वापस नदी के पास वह स्त्री पहुँची तो नदी से कहा "अए नदी मैं ऐसे पती की पत्नी हूँ जिनके गुरू ने कभी खाया न पिया" तो नदी ने रास्ता दे दिया। जब पति शाम को घर आए तो पत्नी ने कहा यह क्या मामला है कि आपने भी झूठ कहा कि मुझे कभी हाथ नहीं लगाया जब कि हमारे छह बच्चे हैं और आपके गुरू जी ने भी खा पी कर कहा कि मैने न कभी खाया और न पिया। परंतु नदी झूठों का साथ कैसे दे सकती है। इस बात का मुझे उत्तर दो पत्नी ने पति से कहा। पति ने कहा कल उत्तर दूंगा। रात दोनों सो गए जब सुबह हुई तो पत्नी ने जवाब पूछा पति ने कहा एक कटोरे में दूध भर कर लाओ फिर कहा कि आज गाँव में मेला लगा है जाओ और मेला देखकर आओ परंतु सावधान रहना दूध का एक बूंद भी नीचे ज़मीन पर नहीं गिरना चाहिए अगर गिरा तो मैं तुम्हें छोड़ दूंगा। पत्नी दूध का प्याला लिए हुए मेले में गई और सब घूमकर वापस घर आई और पति से कहा देखो जी दूध का एक बूंद भी नीचे नहीं गिरा। पति ने पूछा मेले में क्या-क्या देखे

हो, पत्नी ने कहा कुछ नहीं मेरी नज़र केवल इस कटोरे पर थी। तब पति ने पत्नी से कहा कि जिस प्रकार तुमने सारा मेला घूमा परंतु कुछ नहीं देखा तुम्हारी नज़र प्याले पर थी इसी प्रकार जो फ़क़ीर या वैरागी होते हैं उनके बीबी बच्चे भी होते है वह खाते-पीते भी हैं परंतु उनकी नज़र परमात्मा की ओर होती है। एक कवि ने क्या खूब कहा है :

दुनिया में हूँ मगर दुनिया का तलबगार नहीं हूँ
बाज़ार से गुज़रा हूँ मगर खरीदार नहीं हूँ।

रावण ने जब सीता देवी का अपहरण कर लिया था तब राम जी सीते-सीते पुकारते फिरते थे। उस समय अगस्त मुनी ने राम जी को ईश्वर के सहस्र नाम जप करने के लिए कहा और एक ऐसा समय आया कि जब अगस्त मुनी ने राम जी के पास आकर सीता कहा तो राम जी ने कहा कौन सीता ? और इसके बाद ही राम जी ने रावण को परास्त कर के सीता देवी को वापस लाया। कहने का तात्पर्य यह है कि जो व्यक्ति पत्नी, सन्तान, धन-दौलत आदि सब रखते हुए उनके मोह से मुक्त हो जाता है उसको वैरागी कहते हैं और यही वैराग्य है। वास्तव में यह वैराग्य या फ़क़ीरी है इसीलिए कल्कि अवतार हज़रत मुहम्मद(स) ने कहा "अल फ़क़रू फ़खरी वल फ़क़रू मिन्नी" अर्थात "मुझे फ़क़ीरी पर फ़खर है और फ़क़ीरी मुझ से है"। इसीलिए हज़रत मुहम्मद(स) बीवी, बच्चे, घर-दार सब रखते हुए भी उनकी माया और मोह से मुक्त थे।

इसीलिए पैग़ंबर(स) ने अपनी चालीस साल की आयु के बाद अर्थात अवतारवाद की घोषणा के बाद कभी भी दुनिया का काम नहीं किया केवल धर्म के प्रचार और प्रसार में जीवन बिता दिया। वैराग्य की व्याख्या के लिए एक पुस्तकलय(Library) की अवश्यकता है मैंने केवल संक्षिप्त में बताया है।

इस प्रकार कल्कि अवतार हज़रत मुहम्मद(स) के अंदर भक्ति, ज्ञान और वैराग्य संपूर्ण रूप से था।

प्रमाण - 60

नराशंसमिह प्रियमस्मिन् यज्ञ उप ह्वये ।

मधुजिह्वं हविष्कृतम् ।।

(ऋग्वेद :- मंडल : 1, सूक्त : 13, मंत्र : 3)

अर्थ :- नराशंस(मुहम्मद(स)) इस संसार में सब जीवों से मुब्बत करने वाले होंगे। प्रार्थना और कुर्बानी करने वाले तथा मीठी जुबान रखने वाले होंगे ।

व्याख्या :- ऋग्वेद के इस मंत्र में पैग़ंबर मुहम्मद(स) को "नराशंस" कहा गया है। "नराशंस" शब्द "नर" और "आशंसा" दो शब्दों से मिलकर बना है । "नर" का अर्थ होता है मनुष्य और "आशंस" का अर्थ होता है "प्रशंसित"(Praised) या "जिसकी तारीफ़ की गई" ।

अगर हम अरबी भाषा के "मुहम्मद" शब्द को देखेंगे तो पता चलेगा कि "मुहम्मद" शब्द "हम्द" अर्थात "प्रशंसा करना", धातु से बना हुआ है, जिसका अर्थ "प्रशंसित" या तारीफ़ किया हुआ होता है । क्योंकि मुहम्मद(स) नर यानी इंसान भी थे और उनकी तारीफ़ सारे अवतारों और नबियों ने की थी और हर एक धर्म ग्रंथ में मुहम्मद(स) की प्रशंसा है । अतः "नराशंस" शब्द अरबी भाषा में "मुहम्मद" शब्द का ही अर्थ रखता है जैसे जल, पानी, वाटर, आब, आदि ये सब शब्द एक ही वस्तु को संबोधित करते हैं भाषा विभिन्न है परंतु तत्व एक है ।

और "नराशंस" की भविष्यवाणी हमें चारों वेदों में मिलती है । अथर्ववेद के कुंताप सूक्त में स्पष्ट रूप से बता दिया गया है कि "वह लोगों में प्रशंसा पाने वाला होगा, ऊँट पर सवारी करने वाला होगा, जिन्हें सौ सोने के सिक्के, दस हार, तीन सौ घोड़े और दस हज़ार गायें दिए जाएंगे, इत्यादि" । इन बातों की व्याख्या के लिए आप हमारे S.No. 1, 2 और 3 के मंत्र देख सकते हैं ।

अब इस मंत्र में दूसरी बात जो बताई गई है वह यह कि नराशंस अर्थात हज़रत मुहम्मद(स) सब जीवों से मुहब्बत करने वाले होंगे। हम जानते हैं कि हज़रत मुहम्मद(स) न केवल इंसानों से बल्कि सारे जीवों से मुहब्बत करते थे। आप(स) ने फ़रमाया कि पशुओं पर अत्यचार मत करो, उन पर ज़्यादा बोझ मत डालो, उन्हें अच्छे से भोजन दो, आदि- आदि। पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने एक बार देखा कि कुछ लोग भेड़ों को तीरों से मार रहे हैं तब पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने क्रोध से कहा कि "बुद्धिहीन जानवर को विकलांग मत करो" एक आदमी एक ऐसे गधे के साथ पैग़ंबर मुहम्मद(स) के पास से गुज़रा, जिसका मूह दाग़ दिया गया था, यह देखकर पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने कहा "अल्लाह उसे शाप देगा, जिसने इसे दाग़ा है" और आप(स) ने कहा कभी किसी पशु को मत दाग़ना और एक व्यभिचारिणी को इसलिए माफ़ किया गया, क्योंकि जब वह एक कुएँ के पास से गुज़र रही थी, तब उसने एक कुत्ते को देखा जो प्यास के कारण अपनी जीभ निकाले हुए था, तो उसने अपनी जूती खोली और उसे अपनी ओढ़नी से बाँधा और पानी निकाल कर उस कुत्ते की प्यास बुझाई, इसीलिए उसे माफ़ कर दिया गया। जब पैग़ंबर मुहम्मद(स) से यह पूछा गया, "क्या हमें पशुओं के प्रति अपने व्यवहार के लिए कोई इनाम मिलेगा ?" पैग़ंबर(स) ने कहा, ज़रूर इनाम मिलेगा, पवित्र और कोमल हृदय से हमारे जितने व्यवहार होते हैं, उन सब के लिए इनाम मिलेगा। एक बार पैग़ंबर मुहम्मद(स) किसी अंसार के बग़ीचे में बैठे हुए थे। इतने में एक ऊँट पैग़ंबर मुहम्मद(स) के पास आया और जोरों से सिसकियाँ भरने लगा और उसकी आँखों से आँसू बहने लगे, पैग़ंबर मुहम्मद(स) उसके पास गए और उसके सिर को थपथपाया तब वह ऊँट शान्त हुआ। पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने पूछा "इस ऊँट का मालिक कौन है ?" अंसार के एक नौजवान ने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल ! यह मेरा है। पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने पूछा, क्या इस बुद्धिहीन जानवर के लिए तुम अल्लाह से नहीं डरते, जिसे अल्लाह ने तुम्हें सौंपा है, यह ऊँट मुझ से शिकायत

कर रहा है कि तुम इसे सताते हो और थका डालते हो और पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने कहा इसको तुम मत सताओ और न इस पर ज़्यादा बोझ डालो" । इस प्रकार अनेक घटनाएँ हमें इतिहास के पुस्तकों में मिलती है जिस से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि हज़रत मुहम्मद(स) सब जीवों से मुहब्बत करते थे।

अगर आप यह सोंच रहे हैं कि इसलाम में जीव हत्य है तो यह जानना चाहिए कि यह जीव हत्य नहीं है बल्कि जीव उन्नति है। हमारे हिन्दू शास्त्रों में भी यह बात बताई गई है कि घास प्रार्थना करती है कि हे परमेश्वर मुझे भी इन पशुओं जैसा चलने-फिरने वाला बना दे, और जब पशु घास को खाते हैं तो उस से भोजन बनकर, रक्त बनता है और फिर वीर्य बनता है फिर बच्चा पैदा होता है। इस प्रकार घास पर पशु का अत्यचार नहीं हुआ बल्कि पशु ने घास की उन्नति कर दी है। इसी प्रकार पशु परमात्मा से प्रार्थना करता है कि हे परमात्मा मुझे मानव बना दे ताकि मैं तेरी स्तुति और प्रार्थना कर सकूँ। इसीलिए परमात्मा परमेश्वर अल्लाह ने पशु की बलि या कुर्बानी को हलाल(वैध) घोषित किया है। इसकी अधिक जानकारी के लिए आप हमारा वीडियो "क्या मांस खाना पाप है ?" हमारे "Hindu-Muslim Uniter" यूट्यूब चैनल में देख सकते हैं।

तीसरी भविष्यवाणी इस मंत्र में यह दी गई है कि "नराशंस" प्रार्थना करने वाले और कुर्बानी करने वाले होंगे। यही बात दिव्य कुरआन, सूरह कौसर में कही गई है "इन्ना आतैना कल्कौसर, फ़सल्ली लिरब्बिका वन्हर, इन्नाशानिअका हुवल् अबतर" अर्थात "निश्चय ही हमने तुम्हें कौसर प्रदान किया, अतः तुम अपने रब ही के लिए नमाज़ पढ़ो और क़ुर्बानी करो"। नमाज़ एक संपूर्ण प्रार्थना है किसी धर्म में लोग खड़े होकर प्रार्थना करते हैं और किसी धर्म में झुक कर, किसी में दंडम अर्थात सजदे में, किसी धर्म में बैठकर प्रार्थना करते हे। परंतु इस्लाम एक संपूर्ण धर्म होने के कारण इसमें प्रार्थना भी संपूर्ण बताई गई है अर्थात नमाज़ में खड़े होकर, झुक कर, दंडम और बैठकर इन चारों अवस्थाओं में परमात्मा की

प्रार्थना करते हैं और यह प्रार्थना मुसलमान दिन में पाँच बार करते है जिसका वर्णन श्री वेद व्यास महर्षि जी की महासंकल्प संध्यावंदन के 16 वें मंत्र में इस प्रकार वर्णित है "प्रातः, मध्यानिक, सायं, संध्या, उपासिशे, नमः नमः नमः"। इसी को मुसलमान फ़जर, ज़ोहर, असर, मग़रीब और इशां कहते हैं।

और कुरबानी केवल पशु बलि को नहीं कहते हैं बल्कि इंसान का जान-माल, उसकी दौलत उसकी संतान यहाँ तक कि उसका समय भी परमात्मा परमेश्वर अल्लाह के कार्य में लगा देना कुर्बानी कहलाता है। जिस प्रकार पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने अपना माल और दौलत धर्म के कार्यों में लगा दिया और अपना जीवन भी धर्म के कार्य में समर्पित कर दिया। पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने अपने शिष्यों को भी यही शिक्षा दी जिसके कारण आप(स) के शिष्यों ने भी जान-माल, संतान-संपत्ति सब कुछ परमात्मा परमेश्वर अल्लाह के लिए कुरबान कर दिया।

चौथी बात इस मंत्र में यह बताई गई है कि नराशंस मधुजिह्व वाले होंगे अर्थात मुहम्मद(स) मधुर भाषी होंगे मीठी बोली बोलने वाले होंगे और उनका भाषण सम्मोहित करने वाला होगा। इतिहासकारों ने भी यहीं बाह हज़रत मुहम्मद(स) के बारे में कही है कि पैग़ंबर मुहम्मद(स) की वाणी मधुर थी और आपकी बातचीत बहुत कोमल रहती थी इसकी अधिक जानकारी के लिए :

a) "Life of Mohammad" by Sir William Muir.

(Published by : Smith Elder and Co., London)

b) "Introduction to the Speeches of Muhammad" by Lane Poole.

(Published by : Macmillan and Co., London)

इन पुस्तकों का अध्ययन कर सकते हैं।

दिव्य कुरआन भी यही बात की पुष्टि करता है देखें सूरह आले इमरान, आयत : 169, अल्लाह परमात्मा परमेश्वर फ़रमाता है "सो अल्लाह की करूणा से तुम इनके लिए नर्म और दयालू हो और अगर तुम सख्त बात करने वाले, और

कठोर हृदय वाले होते तो यह लोग तुम से दूर भाग जाते"। और एक जगह दिव्य कुरआन सूरह कलम, आयत : 4 में अल्लाह तआला फरमाता है "व इन्नका लअला खुलक़िन अज़ीम" अर्थात और आप(स) निस्संदेह बहुत बुलंद सदाचार और शिष्टाचार रखते हैं।

इस प्रकार ऋग्वेद के इस मंत्र में जो जो विशेषताएँ बताई गई हैं वे सब अंतिम ऋषि नराशंस कल्कि अवतार हज़रत मुहम्मद(स) में संपूर्ण रूप से पाई जाती हैं।

हमे भेद-भाव को खत्म कर के नराशंस कल्कि अवतार, जगत गुरू हज़रत पैग़ंबर मुहम्मद(स) को स्वीकार कर लेना चाहिए, इसीलिए श्री कल्याण बस्वेश्वर अपनी पुस्तक विरशैवा मत सारसंग्रः में लिखते हैं

"सप्तधातु समम् पिंडम्, समयोनी समोद् भवम्।
आत्म जीवा समोत्पन्नः, वर्णानां किम् प्रयोजनम्" ॥

अर्थात : सात धातुओं से बना हुआ यह मानव का शरीर सब का समान है, आत्मा और जीव भी सब में बराबर होने के बाद इंसानों को ज़ातों में बांटने से क्या फ़ाइदा।

और निरालंब उपनिषद पेज नं. 501 में इस प्रकार कहा गया है

"न चर्मणों न रक्तस्य न मांसचा स्थिनः
न जाति रात्मनो जाति व्यवहार प्रकल्पितः" ॥

अर्थात : चमड़े में ख़ून और गोश्त में हड्डी में कोई अंतर नही है और न आत्मा में कोई फ़र्क है। ये ज़ात-पात इंसानों के बनाए हुए हैं और श्री वेदव्यासमुनि कृत संध्यावंदनम् में पैग़ंबर मुहम्मद(स) को आदि ब्रह्मण कहा गया है इसीलिए श्री मद् भागवत पुराण में कहा गया है

"जन्मना जायते शूद्रः कर्मना जायते द्विजः।
वेदपाठान्तु विप्रनाम ब्रह्मज्ञानेतो ब्रह्मणः" ॥

अर्थात : प्रत्येक मनुष्य जन्म से शूद्र होता है, कर्म करने से वह द्विज बनता है, वेद पाठ करने से ज्ञान मिलता है, ब्रह्म के ज्ञान से वह ब्रह्मण होता है ॥

और विष्णु सहस्र नामवलि, श्लोक : 7 में कहा गया है

"ब्रह्मण्यं सर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्ति वर्धनम् ।
लोकनाथं महद्भूतं सर्वभूत भवोद भवम्" ॥

अर्थात : ब्रह्मण सारे धर्मो का ज्ञान रखने वाला होता है दुनिया में उसका सम्मान और उसकी प्रशंसा होती है वह लोकनाथ बड़े गौरव वाला होता है और सारे भूतों में मौजूद रहेगा ।

अंत में मैं परमात्मा परमेश्वर अल्लाह से प्रार्थना करता हूँ कि वह हमें उसी नराशंस को मानने की क्षमता प्रदान करे जिसकी भविष्यवाणी परमात्मा ने दी है ।

यह फ़क़ीर इस सेवा को परमात्मा परमेश्वर अल्लाह को भेंट कर के यह प्रार्थना करता है कि हे अल्लाह ! लोगों की आंखों पर जो ग़फ़लत का पर्दा पड़ा हुआ है उसको उठा दे ताकि हमारे हिन्दू भाई नराशंस, कल्कि अवतार, जगतगुरू हज़रत पैग़ंबर मुहम्मद(स) को पहचान लें और उन पर विश्वास लाकर इहलोक और परलोक में सफ़लता प्राप्त कर लें, **तथास्तु** ।

पंडित सूफ़ी रहीम ख़ान क़ादरी M.I
(शांति धर्म प्रचारक)
DATED : 07-02-2023

कलयुग का महामंत्र

ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर् रसूलुल्लाहि ।

Hindu Dharm Granthon Me Paighambar Muhammad ﷺ Ki Bhavishyavaaniyan

Authentic

पंच शांति मार्ग

1) एको जगदीश्वर
2) एको जगतगुरू
3) सर्व अवतार सत्यः
4) सर्व धर्म ग्रन्थ सत्यः
5) सम्मेल प्रार्थना ।



Use QR Code For Video Book →

Visit our Youtube Channels

Hindu Muslim Uniter / Deendar Channel

Visit our Facebook Page

https://www.facebook.com/sufiraheemkhan

प्रकाशक : ख़ानक़ा-ए-सरवर-ए-आलम(जगतगुरू आश्रम)
आसिफ़ नगर, हैद्राबाद-500028, तेलंगाना, भारत ।